समर्पितम्

श्रीमान् जैनधर्म भूषण

ब्रह्मचारी शीतल प्रसादाय

सूची

ॐ नमः सिद्धेभ्यः

अथ श्रीमनरङ्गलाल कृत

चतुर्विंशति वर्तमानजिन पूजा

मङ्गलाचरण दोहा

अलख[1] लखत, सब जगतके रखवारे ऋषिनाथ,
नाभिनन्दन पदपदम छवि, तिनहि नवाऊं माथ।
सिद्धारथ-कुलगगनके[2], पूरण निर्मल चन्द,
त्रिसला प्राचीदिग[3] तने, सूरज तिमिर निकन्द[4]।
अकलंकित अंकित[5] धरम, भरम भजावन हार,
परम शेष बाईस जिन, नमहुं करम क्षयकार।
तुमसे तुमही जगतमें, उपमा काकी देहुं,
ज्ञान-कला दीजे तनक, पदपूजन करि लेहुं।
वर्तमान ये चौविसों, करुणालय जिन देव,
तिनको पूजन करत ही, रहत न भवकी टेव।

तत्रादौ नामाष्टोत्तरशतेनस्तुति । पद्धरि छन्द

तुम जैनपाल तुम जैनईश, तुम जैनपती विसवाहिवीस।
तुम जैनपूज्य तुम जैनअङ्ग, तुम जैनात्मा जीतो अनङ्ग[6]।

---

1 जो वस्तु सामान्य पुरुष नहीं देख जान सकें, उनके ज्ञाता। २ आकाश।
३ पूर्व दिशा। ४ अज्ञान वा मोह रूपी अन्धकार को नाश करने वाले।
५ धर्म है अंक, चिह्न, ध्वजा जिनकी। ६ कामदेव

तुम अक्षजीत१ तुम जीतकाम, तुम जीतलोभ आनंदधाम।
तुम रागजित तुम जीतद्वेष, जितशत्रु नाथ निरग्रंथभेष।
विश्वांगी२ रक्षक तुम दयाल, तुम विश्वनाथ तुम विश्वपाल।
तुम विश्वातम तुम विश्वबंधु, तुम विश्वपारगामी अबंध।
तुम जोगि-पूज्य३ तुम जोग अंग४, तुम जोगवान तुम मुक्तसंग५।
तुम योगीन्द्र तुमयोगराट, तुम योगीश्वर योगी विराट।
तुम जगतमान्य तुम जगतज्येष्ठ, तुम जगतईश तुमजगतश्रेष्ठ।
तुम जगतपिता तुम जगतकांत६, तुम जगतवीर तुम जगतदात७॥
तुम जगतपितामह जगतध्येय, तुम जगतपती तुम करतश्रेय॥
तुम जगतचक्षु तुम जगतसाथ, तुम जगदरशी तुम जगन्नाथ॥
तुम सर्वज्ञ सर्वावलोक, तुम सर्व-तत्वविद् हतस्साक ८॥
तुम सर्वेश हत सर्व क्लेश, तुम सर्वात्मा पूजत त्रिदेश ९॥
तुम लोक ईश तुम लोक नाथ, तुम लोकोत्तम तुम रहित साथ१०॥
तुम लोकज्ञात तुम लोकपाल, तुम लोकजई तुम हतोकाल११॥
तुम हो उदार तुम मोक्षगामि, तुम मुक्तिप्ररूपक सकल जामि१२॥
तुम प्रतर्क्यात्मा१३ दिव्यदेह१४, तुम मन.प्रेय आनन्दगेह १५॥
तुम क्षेमी क्षेमंकर वागीश१६, तुम वाचस्पति तुम हो बुधीश॥

---

१ इन्द्रिय विजयी, २ ज्ञानकी अपेक्षा सर्व व्यापी, ३ योगियों करके पूज्य ४ तपश्चरणमें लीन, ५ परिग्रह रहित, ६ स्वामी ७ जगतके नाशकरने वाले, ८ शोक रहित, ९ तीनलोक, १० परिग्रह रहित, ११ मृत्युका नाश करके अमर हो गए, १२ सर्वज्ञ, १३ ध्यान में आने योग्य, ध्येय आत्मा, १४ अलौकिक शरीरी १५ अनन्त सुखस्वरूप १६ दिव्य ध्वनिके धारक।

तुम हेमवरन तुम तेजराशि, तुम प्रवल प्रतापी मुक्तिवाश ॥
तुम निरममत्व निर अहंकार, तुम जगचूड़ामणि निराकार ॥
तुम शंविश्वर मनहरनहार, तुम पुन्यमूर्ति दीरघविचार ॥
तुम केवलेश अति सूक्ष्मवान, अति सूक्षम-दरशी यश-निधान ॥
तुम अति पुण्यात्मा पुण्यशील, तुम श्रीश विरिंची१जगश्लील२ ॥
तुम पद्मासन चतुरास्य३ श्रेय, तुम श्रेय सकल स्वामी सुध्येय ॥
तुम मौनी सूरा-सार्थवाह४, तुम अजित देह तुम मुक्तिनाह ॥
इह अष्टोत्तरशत नाममाल, जो पढ़ै सुधी मनधरि त्रिकाल ॥
सो होय सवै वातनि निहाल, इम सत्य कहत मनरंगलाल ॥

दोहा

ये चौवीस जिनेन्द्र के, अष्टोत्तरशत नाय।
जल थल विषम स्थानमें, होत सदैव सहाय ॥

इति अष्टोत्तरशतजिननामानिपठित्वा श्रीजिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलि क्षिपेत्

समुच्चय जिनपूजा

स्थापना। छन्द

मैं जानत तुम सत्य सिद्धिपति हो सही।
आवागमनहि रहित वात साँची यही ॥
तदपि नाथ मैं भक्तिवशै टेरों५ यहां।
आवौ कृपा करेहि देव चौविस महा ॥

१ब्रह्मा, २ यशस्वी ३ चतुर्मुख, ४ ज्ञान के अन्धे (सूर) को मार्ग, दिखाने वाले, ५ बुलाऊ।

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरा परमदेवाः ! अत्रावतरतावतरत सवौषट्

(इत्याह्वाहन)

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशति तीर्थंकरा परमदेवाः ! अत्र तिष्ठततिष्ठत ठ. ठः-

(इति स्थापन)

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशति तीर्थंकरा परमदेवा ! अत्र मम सन्निहितोभवत भवत वषट् (इति सन्निधीकरण) १

अथाष्टक अडिल्ल

देवअपगा२को नीर सुसुरभि३ मिलायकै ।
क्षीरोदधिको हसत नाथ गुण गायकै ॥
वृषभ आदि जिनदेवतनी पूजा करूं ।
शिवतिय मिलनअभिलाष भली चितमें धरूं ॥

ओं ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरारोगविनाशनाय जल निर्वपामीति स्वाहा ।

मलयज४ घसि घनसार५ चंद्रसम सेतही ।
कुंकुम अगर मिलाय धरौ इक खेतही६ ॥
वृषभ आदि जिनदेवतनी पूजा करूं ।
शिवितय मिलन अभिलाष भली चितमे धरूं ॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो भवातापविनाशनाय चदन निर्वपास्मीति स्वाहा ।

---

१ उतरो, तिष्ठो, निकट वर्त्तो २ देवनदी, गगा ३सुगध ४ चन्दन ५ कपूर ६ एक ही (क्षेत्र) जगह मिलाकर

मुक्ताफल तद्रूप अक्षत मनको हरै ।
खंडविवर्जित कांति दसौं दिश विस्तरै ॥
वृषभ आदि जिनदेवतनी पूजा करौं ।
शिवतिय मिलन अभिलाष भली चितमें धरौं ॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपदप्रप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

कंचन के शुभ पहुप बनाऊं चावसौं ।
चंप चमेली कमल केवरो भावसौं ॥
वृषभ आदि जिनदेवतनी पूजा करौं ।
शिवतिय मिलन अभिलाष भलो चितमें धरौं ॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्प निर्वपामीति स्वाहा ।

सद्यजात[१] घृत लोलित अतिशुचिसों बनै ।
घेवर बावर फेणि सुलाडु सुहावनै ॥
वृषभ आदि जिनदेवतनी पूजा करौं ।
शिवतिय मिलन अभिलाष भली चितमे धरौं ॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा ।

रतनदीप जगमगै दसौंदिश जोतिसों ।
थाती धरि करपूर घीव भरि हूं तिसों ॥

---

१ उसी दिनके बने हुए

वृषभ आदि जिनदेवतनी पूजा करौं।
शिवतिय मिलन अभिलाष भली चितमें धरौं॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूपदहन सुविशाल धूपजुत लायके।
दहिये आनन्द पाय नाथ गुणगायके॥
वृषभ आदि जिनदेवतनी पूजा करौं।
शिवतिय मिलन अभिलाष भली चितमें धरौं॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरतरुके[1] वरपक्व[2] मधुर फल थारमें।
भरि आंखिनको प्रेम घ्रान सुखकारमें॥
वृषभ आदि जिनदेवतनी पूजा करौं।
शिवतिय मिलन अभिलाष भली चितमें धरौं॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

छन्द हरिगीत

लै नीर गंध सुचारु अक्षत सुभगचरु दीया लिया।
वर धूप फल अति मधुर मनरग अरघ सुंदर यो किया॥
सो धारि रतनन जड़ित भाजन मांहि प्रभुगुण गायके।
नमि बारबार निहार चरनन तिनहि देउं चढ़ायके॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो सर्वसुखप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

---

१ कल्पवृक्ष, २ अच्छे पके हुए

अथ जयमाला त्रिभङ्गी छन्द

तुम अलख निरंजन१ भवभय भंजन शिवतिय रंजन करम दरे ।
फिर जाय विराजे शिवसुख साजे भविक निवाजे२ गुणअगरे ॥
गुण औघ३ तिहारे वरनत हारे सुरपति जे, मैं रंक कहा ।
स्वामी सुन मेरी, शरन सु तेरी, भवकी फेरी मेटु इहा ॥

त्रोटक छन्द

जय नाभिनन्द कुलचंद नमों, जय देविजया४ शुभनंद नमो ।
जय संभव संभव-भंज५ नमों, अभिनंदन जय शिव-रंज६ नमों ।
जय सुष्ठुमती७ सुमतीश नमों, जय पद्मप्रभु धुन-ईश८ नमों ।
जय सप्तम देव सुपार्श्व नमों, जय चंद्रप्रभु गुण-पार्श्व९ नमों ।
जय पुष्पदंत भव पार नमों, जय सीतल सीतलकार नमों ।
जय श्रेय हरो भवपीर नमों, विजयासुत जय सुउदीर१० नमों ।
जय कंपिलया लिय जन्म नमों, जयऽनंत जिनेशनिकम११ नमों ।
जय धर्मजिनं धुर-धर्म१२ नमों, जय शांति हरै सब कर्म्म नमों ।
जय कुंथ सुकुंथुअ पाल नमों, जय जय अरहा सुख जाल नमों ।
जय मोह वली हत मल्लि नमों मुनिसुव्रत जय निरसल्य१३ नमों ।
जय लोकजई नमिनाथ नमों, जय नेमि तजो प्रियसाथ नमों ।
जय पास हरो भवफाँस नमों, महवीर करो सुहुलास नमों ।

---

१ कर्ममल रहित २ भव्य जीवोंके कृपापात्र ३ समूह ४ विजयादेवीके पुत्र ५ ससारको पूर्ण नाश करनेवाले ६ मोक्षमें आनन्दसहित विराजमान ७ केवल ज्ञानी ८ दिव्य ध्वनि के स्वामी ९ अनन्त गुणाधारक १० उत्कृष्ट ११ कर्म रहित, १२ धर्मके चलाने वाले, १३ माया मिथ्या, निदान इन तीन शल्योंसे रहित ।

जय दीनदयाल कृपाल नमों। करु दीननको सुनिहाल नमों॥
तुम हौ सब लायक नाथ नमों। शत इन्द्र नवावत माथ नमों॥

घता

चौबीसौं आला१ जिनवरवाला तिन गुणमाला कंठ धरै।
सो परम विशाला ह्वै छबिसाला इह लखि मनरंग पैर परै॥

ओं ह्रीं वृषभादिचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा

दोहा

ये जिनेन्द्र चौबीसजू, सब पर होंय दयाल।
पातक२ नासो दीनके, मनरंग होय निहाल॥

इत्याशीर्वादः

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिचतुर्विंशतिजिनेन्द्रेभ्यो नम (मंत्र-जाप १०८)

ऋषभदेवपूजा

गीता छन्द

नगरी अजुध्या नाभिराजा पिता मरुदेवी जने।
इक्ष्वाकुवंश शरीर सुवरण पानसै धनु सोहने॥
पूरव चौरासी लाख आवंल३ चिन्ह बैल गनीजिये।
सर्वार्थ सिद्धि विमानतै चय आदिनाथ कहीजिये॥

दोहा

सो आदीश्वर जगतपति, सब जीवन रक्षपाल।
मुकति रमाके कंथवर, आओ इहां विशाल॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभादिचितुर्विंशतिजिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाहन)

---

१ परम पूज्य २ पाप। ३ आयु।

अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (स्थापन) अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्
(सन्निधीकरण)

द्रुतविलंबित

परम नीर सुगंध नियोजितं, मधुर वाणिन भौंर सुगुंजितं ।
कनक भाजन लै भरि हाथमें, करि त्रिशुद्ध जजौं रिषिनाथ मैं ॥
ओं ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा

चंदन पावन बाम घसो भयो । हिमपरा१सुभमिश्रित सो लयो ।
कनकपात्र भरौ धरि हाथमें । करि त्रिशुद्ध२जजौं रिषिनाथ मैं ॥
ओं ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय भवातपविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा

अमल अक्षत राजन भोगके। गुलक३ लज्जित तज्जित सोकके ।
सुभग भाजनमें लै हाथमें । करि त्रिशुद्ध जजौं रिषि नाथ मैं ॥
ओं ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा

कलप पादप४ते उपजे भये । परमगंध प्रसारित ते लये ।
हरषपूर्वक लीजिये हाथमें । करि त्रिशुद्ध जजौं रिषि नाथ मैं ॥
ओं ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय कामबानविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीतिस्वाहा

चतुर चारु पचावत भावसौं । घृत सुपूरित अद्भुत चावसौं ।
अमिय मय लड्डुवा धरि हाथमें। करि त्रिशुद्ध जजौं रिषि नाथमैं ॥
ओं ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा

रतनदीपक देत उद्योत ही । दशदिशा उजियार सो होत ही ।
प्रभु तनै लखि धारि सुहाथमें । करि त्रिशुद्ध जजौं रिषिनाथ मैं ॥
ओं ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा

---

१ कपूर २ मन, वचन, कायकी शुद्धि ३ मोती ४ वृक्ष

उठत धूम घटा चहु ओरते। भ्रमत भूरि१ अलो२ सब छोरतैं।
दहन धूप लिये इम हाथमे । करि त्रिशुद्ध जजौ रिपि नाथ मैं
ओं ह्रीं वृषभनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूप निर्वपामीति स्वाहा

मधुरसा रसना सुखदाय जो। क्रमुक३श्रीफल४ सुन्दर लाय जो॥
इम फलौघ५ लिये शुभ हाथमें। करि त्रिशुद्ध जजौ रिपिनाथ मैं॥
ओं ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फल निर्वपामीति स्वाहा

करि सु ये इकठी दरवैं सवै। धरत भाजन में अति सो फवै६॥
अरघ सुदर लेय सो हाथमें। करि त्रिशुद्ध जजौ रिपि नाथ मैं॥
ओं ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय सर्वसुख प्राप्तये अर्घ निर्वपामीति स्वाहा

गीता छन्द

सर्वार्थसिद्ध विमान तजि आपाढ़ वदि द्वितिया दिना।
मरु देविके सो गरभ आये रंजितं७ सिगरे जना॥
हमहू इहां अब अरघ ल्याय वजाय तूर सुछंदसों।
गुण गाय गाय सराहि तुअ छवि जजौ अतिआनदसो॥
ओं ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय आपाढकृष्णाद्वितीयाया गर्भकल्याणकाय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा

मधुमास८ वदि नौमी दिना जनमें भये अति सोहिला।
पूजे तुम्हें इन्द्रादिने ले जायकै पांडोसिला॥
हमहू इहां अव अरघ ल्याय बजाय तूर सछद सो।
गुण गाय गाय सराहि९तुअ छवि जजौ अति आनंदसों॥
ओं ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय चैत्रकृष्णानवम्या जन्मकल्याणकाय अर्घ निर्व०

---

१ वहुत २ भौंरा ३ सुपारी ४ वेलफल ५ फलोंका ढेर ६ अच्छी लगे ७खुश हुए, ८ चैत्र ९ भला समझते हैं।

वदि चैत नौमी स्वयं दीक्षित भये प्रभु शुभ भावसों।
सुर असुर नरपति सकल तह पूजे तुमहिं अति चावसों।।
हमहूं यहां अब अर्घ ल्याय बजाय तूर सुछद सों।
गुण गाय गाय सराहि तुअ छवि जजौ अति आनदसों ।।

ओं ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय चैत्रकृष्णानवम्या तपकल्याणकाय अर्घ निर्व०

फागुन वदी एकादशी शुभ ज्ञान केवल पाइयो।
सुर रचित हाटकपीठपै१ धर्मोपदेश सुनाइयो।।
हमहूं यहां अब अर्घ ल्याय बजाय तूर सुछन्द सों
गुण गाय गाय सराहि तुअ छवि जजौ अतिआनदसों ॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय फाल्गुणाकृष्णाएकादश्या ज्ञानकल्याणकाय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

चौदस वदी शुभ माघकी कैलाश ऊपर जायके।
निरवान हूवो करी पूजा इन्द्रने चित ल्यायके।।
हमहूं यहां अब अर्घ ल्याय वजाय तूर सुछंद सों।
गुण गाय गाय सराहि तुअ छवि जजौं अतिआनंदसौ ।।

ओं ह्रीं श्रीवृषभनाथजिनेन्द्राय माघकृष्णा चतुर्दश्या मोक्षकल्यणकाय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभङ्गी छन्द

जय जय गुणधामं, दरशन वामं२, जीतो काम लोभं ते।
जय जय दुखहारी, सुयशविथारी, करुणाधारी, जैनपते ॥
जय जय नाभि नंदन कलुषनिकंदन भविजनवंदन गुणअगरे।
जयजय मनरंग भनि, सुजसहि सुनि सुनि, अधमतारि पुनि आपतरे ।।

१ स्वर्ण वेदी, समवसरण. २ आनन्द

नाराच

दिनेशते अधिक तेजकी महान राशि हो।
कमोदिनी भवीनके भले सुधानिवास१ हो ॥
नमो नमो रिपीश तोहि कामके निवार हो।
कलंक पंक छालने२ सदा घटा३ अकार हो। १॥
प्रवीन हो, प्रतापवान, सर्व के सुजान हो।
गणी फणी अणीसके सदैव एक ध्यान हो ॥
नमो नमो रिपीश तोहि कामके निवार हो।
कलंक पंक छालने सदा घटा अकार हो ॥२॥
अनादि हो अनन्त ज्ञान केवल प्रकाश हो।
निरक्षरी धुनीश नाथ मादके निवास हो ॥
नमो नमो रिपीश तोहि कामके निवार हो।
कलंक पंक छालने सदा घटा अकार हो। ३॥
कृपाल धर्मपाल दीनपाल काल नाश हो।
अनेक रिद्धिके धनी महा सुरूपवास हो ॥
नमो नमो रिपीश तोहि कामके निवार हो।
कलंक पंक छालने सदा घटा अकार हो। ४॥
प्रवीन हो पवित्र हो भवाब्धि४ पारगामि हो।
निहालके करन्नहार ईश सर्व जामि५ हो ॥
नमो नमो रिपीश तोहि कामके निवार हो।
कलंक पंक छालने सदा घटा अकार हो ॥५॥

---

१ चन्द्र २ हटानेको ३ वर्षा. ४ समारसागर. ५ सर्वज्ञ.

अलोक लोक लोकने विशाल चक्षुवान हो।
महान दिप्यवान मोह शत्रुको कृपान१ हो॥
नमो नमो रिषीश तोहि कामके निवार हो।
कलंक पंक छालने सदा घटा अकार हो॥६॥
गुणौघ२ रत्नके प्रभू अपार पारवार हो।
भवाब्धि डूबतें तिन्हें अजानु बाहुधार हो॥
नमो नमो रिषीश तोहि कामके निवार हो।
कलंक पंक छालने सदा घटा अकार हो॥७॥
सदैव मोक्षवामके संजोगके सिंगार हो।
कछूक ऊन३ देहते सुज्ञान के अकार हो॥
नमो नमो रिषीश तोहि कामके निवार हो।
कलंक पंक छालने सदा घटा अकार हो॥८॥
चराचरा४ जिते कहे तिन्हें दयालु छत्र हो।
सुमनरंगलाल के सुनेत्र के नक्षत्र हो॥
नमो नमो रिषीश तोहि कामके निवार हो।
कलंक पंक छालने सदा घटा अकार हो॥९॥

घत्ता

जय जय गुणधारी, मायाहारी, विपति विदारी, जसकरणं।
जय सुखसचारी, परमविचारी, अधमउधारी, तू अशरणं॥

ओं ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेद्राय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा

---

१ तलवार. २ गुण समूह ३ कम ४ त्रस, स्थावर।

गीता छन्द

जो करे मन वचन तन सुपूजा आदिनाथप्रभूतनी ।
सो इन्द्र चन्द्र धनेन्द्र चक्री पद्द पावै यों मनो ॥
फिरहोय शिवतियको धनी सुअनन्त सुखकोभोगता ॥
जरमरन आवागमन होय न,होय सहज निरोगता ॥

इत्याशीर्वादः ।

"ॐ ह्रीं श्रीऋषभनाथजिनेन्द्राय नमः" (अनेनमन्त्रेण जाप्यं)

अजितनाथ पूजा

स्थापना, गीता छन्द

अमरकृत नगरी विनीता१ शत्रुजित राजा तहां ।
विजय नाम विमानतजि विजया तने सुत भे इहां ॥
गज चिह्न अजित सुवरन तनु धनु चारसै साढ़े गनो ।
सत्तरि औ द्वै लख पूर्व आउधवंस इक्ष्वाकै मनो ॥

दोहा

अजितनाथ जिन देवको बारबार सिरनाय ।
आह्वानन करियत इहाँ प्रभु गुण रूप सराय ॥

ॐ ह्रीं श्री अजीतनाथ जिनेन्द्राय अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाहनं)। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इति स्थापनं)॥ अत्रममसन्निहितो भव भव वषट् (इति सन्निधीकरणं)॥

---

१ अयोध्या.

मालिनी छन्द

फटिकमनि समानं, मिष्ट ओदक१ सुआनै।
भरि पुरट ? सुकुंभं देखही प्यास मानै॥
अजितजिनपदाग्रे शुद्ध मन ते चढ़ाऊं।
जनम जनम दोषं खोदि ततछिन बहाऊं॥

ओं ह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरारोग विनाशनाय जल निर्वपामीति स्वाहा

लै सुभग रकेबो धारि तामें पटीरं२।
मधुकर ह्वै लोभी जे भ्रमैं आय तीरं॥
अजितजिनपदाग्रे शुद्ध मन ते चढ़ाऊं।
जनम जनम दोषं खोदि ततछिन बहाऊं॥

ओं ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दन निर्वपामीति स्वाहा

सुकृत३ जनित मानो चारु४ तंदुल बनाये।
उठत छटा छहरै देखि नयना लुभाये॥
अजितजिनपदाग्रे शुद्ध मन ते चढ़ाऊं।
जनम जनम दोष खोदि ततछिन बहाऊं॥

ओं ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा

कलपरुह५ सुपुष्पं गुंजितं भौंर भारी।
लखत वरन नाना घ्रान नयना सुखारी॥

---

१ जल २ चंदन ३ पुण्य से उत्पन्न ४ अच्छे. ५ कल्प वृक्ष.

अजितजिनपदाग्रे शुभ मन ते चढ़ाऊं।
जनम जनम दोषं खोदि ततछिन वहाऊं॥
ओं ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय कामवाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा

पटरस परिपूर्णं वेश व्यंजन बनाये।
अधिक सुरभि सर्पी१ भूखविन सो सुहाये॥
अजितजिनपदाग्रे शुद्ध मन ते चढ़ाऊं।
जनम जनम दोषं खोदि ततछिन वहाऊं॥
ओं ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा

मणिके शुभ दीये दोय हाथान लीये।
बहु करत उदोतं अन्धकारं विलीये१॥
अजितजिनपदाग्रे शुद्ध मन ते चढ़ाऊं।
जनम जनम दोषं खोदि ततछिन वहाऊं॥
ओं ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा

करम दहन अर्थं ल्याय धूपं सुगन्धं।
लखि गंध दुरेफा२ देत दक्षिना सुछंदं॥
अजितजिनपदाग्रे शुद्ध मन ते चढ़ाऊं।
जनम जनम दोषं खोदि ततछिन वहाऊं॥
ओं ह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा

फल ललित सुहाने पक्क मीठे सुजाने।
तजि सकल अजाने३ दिव्य भावान आने॥

---

१ खुशबू फैलानेवाले (खुशबूदार) नाश किये, २ भौंरा ३ बिना जाने फल।

अजितजिनपदाग्रे शुद्ध मन ते चढ़ाऊं।
जनम जनम दोषं खोदि ततछिन वहाऊं॥
ओं ह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेन्द्राय मोक्ष-फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा

जलचन्दन सुअक्षत पुष्प नैवेद्य दीयो।
वरधूप फलौघा अर्घ सौदर्य्य कीयो॥
अजितजिनपदाग्रे शुद्ध मन ते चढ़ाऊं।
जनम जनम दोषं खोदि ततछिन वहाऊं॥
ओं ह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेन्द्राय सर्वसुख प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

दोहा

जेठ अमावस के दिना गर्भस्थित जगदीस।
तास चरणको अर्घसे जजूं नाय निज शीस॥
ओं ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय जेठकृष्णा अमावस्या गरभकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ वदी दसमी दिना, महिमंडल पर जात(१)।
अरघ लेय शुभ हाथसों, पूजत पातिक जात॥
ओं ह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेन्द्राय माघकृष्णा दशम्या जन्मकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ वदी दसमी कही, ता दिन दिक्षा लेत।
अजितप्रभूको अर्घ ले, पूजूं भावसमेत॥
ओं ह्रीं श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय माघकृष्णा दशम्या तपकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१ पृथ्वी पर जन्म लिया।

पूष सुदी एकादशी, ता दिन केवल पाय।
जगतपूज्य के चरनयुग, पूजूं अर्घ बनाय॥

ओं ह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेन्द्राय पौषशुक्ला एकादश्यां ज्ञानकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्रसुदी पाचैं दिना, सम्मेद सिखरते वीर।
अव्ययपद प्रापति भये, मैं पूजूं धर धीर॥

ओं ह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेन्द्राय चैत्रशुक्ला पञ्चम्यां मोक्षकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभङ्गी छन्द

जय जिनवर दूजा सुरपति पूजा(१) तो सम दूजा और नहीं,
जय घटघट परघट(२) दिग कीन्हे पट(३) निपट कठिन पट(४) धरत सही।
जयशिवतिय कियवस लेत अधररस प्रसरित्त(५) भूजस किमकहिये(६)
जय जय गुणसीमा(७) बड़ी महीमा दरसन हीमा दुख दहिये(८)।

चौपाई

जय जय अजित धरम-धुरधारी(९)। निनकारन जगबंधव भारी॥
जयमदमोचन(१०) लोचन ज्ञाना(११)। देखत लोकालोक महाना॥

---

१ जिसकी इन्द्रने पूजा की २ सर्व द्रव्य को केवल ज्ञान मे प्रकाशित किया. ३ दश दिशाही को वस्त्र बनाया, दिगम्बर ४ पद, घोर तप किया ५ जिनका यश तीन लोक में फैल रहा है ६ हम कहां तक वर्णन करें ७ गुणों की सीमा, हद, अनन्त-गुण-धारक ८ जिन के दर्शन ही से दु:ख का नाश हो जाता है ९ धर्म की धुरा को धरने वाले, धर्म को चलाने वाले १० मद, मान को त्यागने वाले ११ ज्ञान चक्षु के धारी केवल ज्ञानी।

कामपंक नासन(१) भगवाना । प्रलयकाल के मेघ समाना ॥
देखत तुम पातिक नसजाई । गरुड़लखे ज्यों व्यालपलाई(२)॥
चिन्तामनी कहा तुम आगे । परसुखदाई आप अभागे(३) ॥
आपु तरे तुम औरन तारे । इह उपमा तुम कहन पुकारे ॥
कहत कल्पतरु तुम सम कोई । तुम आगे सो कछु नहिं होई ॥
वह थावर अरु काष्ठ विचारा । तुम अनन्त महिमा गुणधारा ॥
सूर चंद जे कहे अनेका । तुम पटतर(४) नहिं द्वै में एका ॥
ज्ञानसूर(५) आनन(६) तुम चन्दा । अहिनिश रहत सदैव अमंदा ॥
कंटक सहित कमलदल सारे । पद तुम दोष कंटतै न्यारे (७) ॥
याते कमल कछू नहिं कहिये । तुम पद आगे कहा सरहिये ॥
तुम पदतट(८) लोटत शिवनारी । करत आलिंगन भुजा पसारी ॥
तिनको धाक देत जो काई । मुकति रमनिको भरता होई ॥
पारस पत्थर कञ्चन करै । तो क्या अधिक वातको धरै ॥

---

१ कामकी कीचको नाश करने के लिये प्रलयकाल के मेघके समान २ जैसे गरुड़ को देखकर सांप भाग जाते हैं ३ चिन्तामणि रत्न दूसरे को मनवांछित वस्तु देता है किन्तु आप तो अभागा, पाषाण है, उसकी तुमसे क्या उपमा दी जाय, तुम तो अपने और सारे संसार के कल्याण के कर्ता हो. ४ बराबर. ५ तुम ज्ञानरूपी सूर्य हो. ६ तुम्हारा मुख, चन्द्रमा जैसा शोभाय मान है चांद सूर्य तो दिन और रात को छिप जाते हैं परन्तु आप सदा प्रकाशमान रहते हैं. ७ कमल में तो कांटा है परन्तु आपके चरण कमल निर्दोष हैं। ८ चरणों के पास।

तुम पद भेंटत दीन दयाला । तुम सम सो होवै ततकाला ॥
करम चक्रपर चढ़ि यह जीवा । भ्रमति चहूगति माहिं सदीवा ॥
ताहि उतारन तुम ही देवा । समरथ जानि करों पद सेवा ॥
यातें नमो नमो जिनराई । नमो नमो मम होउ सहाई ॥
इह विनती कर जोरे करों । भवसागर अबके नहि परों ॥

घत्ता

इह वर जयमाला अजित प्रभूकी कंठमाहि जो नर धरसी
करसी सो अति सुख भेट सकल दुख भवसागर फिर नहि परसी ।
ओं ह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेन्द्रायजयमाला अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

शार्दूलविक्रीदित छन्द

जो या श्रीअजितेशपाद जजि है कृत्कारितानुमोदना ।
सो धान्यादिक पुत्र मित्र वनिता पावे सदा पावना ॥
आयूहो विपुला(१) अरोग्यतनुते(२) जावैनश्रीपार्श्वते(३)।
पाछेतै शिव धाम जाय शुभले भागे सुख सास्वते ॥

(इत्याशीर्वाद.)

"ओं ह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेन्द्रायनम." अनेन मन्त्रेण जाप्य ॥

---

१ दीर्घ आयु २ शरीरमें रोग न हो ३ लक्ष्मी कभी उनके पाससे न जावे ।

सम्भवनाथ पूजा

गीता छन्द

नगरी सावित्रि पितु जितारि सुसैन माताके घरै।
ग्रैवेकते संभव सु हूवे तन सुकनकप्रभा धरै॥
उन्नतधनुप कहि चारिशत इक्ष्वाकुवंश शिरोमणी।
लखपूर्वसाठि विशालआउप वाज(१) चिह्नतपोधनी॥

दोहा

सो संभव भव भ्रमन हर मुकति तिया गलहार।
इहां विराजौ आनि तनि मो पै ह्वै किरपार॥

ओं ह्रीं श्री सम्भवनाथजिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट (इत्याह्वानन)
ॐ ह्रीं अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इति स्थापन)
ॐ ह्रीं अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट (इति सन्निधीकरण)

अथाष्टक त्रिभङ्गी छन्द

लै घनरस चोखा, गंध न तोपा, अमल अदोपा मुनि मन सो।
कंचनके घट भरि, बहुत विनय धरि, कमलपत्रकरि छादित सो॥
संभव ढिग ल्याऊं, बहुगुण गाऊं, चरन चढ़ाऊं, हरखि हिये।
जासों शिवडेरा, करम निवेरा, होय सवेरा आस किये॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्भवनाथजिनेंद्राय जन्मजरारोगविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

तिलपरण(२) घसाऊ, कुंकुम ल्याऊ ताहि मिलाऊ शुभ चितसे।
भरि रतन कटोरा, दहदिशि छोरा, गुंजत भौंरा अति हितसे॥

---

१ घोड़े का चिह्न. २ चन्दन

संभव ढिग ल्याऊं, बहुगुण गाऊं, चरन चढ़ाऊं हरखि हिये।
जासों शिवडेरा, करम निवेरा. होय सवेरा आस किये॥
ओं ह्रीं श्रीसम्भवनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

वर जान्हवी(१) तोयं(२). सिंचितहोयं, तंदुल सोय बहु उजले।
तिन उज्जलताई, चन्दन पाई चीरउदधिको हमत मले॥
संभव ढिग ल्याऊं, बहुगुण गाऊं चरन चढ़ाऊं हरखि हिये।
जासों शिवडेरा, करम निवेरा, होय सवेरा आस किये॥
ओं ह्रीं श्रीसम्भवनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

खासेसे पूवे, गोघृत हूवे, पत्रीड्डूवे मधुर बडे।
तिनकी मधुराई, वरनि न जाई, सुधा लजाई निज मनडे॥
संभव ढिग ल्याऊं, बहुगुण गाऊं, चरन चढ़ाऊं हरखि हिये।
जासों शिवडेरा करम निवेरा, होय सवेरा आस किये॥
ओं ह्रीं श्रीसम्भवनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक कर धरिके, गोघृत भरिके, वातिक करके अति जरता।
घटपट दरसावत, तिमिर नसावत, जोति जगावत सुख करता॥
संभव ढिंग ल्याऊं, बहुगुण गाऊं चरन चढ़ाऊं. हरखि हिये।
जासों शिवडेरा, करम निवेरा, होय सवेरा आस किये॥
ओं ह्रीं श्रीसम्भवनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दश अंगी धूपं, अति सुचरूपं, ल्याय अनूपं भावकड़े।
धूपंदह मांही, दहन कराहीं, दिग महकाही धूपकड़े॥

---

१ गंगा २ जल

समव ढिग ल्याऊं, वहुगुण गाऊं, चरन चढ़ाऊं हरखि हिये।
जासों शिवडेरा, करम निवेरा, होय सवेरा आस किये॥
ओं ह्रीं श्रीसभवनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूप निर्वपामीति स्वाहा।
जातीफल(१) एला(२), फल ले केला, नालीकेला आदि घने।
शुभगुड पियाला, अवर रसाला(३), भरि २ थाला कनक तने॥
समव ढिग ल्याऊं, वहुगुण गाऊं, चरन चढ़ाऊं हरखि हिये।
जासों शिवडेरा, करम निवेरा, होय सवेरा आस किये॥
ओं ह्रीं श्रीसभवनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।
संवर(४) भद्रस्वर, शाली(५) सितसर, सारगप्रिय(६) अरु विजनलै।
वसु(७) सारग खासा, धूप सुवासा, फल इम अरघ सुहावनलै॥
संभव ढिग ल्याऊं, वहुगुण गाऊं, चरन चढ़ाऊं हरखि हिये।
जासों शिवडेरा, करम निवेरा, होय सवेरा आस किये॥
ओं ह्रीं श्रीसभवनाथ जिनेन्द्राय सर्वसुख प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सङ्कर छन्द

फागुन असित पख अष्टमीको गरमस्थिति नाथ।
श्री-आदि पट्कुलवासिनी अरु रुचिकवासनि साथ॥
करि प्रश्न उत्तर देत मात सुगरभ तुअ परताप।
हम अरघ ल्याय सुपाद पूजत हरौ मो सिग पाप॥

ओं ह्रीं श्रीसभवनाथ जिनेन्द्राय फाल्गुणकृष्णा अष्टम्या गर्भकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१ जायफल २ वड़ी इलायची ३ चटनी मीठी ४ जल ५ अक्षत ६ भौरेको प्रिय ऐसा पुष्प ७ दीप किरण।

कातिक सुदी शुभ पूर्णमासी जनम होत महान।
मिथ्यात तमके हरनको जनु प्रगट भूपर भान॥
रचि नींदमाया मातको लेलीन शचि निजअङ्क(१)।
मैं अरघ सों तुम जजौं जुगपद करहु मोहि निसंक(२)॥

ओं ह्रीं श्रीसभवनाथजिनेन्द्राय कार्तिक शुक्ला पूर्णमास्या जन्मकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन महीना पूर्णमासी के दिना भगवन्त।
चढ़ पालकीपर जाय वन कच लोच करत महन्त॥
सब डार जगको भारि भारहि(३) होत नगन शरीर।
मैं अरघ ले पद कंज पूजों हरों संभव पीर॥

ओं ह्रीं श्रीसभवनाथ जिनेन्द्राय अगहनशुक्ला पूर्णणमास्या तपकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कातिकवदी शुभ चौथके दिन ज्ञान उपजत जानि।
समवशरन विशाल अनुपम रचत धनपति आनि॥
तहां बैठि आनन चारि सोहत है सुदुंदुभिवाज।
वह रूप मन वच सुमिरकै लै अर्घ पूजत आज॥

ओं ह्रीं श्रीसभवनाथ जिनेंद्राय कार्तिककृष्णा चतुर्थ्यां ज्ञानकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

माघशुक्ल षष्ठी समेदतें लियो सिद्धथानक जाय।
तहं अंगवर्जित अलखमूरति ज्ञानमय शुभपाय॥

---

१ गोद। २ शका रहित। ३ भाड़ में

नहिं होत आवागमन तहं ते रहै सुख में पूर ।
जिन चरनको लं अरघ पूजौं होत संकट दूर ॥

ओं ह्रीं श्रीसभवनाथ जिनेन्द्राय चैत्रशुक्ला षष्ठम्या मोक्षकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

झूलना छन्द

अष्ट मदमत्त-गज जे हरत सुख जलज(१) तोरि तिन दन्त तुम करत सूने ।
धन्य भुजदंडधर प्रवर(२) परचंड-वरध्यान मयखड्ग गहि करम लूने(३) ॥
सिद्धि अतिदुग्ग(४) थल जीति हूवै अचल अन्तमी देहते कछुक ऊने ।
अरज मनरंगकी नाथ सुनिये तनक होय तव भक्ति मो भाव दूने ॥

भुजङ्गप्रयात छन्द

नमो जय नमो जय सुसैना के नन्दा ।
सुआसा हमारी चकोरीके चन्दा ॥
करो नाथ दया कहौं हूं सुटेरी ।
प्रभू मेटिये दीनता आज मेरी ॥ १ ॥
न देखे तिहारे भले पाद-पद्मं ।
महामोक्त के मूल आन्द सद्मं (५) ॥
सुयाते भई मोहि संसार फेरी ।
प्रभू मेटिये दीनता आज मेरी ॥ २ ॥
वसो हूं चिरंकाल नीगोद माहीं ।
धरे मौ जु अन्तारमाहूर्त माहीं ॥

---

१ कमल, आठ मद रूपी जो दिग्गज सुख रूपी कमल को नाश करते हैं, उनके दात तुमने तोड़ डाले, अर्थात् अष्टमद का नाश किया २ कठिन ३ नाश किये ४ कोट, किला, ५ घर ।

छ तीनैरु(१) तीनै छ छ अङ्क हेरी।
प्रभू मेटिये दीनता आज मेरी॥ ३ ॥
अनतेंहि भागै कहे आखराके।
कह्यो ज्ञान एतोहि ताके विपाके(२)॥
कथ्यो हू लही जाति थावार केरी।
प्रभु मेटिये दीनता आज मेरी॥ ४ ॥
तहां पंचधा भेद मै दुःख भारी।
सहे जो कही जात नाही सम्हारी॥
भयो दीन शों पापकी संचि ढेरी।
प्रभू मेटिये दीनता आज मेरी॥ ५ ॥
भयो सख आदो गिडोवा द्विइन्द्री।
पुन खान-खज्जूर हूवो तिइन्द्री॥
द्विरेफादि दै चारि इन्द्रीय हेरी।
प्रभू मेटिये दीनता आज मेरा॥ ६ ॥
महामच्छ की आदि पर्य्याय पाई।
करी भूर हिंसा कही नाहिं जाई॥
मरथो नर्क में जाय कीन्ही न देरा।
प्रभू मेटिये दीनता आज मेरी॥ ७ ॥
वहा छेदना भेदना ताड़नाई।
तपायो गयो शूल सेज्या पड़ाई॥
इन्हें आदि दे कष्ट पाये घनेरी।

१—६३३६६ भव अन्तर्मुहूर्त में धरे २ जघन्य ज्ञान का अक्षर के अनतवें भाग होती है।

प्रभू मेटिये दीनता आज मेरी ॥ ८ ॥
बसो गर्भ मे आयके मैं कहू क्या।
बधे अङ्ग सारे मुख औंधा करू क्या ॥
रह्यो भूलि हा कर्म के जाल घेरा।
प्रभू मेटिये दीनता आज मेरी ॥ ९ ॥
भयो, यत्रिकामो मनो तार काढ्यो।
तहा माहि ऐसा बडो दुःख बाढ्यो ॥
भई बालअवस्था मनीषा(१) न नेरी।
प्रभू मेटिये दीनता आज मेरी ॥ १० ॥
युवा वय भई कामकी चाह बाढ़ी।
वियोगी भयो सोगकी रीति काढी ॥
न देखे तुम्हें हो भले चित्तसेरी।
प्रभू मेटिये दीनता आज मेरी ॥ ११ ॥
जरा-रोगने घेरके मोहि कीन्हो।
महाराज रागी भला दाव लीन्हो ॥
झड्या ज्यो पका पान कालानिलेरो(२)।
प्रभू मेटिये दीनता आज मेरी ॥ १२ ॥
कोई पुण्य से देवको पद्द लीनो।
वहाँ जायके मै भयो देव हीना ॥
लह्यो दुःख मत्सा(३) न मापे बनेरी।
प्रभू मेटिये दीनता आज मेरी ॥ १३ ॥

---

१ समझ २ जैसे पत्ता हवा से गिरे वैसे काल निमित्त मे शरीर त्याग किया
३ ईर्षा का दुःख

भ्रम्यो चारिहू ओर साता न पाई।
तिहारे विना और को मो सहाई॥
यही जानिकै काटि दे कर्म-बेरी।
प्रभू मेटिये दीनता आज मेरी॥ १४ ॥

घत्ता

संभव जयमाला, नासत काला, आनन्द जाला कंठधरै।
सोविद्या भूषण, नासै दूषण, सिवतियसंग नित भागकरै॥

ओं ह्रीं श्रीसंभवनाथ जिनेन्द्राय जयमालार्घ्य

दोहा

संभवनाथ प्रसादतें, होउ सकल सुख भोग।
पुत्र पौत्र परताप जस, सुरगश्री सजोग॥

इत्याशीवादः।

"ओं ह्रीं श्रीसंभवनाथ जिनेंद्राय नम" अनेन मंत्रेण जाप्य दीयते॥

अथ श्री अभिनन्दननाथ पूजा

स्थापना, गीता छन्द

अवधि(१) नगरी नृपति संवर सिद्धिअर्था है त्रिया।
कपि चिन्ह वंश इक्ष्वाकु अभिनंदन सुजाके सुत प्रिया॥
वपु(२) वरन सुवरन धनु उचाई तीनसै साढ़े कही।
तजि विजय नाम विमाण लखपंचास पूर्वायु लही॥

---

१ अजुध्या २ शरीर।

सोरठा

तजि सब जगत समाज, भये लोकचूड़ामणी ।
अभिनन्दन महाराज, करि करुणा यहां आव अब ॥

ओं ह्रीं श्रीअभिनन्दन जिनेंद्र अत्रावतरावतर सम्वौषट् (इत्याह्वाननं) ।
ओं ह्रीं श्रीअभिनन्दन जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इति स्थापनं) ।
ओं ह्रीं श्रीअभिनन्दन जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (इति सन्निधीकरणं) ॥

अथाष्टकं गीता छन्द

जल पद्‌महृद्‌को(१) ल्याय उज्जलकनकघट भरवायके ।
दे धार तुम पद-पद्मको अतिमन आनन्द बढ़ायके ॥
अब द्रव्यक्षेतर काल भव अरु भाव परिवर्त्तनमई ।
संसार पण(२) विधि इमभिनन्दन नाशिये जगके जई ॥

ओं ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युरोगविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

गोशीर्ष(३) कृष्णा–अगरु फटिके देवप्यारी(४) ल्यावहूं ।
घसवाय करि कंचनकटोरी नाथ पदहि चढ़ावहूं ॥
अब द्रव्यक्षेतर काल भव अरु भाव परिवर्त्तनमई ।
संसार पण विधि इमभिनंदन नाशिये जगके जई ॥

ओं ह्रीं श्रीअभिनंदननाथ जिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

---

१ तालाव २ पांच ३ कमल की समान गंधवाला चंदन ४ केसर

तंदुल प्रछाले नीर प्राशुक खरे भरिले थाल में।
चंद्रकान्ति समान तिनसा करौं पूजा सार मैं॥
अब द्रव्यक्षेतर काल भव अरु भाव परिवर्त्तन मई।
संसार पण विधि इमभिनंदन नाशिये जगके जई॥

ओं ह्रीं श्रीअभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कुंद चंपक राय बेला कुंज और कदंबके।
ले फूल नाना भांति तिनसों जजौं पद अभिनंदके॥
अब द्रव्यक्षेतर काल भव अरु भाव परिवर्त्तनमई।
संसार पण विधि इमभिनंदन नाशिये जगके जई॥

ओं ह्रीं श्रीअभिनंदननाथ जिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

गोक्षीर तंदुल सरकराजुत फेनि शतछिद्रा(१) वनी।
लखि क्षुधारोग नसात तिनसौं पूजहूं जगके धनी॥
अब द्रव्यक्षेतर काल भव अरु भाव परिवर्त्तनमई।
संसार पण विधि इमभिनंदन नाशिये जगके जई॥

ओं ह्रीं श्रीअभिनंदननाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कनकदीयो सुरभिसर्पि कपूरवातो वारिके।
सबदिशा करत उद्योततासौं जजौं पद हितधारिके॥

---

१ घेवर।

अब द्रव्यक्षेतर काल भव अरु भाव परिवर्त्तन मई ।
संसार पण विधि इमभिनंदन नाशिये जगके जई ॥
ओं ह्रीं श्रीअभिनंदननाथजिनेंद्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा
वर धूपदहमें धूप धरि दह धूमकरि सुदिगांवली(१) ।
भरपूर महकत जजों प्रभुपद जले मोहमहा वनी ॥
अब द्रव्यक्षेतर काल भव अरु भाव परिवर्त्तनमई ।
संसार पण विधि इमभिनंदन नाशिये जगके जई ॥
ओं ह्रीं श्रीअभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।
दारुफल अरु केसरी वर रक्तकुसुम दशांगुली(२) ।
भरिले विशाल सुथाल मुनिपद जजों जोरि करांगुली(३) ॥
अब द्रव्यक्षेतर काल भव अरु भाव परिवर्त्तन मई ।
संसार पण विधि इमभिनंदन नाशिये जगके जई ॥
ओं ह्रीं श्रीअभिनंदननाथ जिनेंद्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।
जल गंध अक्षत फूल चरुवर दीप धूप फलौघ ले ।
शुभ अरघसों पदकमल पूजत करमगणजासों जले ॥
अब द्रव्यक्षेतर काल भव अरु भाव परिवर्त्तनमई ।
संसार पण विधि इमभिनंदन नाशिये जगके जई ॥
ओं ह्रीं श्रीअभिनंदननाथ जिनेन्द्राय सर्वसुखप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

छन्द

गरभस्थिति महराजा वैसाखसित अष्टमी दिना कैसे ।
जिमि सीपी मधि मुक्ता राजै अभिनंदनप्रभू वैसे ॥

---

१ दिशाओं में २ जावित्री ३ हाथों की दशों अंगुलियां जोड़ कर नमस्कार

ओं ह्रीं श्रीअभिनदननाथ जिनेन्द्राय वैसाख शुक्ला अष्टम्या गर्भकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

माघसुदी चौदसि को जन्मे अखड प्रतापधर सूर।
जगमिथ्या तम सारो निज किरननतैं कीयोदूर॥

ओं ह्री श्रीअभिनदननाथ जिनेन्द्राय माघसुदी चतुर्दश्या जन्मकल्याणकाय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा

माघशुक्ल द्वादश दिन द्वादश भावन भाय प्रभु मनमें॥
जोगाभ्यास सम्हारो तज गृह जाय वसे वनमें॥

ओं ह्री श्रीअभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय माघ शुक्ल द्वादश्या तपकल्याणकाय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा

पौषसुदी भूतादिन(१) केवलपद लहि हे महाज्ञानी।
चतुरानन मनभावन जगपावन२ करतसुराज्ञानी॥

ओं ह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय पौषशुक्ल चतुर्दश्या ज्ञानकल्याणकाय अर्घ निर्वपामीति स्वाहा

वैसाखसुदी षष्ठी ज्ञानावरनादि करम निरमुक्त।
सिद्धपतिपद लीन्हौ सौमत्तादि अष्टगुनयुक्त॥

ओं ह्री श्रीअभिनदननाथ जिनेन्द्राय वैशाखशुक्ल षष्ठम्या मोक्षकल्याणकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

---

१ प्रतिपदा २ पवित्र ३ पराग सुगधित रज ४ अष्ट मदोंका नाश करने वाला

अथ जयमाला छन्द चौपैया।

स्वामी अभिनन्दनके अति सुन्दर पद सरोज सम सोहै।
ह्वै भौंरा भविजन तिन ऊपर लहि आनन्द सुखिया होहै॥
तनक पराग(१) धरे तिन तरकी सिर पावन कर जंग मोहै।
ते निसिदीस बसौ मेरे घट फिरि देखो मद अरि(२) कोहै॥

छन्द अग्विनि।

जय अभिनन्द संसारकी आसना।
खूब कीन्ही तिहूं लोकमे वासना॥
नेक हेरो हमारी तनै हालिमा।
दूर हो जाय मो भावकी कालिमा १

काम जीत्यो भली भांति कै देव तैं
थान लीन्हो महाध्यानके भेव तैं॥
नेक हेरो हमारी० २

क्रोधकी मानकी लोभकी मोहकी।
टेव राखी न माया तनी छोहकी॥
नेक हेरो हमारी० ३

ध्यानमय दंड लै पाप फोरे सभी।
चौथ औतार भू मांहि हूओसही॥

---

(१) फूलों पर जो सुगंधित रज होती है उसे पराग कहते हैं (२) अष्ट मदों नाश करनेवाला, अर्थात् मुक्त हो जाऊगा

नेक हेरो हमारी तने हालिमा।
दूरि हो जाय मा भावकी कालिमा ४

अब्धिमडूक्तिको (१) आस मो है रही।
ताहि तू स्वातिका बूंद आछोसही॥
नेक हेरा हमारी० ... ५

अष्टकर्माटवीने (२) महामित्र हो ।
भूठ कीलाल(३) सूखावने मित्र(४)हो॥
नेक हेरा हमारी० ... ६

पच इन्द्री महाकवु(५) को केहरी(६)।
शक्र (७) लोटैं सदा आयतो देहरी॥
नेक हेरौ हमारी० ७

लोकमे एक तू पुण्यकी है ध्वजा।
लेय जो आसरो सो करेहै मजा॥
नेक हेरौ हमारी० ८

झांझरी नावमो बोझ गरुवा भरी।
वायु वाहै महा अब्धि माही परी॥
नेक हेरो हमारी० ... ९

अन्धरो लाकडी ज्यो सुझे नाम तो।
डूवते धार आलम्बके पावतो॥
नेक हेरो हमारो० ... १०

(१) समुद्रकी सीपी (२) अष्ट कर्मरूपी(३)जल(४)सूर्य(५)हाथी(६)सिंह(७)इन्द्र

सो महाअब्धिके पारगामी सुनो ।
कान लगायके व्याधि मेरी लुना(१) ॥
नेकु हेरो हमारी तने हालिमा ।
दूर हो जाय मो भाव की कालिमा ११
दीनके काजको कीजिये देर ना ।
नाथ कीजे मुकति अब कहा हेरना ॥
नेकु हेरो हमारी० .. . १२

घत्ता, छंद मरहटा ।

अभिनन्दन स्वामी अन्तरजामीको पूरी जयमाल ।
जो पढ़े पढ़ावे मनवचतनकरि सो पावे शिव हाल (२) ॥
तहं बसे निरन्तर कालअनन्ते आसन अचल कहो जु ।
फिरि जनम न पावे मरन न आवे जग गुण गावेरोज १३

सोरठा ।

अभिनन्द भगवंत ता प्रसादते जगतजन ।
सुखिया होय महन्त ईति (३) भीति(४) सब छांड़िकै ॥,

इत्याशीर्वादः ॥

"ॐह्रीं श्रीअभिनन्दननाथ जिनन्द्राय नम" अनेन मन्त्रेण जाप्य दीयते

---

(१) काटो(२)हाल ३सात प्रकारकी आपति, निजसेना, परसेना, ऊदर. टीडीदल, शुक, अति वृष्टि, अनावृष्टि ४सात प्रकारका भय हाथी, सिंह, सर्प, अग्नि, गद, जल, संग्राम

अथ सुमतिनाथ पूजा ।

स्थापना छंद गीता ।

कौसिला नगरी मेघ प्रभु पितु मंगला माता कही ।
शुभ वैजयंत विमान तज हूवे सुमति निज सुतसही ॥
पग चकत्र अङ्क इक्ष्वाकु वंश चालीस लख पूर्वायु है ।
जिनकाय हाटक(१) वरन धनु सौतीन को सु उचाउ है ॥

सोरठा ।

सुमतिनाथ भगवान, सुमति देओ मो दीन लखि ।
भव जल तारन जान, आप इहां तिष्ठो प्रभू ॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननं)
ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठतिष्ठ ठः ठः (इति स्थापन)
ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्
(इति सन्निधीकरण) ॥

छंद नाराच ।

महान गंध धार नीर ल्याइये सुछीरसौं ।
पवित्र कुम्भ हेमके(२) भराइये गहीरसों ॥
पदाब्जद्वै(३) सुबुद्धिनाथके सुबुद्धि देत ही ।
जजौं अनन्त दर्श ज्ञान सौख्य वीर्य हेतही ॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरारोगविनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा ॥ जलम् ॥

---

(१) सुवर्ण (२) चरण कमल (३) सुवर्ण

हिमोपरा सुगंध सारकं घसो मयोवरं ।
लियाय मीत झार सा महान तप्तताहरं ॥
पदाब्जद्वै सुबुद्धिनाथके सुबुद्धि देतही ।
जजौं अनन्त दर्श ज्ञान सौख्य वीर्य हेतही २

ॐह्रींश्रीसुमतिनाथजिनेन्द्रायभवातापविनाशनाय चन्दनम्

कहे अखंड अक्षत पवित्र स्वेत भावही ।
भरे महान थार ल्याय कुन्दको लजावही ॥
पदाब्जद्वै सुबुद्धि नाथके०... . . ३

ॐह्रींश्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्रायअक्षयपदप्राप्ताय अक्षतान्

गुलाव वन्धु द्वं पदा सुसेवती चुनायके ।
हजार पत्रको सुकंज(१) हेमको वनायके ॥
पदाब्जद्वै सुबुद्धिनाथक०... ... . ४

ॐह्रींश्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्रायकामबाणविनाशाय पुष्पम्

पचाय अन्न चारुचारु(२) थारमे भरायके ।
सुहाथ माहिं लेय शुद्ध भावको लगायके ॥
पदाब्जद्वै सुबुद्धिनाथके०... .. .. .. ५

ॐह्रींश्रीसुमतिनाथजिनेन्द्रायक्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम्

कपूरवाति दीपमे वड़ो उद्योत ल्यावती ।
कहूं न लेश धूमको महान ज्योति जागती ॥
पदाब्जद्वै सुबुद्धिनाथके० .. . . ६

---

(१) कमल (२) उत्तम उत्तम

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् ।

करूं संगाय धूपसार अग्निके सुसन्मुखा ।
सुखारि होय आयके सुवास लें शिलीमुखा(१) ॥
पदाब्जद्वंद्वं सुबुद्धिनाथके सुबुद्धि देनहीं ।
जजौं अनंत दर्श ज्ञान सौख्य वीर्य देतहीं ७

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपम्

लवंग मालती सुतं शुकप्रिया(२) सुद्राक्षहीं ।
निकोचकं(३) सुगोस्तनी(४)मराय थालिका बही ॥
पदाब्जद्वंद्वं सुबुद्धि नाथके०... ... ... ८

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलम्

सुवारि गंध अक्षतं प्रसूनले चरु वरं ।
सुदीपधूप औ फलं बनाय अर्घ सुन्दरं ॥
पदाब्जद्वंद्वं सुबुद्धिनाथके०... ... ... ९

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये ।

सोरठा ।

श्रावन सित पख जान, द्वैत महादिन जान शुभ ।
रहे गर्भ में आनि, पूजौं तिन पद अर्घ सों ॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय श्रावणकृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणकाय अर्घम्

चैत सुदी परवान, रुद्र(५) संख्य तिथिके दिना ।
जन्म लीन भगवान, सुमति प्रभु भव भीति हरि ॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय चैत्र शुक्ल एकादश्यां जन्मकल्याणकाय अर्घम्

---

(१) भौंरा (२) अमरूद (३) पिस्ता (४) अंगूर, मुनक्का (५) रुद्र

जानि सुदी वैसाख, नौमी दिन तप ग्रहण किय।
छाड़ि सकल मन माख(१), जजौं अर्घ लै तिन चरण॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय वैशाखशुक्ल नवम्यां तपकल्याणकाय अर्घम्

केवल ज्ञान प्रकाश, एकादशि सुदि चैत की।
इन्द्र रहत पद पास, मैं पूजत शुभ अर्घ सों॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय चैत्र शुक्लएकादश्या ज्ञान कल्याणकाय अर्घम्

चैत सुदी गण लेहु, एकादशि सम्मेद त।
जगत जलांजलि देय, परम निरंजन हात भे॥

ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय चैत्र शुक्ल एकादश्या निर्वाणकल्याणकाय अर्घम्

अथ जयमाल॥ छंद त्रिभंगी॥

जय दुरमति खंडन विपति विहंडन पातिक दंडन सुमतिपती।
जय शिव सुखखंडन भव भ्रम छंडन जय परमेश्वर परमजती॥
जय तुम मुख चंदा लखि भव वृन्दा, लहत अनंदा विगिरिमिता(२)
जय गुण रत्नाकर शचिपति चाकर रहत निशाकर गुणकथिता॥

छंद त्रोटक।

नहीं खेद नहीं मल रंच कहो, शुभ शोणित(३) क्षीर समान लहो।
वज्र वृष नाराच संहननम् सम चोसस्थान मलीगननम्॥ १॥
अति सुन्दर रूप सुहावत है, सहजै तन गंध सुआवत है।
दससौ अरु आठ सुलक्षणते, सब विघ्नन सें सब अचन(४) ते॥२॥
प्रभुके नहिं वीरज केरि मिता(५), प्रियवंन भले निकसे उचिता।

---

(१)मनके विकल्पत्याग करके (२)बेहद (३)रुधिर(४)आखोंसे देखतेही विघ्नका नाश हो (५) हद

जनमें तब के दश जे अतिशय, अब केवल के कहिये मति से ॥ ३ ॥
वसुसे कहि कोस सुभिक्ष महा,चलिवो शुभ अम्बरको(१) सुमहा
बध जीव भयो न कतौ सुनिये, न अहार करणौ मनमें गुनिये ॥४॥
उपसर्ग न केवल ज्ञान भये, शुभ आनन सोहत चार लये।
सब ईश्वरतो पटनापन की, कहु छांह न लेश परे तनकी ॥५॥
करजा(२)चिकुरा(३)नहिं वृद्धि कदा, पलकै न लगै कहुं नेकु सदा।
इम केवल ज्ञान तनी दश है, अमरान करी शुभ चौदश हैं ॥६॥
शुभवाणि खिरे अर्ध मागधिया, तजि देंहैं सबै तहं बैर जिया।
फल फूलत वृक्ष छहौं ऋतुके, जन पावत चैन सबै हितके ॥७॥
चले मंद बयारि(४) सुगधमई, शुभ आरसि जेम सुभूमि भई।
और गंध मिली जलकी बरषा, तहं होत लखौ जियमौ हरखा ॥८॥
बिनि कंटक आदिक भूमि कही, कमलों परि है गति देव सही।
फल भार नमें सब धान्य जहां, मल वर्जित कीन्ह अकाश महा ॥९॥
सुर चारि प्रकार अह्वान(५) करें, अतिही चितमौ सुअनंद भरें।
अर शासन चक्र अगारि चलै, वसु मंगल द्रव्य सुहाव भले॥१०॥
प्रभुके अतिशय वर देव कृता, अपनी मति माफिक मैं उकता।
कहिये प्रतिहारज नाथ तने, सुनतेहि नसै जग फंद घने ॥११॥
नहिं राखत शोक अशोक दली, तरु ऊपर गुंजत भूरि अली।
बरषै सुमना मुख ऊपरको. अरु हेठ(६) कहो सो रहै तरको ॥१२
ध्वनि दिव्य निरक्षरि नीसरिता, इक योजन घोष मिता धरिता।
चतुषष्ठि(७)कहे बरचामर ही,लिय ढारत ठाढ़ि मुखाबर(८)ही ॥१३॥

---

(१)आकाश(२)नाखून(३)बाल(४)पवन(५)शब्दकरें(६)बुडी (७ चौसठ (८) देव

छवि आसनकी गिरि ते सुथरी, द्युतिमंडल सोभव सप्त धरी ।
सुर दुन्दुभि वारह कोटि वजैं, अधकोटि अधिक्क महागरजैं ॥१४॥
त्रियछत्र च्पाकर(१)ज्यों उकता, उड़(२)से जनु सेव्य रहे मुकता।
प्रतिहारज अष्टविभूति रही, तिहिधारि भये अरिहन्त सही ॥ १५ ॥
करि चारिय घातिय घात जवै, लहि नंत चतुष्टय पट्ट तवै ।
दर्शन अरु ज्ञान सुसौख्य वल, इन चारहु ते तुव देव अल ॥१६॥
व्यवहार कहे गुण छालीस जे, निहचै नयते गुण नन्त सजे ।
सुसुरेश नरेश गणेश लिजे, असुरेश कहे धनईश तिते ॥ १७ ॥
तुम पावत पार न एक रती, भगवान वड़े तुम हो सुमती ।
विनती सुनले अपने जनकी, अव मेटु विथा(३)सुगरीवनकी ॥१८॥
धनि रीति कही जुअ वाहन(४)की, जग बूड़त ताहि निवाहनकी ।
प्रभु तो प्रभुता कवलौं कहिये, लखिके छवितो चुप ह्वै रहिये(५)॥१९॥
जिन सुमति विशाल ! जगमें वाला तिन जयमाला यह सुथरी ।
जो कंठी करिहै, आनंद धरिहै, नहिं मरिहै तिहि काल अरी(६) २०॥

सोरठा

सुमतिनाथ सुखकार, घनडव(७) गरजनि(८) करि सहित ।
वर्षो आनद धार, भविजन खेती ऊपरै ॥

इत्याशीर्वादः ॥

"ॐ ह्रीं श्रीसुमतिनाथ जिनेन्द्राय नम" अनेन मन्त्रेण जाप्यदीयते

---

(१)चन्द्र (२)तारागण भरपूर (३)दुख (४)तीर्थ रूप जहाज (५)ध्यान में मग्न हो जाइय (६)शत्रु (७) वादल (८) दिव्यध्वनि का शब्द

अथ श्रीपद्मप्रभु जिनपूजा

छंद गीता

नगरी कुसमी पिता धारन हैं सुसीमा मायायसो ।
जिन पदम प्रभु धरि पद्म अङ्क सुवरण तनु सुत ढाइसो ॥
ग्रैवेयक ऊपर लौं तजा तेतीस लखि पूर्वाऊ सा ।
शुभवश भूषित करि इक्ष्वाकु गये शिवालय(१) चाउसा(२)

सोरठा

सोई पदम जिनेश, धरे अङ्क पद पदम छवि ।
आयवसौ लवलेश(३), प्राणन के प्यारे यही ॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभु जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननम्) ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभु जिनेन्द्र अत्रतिष्ठ तिष्ठ ठ ठ (इतिस्थापनम)ॐ ह्रीं श्री पद्म प्रभु जिनेन्द्र ममसन्निहितो भव भव वषट् (इतिसन्निधीकरणम्) ।

अथाष्टक छन्द चामरा

नीर ल्याय सीयरा(४) महानमिष्ट सारसों ।
आनि शुद्ध गंध मेलि वेश(५) तीन धारसों ॥
पद्मनाथदेव के पदारविंद जानि के ।
पच भाव हेत मैं जजौं आनंद ठानि के ।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभुजिनेन्द्राय जन्मजरारोगविनाशनायजलम् निर्वपामीति स्वाहा ।

श्वेत चंदनं कपूर सो मिलाय धारतो ।
पात्र मों घसाय ल्याय गंध को प्रसार(६) तो ॥

---

(१)मोक्ष (२)आनद (३)थोडी देरके लिये (४)ठंडा (५)अच्छा (६)फैलना हुआ

पद्मनाथदेव के पदारविंद जानि के ।
पंच भाव हेत मैं जजों अनंद ठानि के १

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभु जिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा

तंदुलं भले सुपांडु(१) वर्ण खंडवर्जितं ।
हेम थार में धराय चंद्रकांति लज्जितं(२) ॥
पद्मनाथदेव के पदारविंद०··· ··· ··· २

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभुजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा

पंच वर्ण के प्रसून गंधता वड़ी वहै ।
पाय पाय गंध भूरि(३) मग्नता अली गहै ॥
पद्मनाथदेव के पदारविंद०··· ··· ··· ३

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभुजिनेन्द्राय कामवाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा

क्षीर मोदकादि वृन्द स्वच्छपात्र(४)में धरौं ।
भावको लगाय पाय चेन पापको हरौं ॥
पद्मनाथदेव के पदारविंद०··· ··· ··· ४

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभुजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा

धूमका न लेश शुद्ध वत्तिका कपूर की ।
रत्न दीप में धराय अन्धकार दूरकी ॥
पद्मनाथदेव के पदारविंद०··· ··· ··· ५

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभुजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा

धूप गंधसार औ कपूर को मिलायके ।
धूप दाह मांहिं खेय धूम को नढ़ायके ॥

---

(१) सफेद (२) शरमाती (३) घनी (४) साफ

पद्मनाथदेव के पदारविंद जान के ।
पंच भाव हेत मैं जजों अनन्द ठानिके ५

ॐह्रीं श्रीपद्मप्रभुजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा

मोच(१) दंतवाज(२) वातशत्रु(३) ल्यायके घने ।
कामवल्लभादि(४, जे फलौघ मिष्टता घने ॥
पद्मनाथदेवके पदारविंद० .. . .. ६

ॐह्रीं श्रीपद्मप्रभुजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फल निर्वपामीति स्वाहा

तोय(५) गंध अक्षत(६) प्रसून सूप औ दिया ।
धूप ले फलातिसार(७) अर्घ शुद्ध यों किया ॥
पद्मनाथदेव के पदारविन्द० . . . ७

ॐह्रीं श्रीपद्मप्रभुजिनेन्द्राय सर्वसुखप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

छंद शिखरणी

वदी षष्ठी जानौ शुभतर कहौ माघ महिना ।
वसेमाता कुक्ष्या रतन वरषे काह कहिना ॥
जजौं मैं ले अर्घं पदमप्रभु के द्वन्द चरणा ।
वसो मेरे हो मो सतत(८) अवकै लेहु शरणा ॥

ॐह्रीं श्रीपद्मप्रभुजिनेन्द्राय माघ कृष्णा षष्टम्या गर्भकल्याणकाय अर्घम्

मति श्रुतिम अवधि लसत शुभ ज्ञानं अलखको ।
भली त्रयोदश्यां कार्तिक महीना प्राकपखको(९) ॥
प्रभू जातं भू पै दिनपति मनो कोटि उदितम् ।

---

(१) केला (२) दाडम (अनार) (३) नींबू (४)आम (५) जल (६) नैवेद्यम्
(७)उमदा (८) निरन्तर (९) वदी

लखे जाके नित्यं भविकजलजा(१) होत मुदितम्(२) ॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभुजिनेन्द्राय कार्तिककृष्णा त्रयोदश्यां जन्मकल्याणकाय अर्घम्

कही त्रयोदश्यां कातिक महिना पक्ष पहिला।
तजी माया सारी वनमधि वसे छोड़ि महिला(३)।
करे सेवा देवाधिप(४) सकल आनद मनसा।
जजों मै ल अर्घ मन वचन और शुद्ध तनसों ॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभुजिनेन्द्राय कार्तिककृष्णात्रयोदश्यातपकल्याणकाय अर्घम्

कही पूनो आछी मधुमहिनमा केरि जुदिना।
हने घाती चारो महत शुभ ले ज्ञान सजिना ॥
महामिथ्या रूपी तम हरणको भानु प्रगटा।
नसें जाके देखे दुश्मन(५) कलुपाकी अतिघटा ॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभुजिनेन्द्राय चैत्रशुक्ला पूर्णमास्या ज्ञान कल्याणकाय अर्घम्

वदी साते जानो शुभग महिना फागुन कहा।
बड़ो संयोग शुभ मुक्ति रमणी सो तिन लहा ॥
करी पूजा भारी शिखर पर निर्वाणपद की।
यहां मैं ले अर्घ जजन करिय पद्मपदको ॥

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभुजिनेन्द्राय फाल्गुणकृष्णासप्तम्या निर्वाणकल्याणकाय अर्घम्

छंद पद्धड़ी

जय तन छवि छज्जे(६) रविद्युति लज्जे शारदसमय शशि इवसुखदो(७)

---

(१) भव्य जीव रूप कमल (२) हर्षित, फूले हुए (३) महल, मकान (४) इन्द्र
(५) राग द्वेष दोनों मैल (६) छाय रही है (७) सुखदायक

लखि भयभिग भज्जै भविगण गज्ज(१) अनन्त चतुष्टय मय सुखतो॥
चउ घातो चूरे गुणगण परे क्षपक श्रेणि चढ़ि ज्ञान लहा।
इन्द्रादिक ध्यावत शीश नवावत स्रयश फैलि तिहुं लोक रहो॥

छन्द मुक्तादाम

नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु जिनेश, न राखत हो तुम लेश कलेश।
रखावनको जनकी सब लाज, वड़े प्रभु पद्म गरीवनवाज॥ २॥
न शत्रु न मित्र समान समस्त, करे कर्मादिक शत्रु निरस्त(२)
लियो सब करिकै आतम काज, वड़े प्रभु पद्म गरीवनवाज॥३॥
छः द्रव्य पचासित काय समस्त, दिखावन सूर(३) सरव न अस्त
वतावन कौं सिग तत्व समाज, वड़े प्रभु पद्म गरीवनवाज॥ ४॥
पदार्थ त्रिकाल जनावन दक्ष, मनावन को शुभ आनि प्रतक्ष।
भजावन संशय संकट गाज(४), वड़े प्रभु पद्म गरीवनवाज॥ ५॥
छः काय कही तिनके तुम रक्ष, वनाय दहो(५)दुखदा पन अक्ष(६)।
नसावन का तृष्णा अति खाज वड़े प्रभुपद्म गरीवनवाज॥ ६॥
कियो कृतपाप दूरकर अस्त, स्वरूप सम्हार भये तुप मस्त(७)।
सिंहासन पै अन्तरिक्ष विराज, वड़े प्रभुपद्म गरीवनवाज॥ ७॥
सुशील कृपाण लिया निजहस्त, कियोपण(८)नायक(९ लस्तपलस्त
लहो विजगीपु(१०) कहो सु ज्हाल, वड़े प्रभुपद्म गरीवनवाज॥ ८॥
प्रभु तुम हो अवलम्बन हस्त, निकास कियो भगवान उरस्त(११)।

(१) आनन्दित हैं (२) नाश (३) सूरज (४) हाथी (५) जलाई (६) पाच इन्द्री (७) ध्यान में लवलीन (८)पाच (९) कामके वाण (१०) आपनेजोजयपायो उसकी महिमा कहा तक कहूं (११)दिलमें रहने वाले

भवाब्धि परे जिनको महाराज, बड़े प्रभुपद्म गरीवनवाज ॥९॥
मनीमनकी(१) लखिके मनथंभ,बनी न रहे कित कोउक दंभ(२)
प्रताप तिहांर कहौ सिरताज, बडे प्रभूपद्म गरीवनवाज ॥१०॥
न होट न तालु लगै कहुं रंच,धुनी निकलै नहिं अक्षर संच(३)॥
गणी(४) परखैं हरखैं दुख त्याज, बड़े प्रभु पद्मगरीवनवाज ॥११॥
तजी लक्ष्मी की सबै तुम आस, सुआय रही इकठो पद पास ।
पुनीत पनेको सुपाय गनाज(५) बड़े प्रभु पद्म गरीवनवाज ॥१२॥
सुकीरत फैलरही चहुं ओर लजावहि चंदहि कुन्दहि जोर(६) ।
डराय भने मिथ्यातम भाज, बडे प्रभुपद्म गरीवनवाज ॥ १३ ॥
पलोटत पाय सदा शिव तीय, कहा कथनी दिवि भांति तनीय(७) ।
करौ वस में मन चंचलवाज, बड़े प्रभुपद्म गरीव नवाज ॥१४॥
न होय मुझे जवलौं शिव सिद्धि, लहौं तवलौं पदभक्ति समृद्ध(८)
यही तनि मो सुनि लेहु अवाज, बड़े प्रभुपद्म गरीवनवाज ॥१५॥

घता ।

यह मुक्ति निसानी सब जगजानी आनंददा जयमाल पढे ।
सो होय अजार्चा१ मनरंग सांची फेरि न जाचक पन पकडे ॥

---

(१) मानीनआपके समव शरणके मान स्तम्भको देखकर मानीका मानवाकी नहीं रहा (२) अनक्षरी (३) गणधर (४) अवाजे या सुगन्ध (५) चन्द्रमा और कुमुदनी (६) मुक्ति स्त्री आपके चरणोंमें तो स्वर्ग लक्ष्मीकी क्या बात (९)ऐश्वर्य (७) कृपाकर जरा मेरी अरजसुनलीजिये

सोरठा ।

पदमनाथवर वीर, तुम पायन परताप ते ।
जग प्राणिनकी पीर, रहे न जो भौभौ तनी ॥

इत्याशीर्वादः ॥

"ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभुजिनेन्द्राय नम" अनेन मन्त्रेण जाप्य दीयते ॥

अथ श्रीसुपार्श्वनाथपूजा

गीताछंद ।

है पुर बनारस नृप प्रतिष्ठित माय पृथवि सुहावनी ।
चय मध्य ग्रैवेक ते सुपारस देह हरित(१) प्रभा बनी ॥
धनु दो सत उन्नत काय आयुप पूर्व लख वीसी भनी ।
शुभ चिन्ह सथियो लसत वश सवनि शिरोमनी(२) ॥१॥

दोहरा ।

सो सुपार्श्व, शिव तिय तने चुबंत अधर विशाल ।
सतत हरत दुख दोनके आवो यहाँ कृपाल ॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वानम्)
ॐ ह्रीं अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठ (इति स्थापनम्) ॐ ह्रीं अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (इति सन्निधीकरणम्)

इन्द्र वज्रा ।

पानी अमीमान(३) लियाय मिष्टं, शुद्धं भरौ कंचन पात्र शिष्टं ।
दोनों सुपार्श्व प्रभु पादकेरी, पूजा करूं होय आनंद ढेरी ॥

---

(१) हरा रंग (२) श्रेष्ठ (३) अमृत के समान

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेंद्रायजन्मजरारोगविनाशनायजलं निर्वपामीति स्वाहा.

बू न कहो सो सुरभि मंगाई, चन्दा लजै जानि जाकी सिराई,
दोनों सुपार्श्व प्रभु पाद केरी, पूजा करौं होय आनद ढेरी.

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा.

ल्याऊं महा अन्नत पाय साता, खडं विना खंड भलेऽवदाता(१),
दोनों सुपार्श्व प्रभु पादकेरी, पूजा करों होय आनन्द ढेरी । १ ।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अन्नतान् निर्वपामीति स्वाहा.

लेके खरे फूल सुगंधकारो, मीठों अली लेय पराग(२) मारी,
दोनों सुपार्श्व प्रभु पादकेरी, पूजा करौं होय आनन्द ढेरी । २ ।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामवाणविनाशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा.

पूवा पुरी खज्जक ल्याय फेणी, लाडू महासुछ वतास फेणी,
दोनों सुपार्श्व प्रभु पादकेरी, पूजा करौं होय आनन्द ढेरी । ३ ।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्रायक्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा.

दीयो कल धौत(३) जराय बाती, लायो प्रभुपास अन्धेरघाती,
दोनों सुपार्श्व प्रभु पादकेरी, पूजा करों होय आनन्द ढेरी । ४ ।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनायदीपं निर्वपामीति स्वाहा.

धूआं उठे तापर मौर सावा, गुंजे करै धूप इह भांति ल्यावा,
दोनों सुपार्श्व प्रभु पादकेरी, पूजा करौ होय आनन्द ढेरी । ५ ।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा

पिस्ता सुवादाम नवीन हरे, थारा मराऊं कलधौत केरे,
दोनों सुपार्श्व प्रभु पादकेरी, पूजा करौं होय आनन्द ढेरी । ६ ।

---

(१) सफेद (२) सुगधरज (३) सुवर्ण

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा.

पा च अ फू न दी धू फ(१)गनाऊं, आठों मिले अर्घ महाबनाऊ,
दोनों सुपार्श्वप्रभु पाद केरी, पूजा करो होय आनद ढेरी ।७।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय सर्वसुखप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा.

छन्द घोटका.

भादव शुक्ल छठी तिथि जानी, गरभ धरे पृथवी महारानी,
तासम आनंदकार न दूजा, अर्घ बनाय करों पद पूजा,

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय भादों शुक्ला षष्टम्या गर्भकल्याणकाय अर्घम्

जेठ सुदी जो द्वादशि जानी, जन्म लियो भुवि पै सुखदानी,
मैं युगपाद सरोज निहारी, पूजत हौं धरि अर्घ सिधारी.

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय ज्येष्ठ शुक्ला द्वादश्या जन्मकल्याणकाय अर्घम्

द्वादशि जेठ तनी उजियारी, तादिन होत दिगंबर भारी,
पादसरोज जजौं जिनजीके, जाकरि कर्म शत्रु अतिफीके (२)

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय ज्येष्ठशुक्लाद्वादश्या दीक्षाकल्याणकाय अर्घम्

फाल्गुणकी छठि जानि अन्धेरी, केवल पद्द लहो गुण ढेरी,
पूजत इन्द्र समाकर मांही, पूजत मैं कर अर्घ कराही

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय फाल्गुणकृष्णाषष्टम्या ज्ञानकल्याणकाय अर्घम्

सप्तमि फाल्गुण कृष्ण विचारी, जाय समेद महाहितकारी,
तीन शिवालय थान विशाला, अर्घ बनाय जजौं तिरकाला.

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय फाल्गुणकृष्णासप्तम्या मोक्षकल्याणकाय अर्घम्.

---

(१) प-पानी च-चन्दन अ-अक्षत फू-फूल न नैवेद्य दी-दीप धू-धूप फ-फल
(२) कर्म शत्रु निर्बल होते हैं फीके पडजाते हैं.

मनहरण।

भूप सुप्रतिष्ठित के वंश सर(१) माहि जात,(२)
देखे चित्त ना अघात आनन्द बढे रहैं
आवे मकरन्द बडी दशों दिशा फैलि रही,
आय भवि भौरा. नित्य ऊपर मढ़े रहें(३)
तीन लोक इन्दिरा(४) सुवास(५).पाय हरषात,
कणिका सुनख जोति(६) तासों उमड़े रहें
तेरे युग चरण सरोज देखि देखिके,
कमल विचारे एक पायन खड़े रहें.

छन्द चौपाई.

जय आनंद घन सुकृत(७)निवासा, पुजवत(८)सब जग जनकी आसा,
जय सुपार्श्व देवनके देवा, हुतभुक(९)लयनकरत पद सेवा। १।
जो पद नख पर द्युति उमढ़ाही, तापर कोटि काम लजिजाही,
जय सुपार्श्व देवन के देवा, हुतभुक लयन करत पद सेवा। २।
जय दरिद्र चूरन भगवाना, पूरन छवि सागर गुणनाना,
जय सुपार्श्व देवन के देवा, हुतभुक लयन करत पद सेवा। ३।
भरम हरण जय सरम(१०) निकेवा, कायोत्सर्ग धारि शिव लेवा,
जयसुपार्श्व देवन के देवा, हुतभुक लयन करत पद सेवा। ४।

---

(१)तालाव (२)पैदा (३)भव्य जीवरूपी भौरे एकत्रितहों (४)लक्ष्मी (५)स्थान (६) आपके नाखूनकी चमक कमलकी किरणके समान है और इस कारण भव्य जीव रूप भौरा घेरे हैं (७) पुण्य (८) पूरी करते हो (९) देवता (१०) सुखका स्थान

जयपण (१) ऊण शतक गुण ईशा, सुनमुन गिरा(२) नवावतशीशा,
जय सुपार्श्व देवन के देवा. हुतभुक लयन करत पद सेवा ५ ।
जय बिन भूषण भूपित देहा, बिना वसन आनंद के गेहा,
जय सुपार्श्व देवन के देवा. हुतभुक लयन करत पद सेवा । ६ ।
तुम प्रताप विष अमृत सिरसा(३) रङ्क होय निहचैकरि हरिसा(४),
जय सुपार्श्व देवन के देवा, हुतभुक लयन करत पद सेवा । ७ ।
जल थल होय विषम सम नीके, पन्नग(५) होय हार छवि हीके,
जय सुपार्श्व देवन के देवा, हुतभुक लयन करत पद सेवा । ८ ।
प्रभु प्रताप पावक सियराई(६)दुश्मन(७)महा पीतम(८)हो जाई,
जय सुपार्श्व देवन के देवा, हुतभुक लयन करत पद सेवा । ९ ।
बन शुभ नगर अचल (९) ग्रह रूपा, मृगपति मृग सो होय अनूपा,
जय सुपार्श्व देवन के देवा, हुतभुक लयन करत पद सेवा । १० ।
तुम प्रताप विल होय पताला(१०),तुम प्रताप हो आल(११)शृगाल,
जय सुपार्श्व देवन के देवा, हुतभुक लयन करत पद सेवा । ११ ।
शस्त्र होय अम्बुज दल माना, वज्रपात सिर छत्र समाना,
जय सुपार्श्व देवन के देवा, हुतभुक लयन करत पद सेवा । १२ ।
सहस्र जीभ करि तो प्रभुताई, कथन करै तो पार न पाई,
जय सुपार्श्व देवन के देवा, हुतभुक लयन करत पद सेवा । १३ ।
मैं नर हीन बुद्धि कहाँ पाऊं, जो प्रभु तो महान गुणगाऊं,
जय सुपार्श्व देवन के देवा, हुतभुक लयन करत पद सेवा । १४ ।

---

(१) १५ गणधर (२) वाणी (३) समान (४) इन्द्रके समान (५) साप (६) ठंढी हो जाती है (७) दुश्मन (८) मित्र (९) पर्वत (१०) गठा बराबर हो जाय (११) शेर

भक्ति सहाय करूं जयमाला, दुखी जानि प्रभु करहु निहाला,
जय सुपार्श्व देवन के देवा, हुतभुक लयन करत पद सेवा। १५।

घत्ता

इह दारिद हरणी संकट टरनी जयमाला सुख की करनी,
जो पढे निरन्तर मन वच तन करि सो पावे अष्टम धरनी

शार्दूल विक्रीडितम्

जो या शुद्ध सुपार्श्वनाथ प्रभुकी पूजा करै कारिता,
आमोदे मन वचन काय सतत संसार सो हारिता
पावे ईश पना महा विभु पनो लोके अलौके लखै,
पूजे देव पती त्रिकाल चरणा आनंद पावे अखे

इत्याशीर्वादः

"ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्रायनम", अनेन मन्त्रेण जाप्यं दीयते

अथ चंद्रप्रभु पूजा

छद गीता (स्थापना)

शुभ चन्द्रपुर नृप महासेन सुलक्षणा माता जने,
सो चन्द्रप्रभु वपु(१) चन्द्र सम पद चन्द अङ्क सुहावने
तजि वजयन्त विमान वंश इक्ष्वाकु नभ के भानु भे,
आयुष दश लख वर्ष उन्नति देह से अनुमान भे

सोरठा

कुमुदचन्द भगवान, भविकफुलां(२) प्रफुलित करन,

---

(१) मुख (२) भव्य रूपी फूल

अमिय(१) करावत पान, अत्र आय तिष्ठो प्रभो

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभु जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननम्)

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभु जिनेन्द्र अत्रतिष्ठ तिष्ठ ठ ठ (इतिस्थापनम्)

ॐ ह्रींश्रीचन्द्रप्रभुजिनेन्द्र ममसन्निहितो भव भव वषट (इतिसन्निधीकरणम्-

जोगी रासा

रतनन जड़ित कनकमय भाजन तामधि गंगा पानी,
फटिक समान मिलाय अगरजा गंध वहै मनमानी.
चन्द्र प्रभु के पद नख ऊपर कोटि चन्द्र दुति लाजै,
दरवित भावित भाव शुद्ध करि जजौं सप्त भय भाजै

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय जन्मजरारोगविनाशनायजलम् निर्वपामीतिस्वाहा,

मलियागिर घसि चन्दन नीको भलौ सिताभ्र(२) मिलाऊं,
अग्नि सिखा(३) मिश्रित करि आछो कनक कटोरा ल्याऊं
चन्द्र प्रभु के पद नख ऊपर कोटि चन्द्र० . .. .

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चदनम् निर्वपामीति स्वाहा.

तदुल धवल प्रछालि मनोहर मिष्ट अमी समतूला(४),
चुने खड वर्जित अति दीरघ लखे मिटत क्षुध शूला
चन्द्र प्रभुके पद नख ऊपर कोटि चन्द्र० . . ...

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभुजिनेद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा.

वरमच कुन्द कुन्द कुन्दन के पुष्प(५) सम्हारि वनाये,
नसत काम को विथा चढ़ावत पावत सुखमन भाये

---

(१) अमृत (२) कर्पूर (३) केसर (४) जा मिठाई में अमृतकी बराबरी कर रहा है (५) एक किस्म का फूल

चन्द्र प्रभुके पद नख ऊपर कोटि चन्द्र ... ... । ३ ।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय कामवाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा.

सूपकार(१) कृत षटरस पूरित व्यंजन नाना भाँती,
पुष्टि करत हरि लेत क्षीनता क्षुधा रोग को घाती
चन्द्र प्रभु के पद नख ऊपर कोटि चन्द्र० .. । ४ ।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा.

निश्चल ज्योति महा दीपक की प्रभु चरननके तीरा,
ल्याय धरौ हितपाय आपनो हरै न ताहि समीरा(२)
चन्द्र प्रभु के पद नख ऊपर कोटि चद्र० । ५ ।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा.

कंचन जड़ित धूपको आयन(३) जामधि धूप जराऊं,
चठत धूम्र मिस करम जनौं वसु फेरि न जगमें आऊं.
चन्द्र प्रभु के पद नख ऊपर कोटि चद्र० । ६ ।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूप निर्वपामीति स्वाहा

वृन्दारक(४) कुसुमाकर द्राक्षा(५) क्रमुक(६) रसाल(७)घनेरे,
इन्हें आदि फल नानाविधि के कंचन थार भरेरे
चन्द्र प्रभु के पद नख ऊपर कोटि चंद्र० । ७ ।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फल निर्वपामीति स्वाहा.

ले जल गंध अक्षत वर कुसुमा चरु दीपक मणि केरा,
धूप महाफल अरघ बनाऊ पद पूजनकी वेरा
चन्द्र प्रभु के पद नख ऊपर कोटि चंद्र० । ८ ।

---

(१) रसोईदार (२) हवा (३) वर्तन सुन्दर फूल, देवताओं के फूल-
(५) किशमिश (६) पीपल (७) आम

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय सर्वसुखप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा.

छंद शिखरणी

कही पांचै आछी, असित पखकी चैत्र महीना,
महाप्यारी रानीमल सुलक्षना नाम कहिना.
वसे रात्रि स्वामी सुभग दिन जाके उदरमा,
जजौं लेके अर्घं मिलत जिहिसो धाम परमा

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय चैत्र कृष्णा पचम्या गर्भकल्याणकाय अर्घम्.

जने माता भूपै शुभ इकदशी पूस वदि की,
वजे घंटा आदि भेसव अपुनसों छोभ अधिको.
वहां पूजा कीन्हीं अमरपति ने जन्म दिनकी,
यहां मैं ले अर्घं जजत करिये चन्द्र जिनकी

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय पौषकृष्णा एकादश्या जन्मकल्याणकाय अर्घम्

कपाली (१) सख्याकी तिथि वदि कही पूष पखमें,
धरी दीक्षा स्वामी विभव तजि आरण्य(२)थलमें.
हरे शत्रु सारे कलमष कहे आदि जितने,
लिये अर्घम् भारी चरण युग पूजौं तुम तने

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय पौषकृष्णा एकादश्यातपकल्याणकाय अर्घम्

भये ज्ञानी स्वामी नवमि कहिये फाल्गुन वदी,
निवारे चौघाती जगत जन तारे सुजलदी.
करें पूजा थारी सुरनर कहे आदि सबते,
इहाँ मैं ले अर्घम् पूजहु मन लगी आस कबते.

---

(१) ग्यारह (२) जंगल

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय फाल्गुन कृष्णा नवम्या ज्ञान कल्याणकाय अर्घम्.

सुदी सातें जानी सुभग महिना फाल्गुन कहा,
भये स्वामी सो तादिन शिखरते सिद्धप(१) महा
बजे बाजे भारी सुर नर कृत आनन्द वरतें,
करौं पूजा थारी शुभ अरघ ले आज करतें

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय फाल्गुणशुक्ला सप्तम्या निर्वाणकल्याणकाय अर्घम्

झूलना

महासेन कुलचन्द गुणकलाकेवृन्द,
नहिं निकट आवे कदा(२)मोह मथी(३)
देखि तुव कांति अति शांतिता की सुगति(४),
लाजि निजमन स्वपद रहत मंथी (५)
बढ़ी छवि छटाधर(६) असित तो तिमिर,
हर अहर्निश मंदता(७) लेश नाहीं
कहत 'मनरंग' नित करे मन रंग,
जा धरे मन प्रभू तो चरण माही

भुजग प्रयात

नमस्ते नमस्ते नमस्ते जिनंदा, निवारे भली भांति के कर्म फन्दा,
सुचन्द्र प्रभूनाथ तोसो न दूजा, करों जानिके पादकी जासुपूजा ।१।
लखे दर्श तेरो महा दर्श पावे, जो पूजें तुम्हें आपही सो पुजावे,
सुचन्द्र प्रभू नाथ तोसो न दूजा, करों जानिके पादकी जासु पूजा ।२।

---

(१) सिद्ध स्थान को प्राप्त करते हुए (२)कभी (३) काम (४) खूबी(५)काम देव अपनेही स्थान पर रहा आगे नहीं बढ सका (६) सुदरता की झलक लिए-हुए (७) रात दिन मद नहीं

जो ध्यावे तुम्हें आपने चित्त माँही, तिसे लोक ध्यावें कछू फेर नाहीं,
सुचन्द्र प्रभूनाथ तोसो न दूजा, करों जानिके पादको जासु पूजा । ३ ।
गहे पंथ तो सो सुपंथी कहावे, महा पन्थ सो शुद्ध आपै चलावे,
सुचन्द्र प्रभूनाथ तोसो न दूजा, करों जानिके पादकी जासु पूजा । ४ ॥
जो गावे तुम्हें ताहि गावे मुनीशा, जो पावें तुम्हें ताहिपावें गणीशा,
सुचन्द्र प्रभूनाथ तोसो न दूजा, करों जानिके पादकी जासु पूजा । ५
प्रभू पाद मांही भयो जो अनुरागी, महा पट्ट ताको मिले वीतरागी,
सुचन्द्र प्रभूनाथ तोसो न दूजा, करों जानिके पादकी जासु पूजा । ६ ।
प्रभू जो तुम्हें नृत्य कै कै रिझावे, रिझावे तिसे शक्र गोदो खिलावे,
सुचन्द्र प्रभूनाथ तोसो न दूजा, करों जानिके पादकी जासु पूजा । ७ ।
धरे पादकी रेणु माथे तिहारी, न लागे तिसे मोह दृष्टि(१) भारी,
सुचन्द्र प्रभूनाथ तोसो न दूजा, करों जानिके पादकी जासु पूजा । ८ ।
लहे पत्त तो जो वो है पत्तधारी, कहावे सदा सिद्धिको सो विहारी,
सुचन्द्र प्रभूनाथ तोसो न दूजा, करों जानिके पादकी जासु पूजा । ९
नमावे तुहें सीस जो भाव सेरी, नमें तासुको लोक के जीव हेरी(२),
सुचन्द्र प्रभूनाथ तोसो न दूजा, करों जानिके पादकी जासु पूजा ।१०
तिहारो लखे रूप ज्यों दौसदेवा(३) लगें मोर के चांद से जे कुदेवा,
सुचन्द्र प्रभूनाथ तोसो न दूजा, करों जानिके पादकी जासु पूजा ।११।
भली भांति जानी तिहारी सुरीती, भई मेरे जीमें वड़ो सो प्रतीती,
सुचन्द्र प्रभूनाथ तोसो न दूजा, करों जानिके पादको जासु पूजा ।१२।
भयौ सौख्यजोमो कहौ नाहि जाई, जनौ आजही सिद्धिकीऋद्धिपाई,।

(१) नजर (२) देखकर (३) सुर्य्य

सुचन्द्र प्रभूनाथ तोसा न दूजा, करों जानिके पादकी जासु पूजा ।१३।
करूं वीनता मैं दोऊ हाथ जोरी, बड़ाई करूं सो सबै नाथ थोरी,
सुचन्द्र प्रभूनाथ तोसो न दूजा, करों जानिके पादकी जासु पूजा ।१४।
थके जो गणी चारि हू ज्ञान धारें, कहा और को पार पावें विचारे,
सुचन्द्र प्रभूनाथ तोसो न दूजा, करों जाजिके पादकी जासु पूजा ।१५।

घत्ता, छद

चन्द्रप्रभु नामा गुण की दामा(१)पढ़ेभिरामा धरि मनहीं,
अन्तक(२) परछाहा परिहै नाहीं तापर कबहू झूठ नहीं.

दोहा ।

पन्थी(३) प्रभु मन्थो मथन(४) कथन तुम्हार अपार,
करो दया सब पै प्रभो जामें पावें पार.

इत्याशीर्वादः

"ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय नम" अनेन मन्त्रेण जाप्य दीयते.

अथ श्रीपुष्पदंतजिन पूजा

छंद गीता

केकन्द नगरी पितु सुग्रीवक रमा माता जासु की,
इक्ष्वाकु वंश सुपेद देह उचाव धनु शत तासुकी
स्वर्ग आर्णव तजि द्विपूरव लख सुआयु धरी भली,
पग तरे चिह्न सु मगर सोहत पुष्पदन्त महाबली । १ ।

---

(१) माला (२) मौत (३) रहनुमा (४) काम जीतनेवाले

आवो यहां कृपाल कृपा करो तनि अब आयके,
मैं करूं पूजन अष्टविधि मन वचन सीस नवायके
जो सरें मेरे काज अटके करम ठग घेरे खड़े,
तो विना निवरण(१) होत नाहीं महाभ्रम झगड़े पडे । २ ।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदत जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वानन)

ॐ ह्री श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्र अत्र तिष्टतिष्ठ ठ.ठ' (इति स्थापन)

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदत जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्
(इति सन्निधीकरण) ॥

उपेन्द्र वज्रा ।

निर्मल जहां श्रीद्रह(२)को सुनीर,लेकर भरे कुम्भ महा गहीरं(३),
सुपुष्पदन्त प्रभुपाद पद्मं, पूजूं मिले जो निर्वाण सद्मं

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन जिनेन्द्राय जन्मजरारोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥

तनमन घसों चन्दन कासमीरा, लागेन जो अन्तक(४)को समीरा(५)
सुपुष्पदंत प्रभुपाद पद्म, पूजूं मिले जो निर्वाण सद्मं । १ ।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदत जिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनम्

सुतन्दुल लज्जितमार(६) गोती, लिये महा तेज अभेद (७) मोती,
सुपुष्पदंत प्रभुपाद पद्मं, पूजूं मिले जा निर्वाण सद्मं । २ ।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्

भले भले फूल चुनाय लीन्हे, स्वअञ्जली मो इकठे सु कीन्हे,

---

(१) बचाव (२) श्रीनदी (३) गभीर (४) तीन सम्यग्दर्शनादि (५) मौत
(६) हवा (७) मरकत मणिकी सफेद किरणें जिसकेसामने शरमाती हैं।

सुपुष्पदन्त प्रभुपाद पद्म, पूजू मिले जो निर्वाण सद्म । ३ ।

ॐह्रींश्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्रायकामबाणविनाशाय पुष्पम्.

सच्छिद्रफेणी खुरमा सा सु ताजे, भरे महाथार आनन्द खाजे,

सुपुष्पदन्त प्रभुपाद पद्म, पूजू मिले जो निर्वाण सद्म । ४ ।

ॐह्रींश्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्रायक्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम्

दीया जरे ज्योति महा प्रकासो, फटे महा जो तम को उरासो(१),

सुपुष्पदंत प्रभुपाद पद्म, पूजू मिले जो निर्वाण सद्म । ५ ।

ॐह्रींश्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम्

कही महाधूप सुगंधकारी, दसौं दिशा जासु सुगन्ध(२)जारी,

सुपुष्पदंत प्रभुपाद पद्म, पूजू मिलेजो नर्वाण सद्म । ६ ।

ॐह्रीं श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपम्

दशांगुली(३) दाख बादाम गोला, भरे महाथार महाअमोला,

सुपुष्पदंत प्रभुपाद पद्म, पूजू मिलेजा निर्वाण सद्म । ७ ।

ॐह्रीं श्रीपुष्पदंत जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलम्

अडिल्ल छन्द

हर्षिहर्षि जियभूरि सुतूर बजायके, आठौ अङ्ग नवाय बड़ा हित पायके,

महा सुअरघबनाय भलेगुण उच्चरां, तेरे शुभयुगपदन सरोजन पै धरों.

ॐह्रीं श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्राय सर्वसुखप्राप्तये अर्घम्

सोरठा

नौमी बड़ी महान, फागुन की शुभ जा दिना,

गरभ रहे भगवान, जजौं अर्घ सो चरन युग

(१) अंधेरी की बेचनी (२) फैली (३) जावित्री

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंत जिनेन्द्राय फाल्गुन कृष्णा नवम्या गर्भकल्याणकाय अर्घम्.

जनम प्रभु गुण खान, अगहन सुदि एकम दिना,
नमो जोरि युगपाणि, जजौं अरघ सो चरण युग

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्राय अगहन शुक्ला एकम् जन्मकल्याणकाय अर्घम्.

सुदि एकम अगहान, तप लीन्हों घरवार तजि,
धरत महासुम ध्यान, जजौं अघे सो चरनयुग.

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदत जिनेन्द्राय अगहन शुक्ला एकम् तपकल्याणकाय अर्घम्

उपजा केवल ज्ञान कातिक सुदि द्वितीया दिना,
भे सयोगि भगवान,जजौं अरघ सों चरणयुग.

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदत जिनेन्द्राय कार्तिक शुक्ला द्वितीयाया ज्ञानकल्याणकाय अर्घम्

सुदि अष्टमि परवान, भादौं मास समेद ते,
शिवपद लियो महान, जजौं अरघ सो चरणयुग.

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदत जिनेन्द्राय भाद्रपद शुक्ला अष्टम्या मोक्षकल्याणकाय अर्घम्.

जयमाल छन्द काव्य.

जय कुल कमल दिनेश, चन्द्र(१) भवि कुमुद प्रकासी,
जय अघहरन प्रताप करन, सुख सिद्धि निवासी
जय नवीन वर ज्ञान-मित्र(२) के शुभ उदयाचल,
जय अडिग्ग(३)धरि ध्यान सुवनरद(४)लहत परमफल(५),

पद्धरि.

जय जन्म मरण रुज(६) के हकीम, परमेश्वर परतापो सुसीम(७),

(१) भव्यजीव (२) सूर्य (३) अचल (४) कामदेव को रद करने (५) मोक्ष
(६) रोग (७) बडे दरजे के प्रतापी

जग जीव उधारण को महन्त, जय नमो नमो प्रभु पुष्पदंत । २ ।
जय खनक(१)जपत तेरो स्वरूप, सो अलख महा आनन्दकूप,
जग जीव उधारण को महंत, जय नमो नमो प्रभु पुष्पदन्त । ३ ।
हो लोभ महा रिपु को कुखेम,(२)सब जीवन पै राखत सुक्षेम,
जग जीव उधारण को महंत, जय नमो नमो प्रभु पुष्पदन्त । ४ ।
जय आदि अन्त वर्जित सदैव, आनादि निधन हो महादेव,
जग जीव उधारण को महंत, जय नमो नमो प्रभु पुष्पदन्त । ५ ।
संशय वन दाहन को कृशानु(३) जय मिथ्या तम नाशन सुभानु,
जग जीव उधारण को महंत, जय नमो नमो प्रभु पुष्पदन्त । ६ ।
जय लोक अलोकहि लखत येम,(४)धात्री फल(५) लीन्हे हस्त जेम,
जग जीव उधारण को महंत, जय नमो नमो प्रभु पुष्पदन्त । ७ ।
जय ज्ञान महालोचन अपार, सब दरशी मे सर्वज्ञ सार,
जग जीव उधारण को महंत, जय नमो नमो प्रभु पुष्पदन्त । ८ ।
गुण पर्यय द्रव्य कहे त्रिकाल, प्रभु वर्तमान सम लखत हाल,
जग जीव उधारण को महंत; जय नमो नमो प्रभु पुष्पदन्त । ९ ।
जय परम हंस सम्यक्त सार, परमाव गाढ़ के धरनहार,
जग जीव उधारण को महत, जय नमो नमो प्रभु पुष्पदन्त । १० ।
निज परणतिमे मे परम लीन, प्रभु पर परणित लखि त्याग कीन्ह,
जग जीव उधारण को महंत, जय नमो नमो प्रभु पुष्पदत । ११ ।
जय दुराराध्य(६)दुख करन शाति, तन फटिक समान महान कांति,
जग जीव उधारण का महंत, जय नमो नमो प्रभु पुष्पदत । १२ ।

(१) जहान (२) नाश करनेवाले (३) आग (४) इस तरह (५) आवला
(६) परमेश्वर जिसकी आराधना मुश्कल है

जय दीन बन्धु तुम गुण अपार, सुर गुरु कथि पावन नाहिं पार,
जगजीव उधारण का महन्त, जय नमो नमो प्रभु पुष्पदंत । १३ ।
याते प्रभु अब करुणा करेहु, जन जानि आपनो सुक्ख देउ,
जगजीव उधारण को महंत, जय नमो नमो प्रभु पुष्पदन्त । १४ ।

छप्पय छन्द

पुष्पदन्त भगवंत तनी यह वर जयमाला
पढ़े पढ़ावे कंठ करे सो सब में बाला(१)
होय महागुण वृन्द (२) त्रास(३) सुपने नहिं पावे,
लेय सिद्धि पद अचल फेरि नहिं लोक मंझावे

सोरठा ।

पुष्पदंत भगवान, तुम चरणन परतापते,
वरतो सकल जहान पुत्र पौत्र परताप सुख

इत्याशीर्वादः ॥

"ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्राय नमः" अनेन मंत्रेण जाप्यं दातव्यं

श्रीशीतलनाथ पूजा

गीतछन्द ।

है नगर भद्दिल भूप दृढ़रथ सुष्टनंदा ता त्रिया,
तजिअचुत दिवि(४)अभिराम(५)शीतलनाथ सुत ताके प्रिया,
इक्ष्वाकु वंशी अङ्क (६) श्रीतरु हेम वरण शरीर है,
धनु नवे उन्नति पूर्व लपइक आउ सुभग परी रहे.

(१) ऊंचा (२) समूह (३) भय (४) स्वर्ग (५) सुन्दर (६) चिन्ह (७) सुंदर

सोरठा।

सो शीतल सुखकंद, तजि परिग्रह शिव लोक गे,
छूट गयो जग धंद, करिय तसों(१) अह्वान अब.

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननम्)
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इति स्थापनम्)
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्(इतिसंन्निधीकरणं)

स्थापना छन्द गीता।

नित(२)तृषा(३) पीड़ा करत अधिको दांव अवके पाइयो,
शुभ कुम्भ कंचन जड़ित गंगा नीर भरि ले आइयो.
तुम नाथ शीतल करो शीतल मोहि भवकी तापसों,
मैं जजों युगपद(४) जोरि कर(५)मो काज सरसी आपसों.

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जल निर्वपामीति स्वाहा

जाकी महक सों नीव आदिक होत चन्दन जानिये,
सो सूक्ष्म घसिके मिले केसर भरि भरि कटोरा आनिये,
तुम नाथ शीतल करो शीतल० ... ... । १ ।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दन निर्वपामीति स्वाहा.

मैं जीव संसारी भयो अरु मरयो ताको पार ना,
प्रभु पास अक्षत ल्याय धारे अखय पदके कारना,
तुम नाथ शीतल करो शीतल० ... ... । २ ।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा

इन मदन मोरी सकति मोरी रह्यो सब जग छायके,

---

(१) इसलिये (२) हमेशा (३) प्यास (४) दोनों चरण (५) हाथ जोड़कर

ता नाश कारन सुमन ल्यायो महाशुद्ध चुनायके,
तुम नाथ शीतल करो शीतल मोहि भवकी तापसों
मैं जजों युगपद जोरि कर मो काज सरसी आपसों । ३।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय कामवाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीतिस्वाहा

क्षुधा रोग मेरे पिंड लागो देत मांगेना(१) घरी,
ताके नसावन काज स्वामी सूपले(२) आगेधरी.
तुम नाथ शीतल करो शीतल० ... ... । ४।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा

अज्ञान तिमिर महान अन्धाकार करि राखो सबे,
निज पर सुभेद पिछान कारण दीप ल्यायो हूं अबे.
तुम नाथ शीतल करो शीतल० ... ... । ५।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा

जे अष्ट कर्म महान अतिबल घेरि मो चेरा कियो,
तिन केर नाश विचारि के ले धूप प्रभु ढिंग खेपियो.
तुम नाथ शीतल करो शीतल० ... ... । ६।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा

शुभ मोक्ष मिलन अभिलाष मेरे रहत कबकी नाथजू,
फलमिष्ट नाना भांति सुथरे ल्याइयौ निज हाथ जू.
तुम नाथ शीतल करो शीतल० ... ... । ७।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा

जल गंध अक्षत फूल चरु दीपक सुधूप कही महा,

---

(१)क्षुधा मेटनेके अर्थ सारे समय लगा रहताहै कोई घडीभी नहीं बचती (२)नैवेद्य

फल ल्याय सुन्दर अरघ कीन्हों दोष सो वर्जित कहा,
तुम नाथ शीतल करो शीतल मोहि भवको तापसों
मैं जजों युगपद जोरि कर मो काज सरस आपसों । ८ ।

ॐह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय अनर्घ पदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

पंच कल्याणक गाथा

चैत वदी दिन आठें, गर्भावतार लेत भये स्वामी,
सुर नर असुरन जानी, जजहुं शीतल प्रभू नामी

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय चैत्रकृष्णा अष्टम्या गर्भ कल्याणकाय अर्घम्

माघ वदी द्वादशि को, जन्मे भगवान सकल सुखकारी,
मति श्रुति अवधि विराजै, पूजों जिन चरण हितधारी.

ॐह्रीं श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय माघ कृष्णा द्वादश्या जन्मकल्याणकाय अर्घम्

द्वादशि माघ वदी में, परिग्रह तजि बन वसे जाई,
पूजत तहाँ सुरासुर,हम यहां पूजत गुण गाई.

ॐह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय माघकृष्णा द्वादश्या तपकल्याणकाय अर्घम्

चौदशि पूस वदी में,जग गुरु केवल पाय भये ज्ञानी,
सो मुरति मनमानी,मैं पूजों जिन चरण सुखखानी.

ॐह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय पौष कृष्णा चतुर्दश्या ज्ञानकल्याणकाय अर्घम्

आश्विन सुदी अष्टमदिन, मुक्ति पधारे समेद गिरिसेती,
पूजा करत तिहारी, नसत उपाधि जगत की जेती

ॐह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय आश्विन शुक्ला अष्टम्या मोक्षकल्याणकाय अर्घम्

अथ जयमाल ।। छंद त्रभंगी ।।

जय शीतल जिनवर परम धरमधर छविके(१)मन्दिर शिव भरता(२),

---

(१) शोभाके स्थान (२) मोक्ष लक्ष्मी के स्वामी

जय पुत्र सुनन्दा के गुण वृन्दा(१) सुख के कंदा(२) दुख हरता,
जय नासा दृष्टी हो परमेष्टी तुम पदनेष्टी(३) अलख(४)भये,
जयतपो चरनमा रहत चरनमा सुआचरणमा कलुषगये.

छन्द स्रग्विणी

जय सुनंदा के नंदा तिहारी कथा, मापि को पार पावे कहावे यथा,
नाथ तेरे कभी होत भव रोग(५)ना, इष्ट वियोग अनिष्टसंयोगना।१।
अग्नि के कुण्ड में वल्लभा रामकी,नाम तेरे बची सो सती कामकी,
नाथ तेरे कभी होत भव रोग ना, इष्ट वियोग अनिष्ट संयोगना। २।
द्रोपदी चीर बाढ़ो तिहारी सही, देव जानो सबो में सुलज्जा रही
नाथ तेरे कभी होत भव रोग ना,इष्ट वियोग अनिष्ट संयोगना। ३।
कुष्ट राखो न श्रीपालको जो महा,अब्धि ते काढ़ लीनो सिताबी तहो,
नाथतेरे कभी होत भव रोग ना,इष्ट वियोग अनिष्ट संयोगना। ४।
अञ्जना काटि फाँसी गिरो जो हतो,औ सहाई तहाँतो विनाको हतो,
नाथतेरे कभी होत भव रोग ना,इष्ट वियोग अनिष्ट संयोगना। ५।
शैल फूटा गिरो अञ्जनीपूत(६)के, चोट ताके लगी ना तिहारे तके
नाथतेरे कभो होत भव रोग ना,इष्ट वियोग अनिष्ट संयोगना। ६।
कूदियो शीघ्र ही नाम तो गाय के, कृष्ण कालो नथो कुण्डमें जायके,
नाथतेरे कभी होत भव रोग ना,इष्ट वियोग अनिष्ट संयोगना। ७।
पांडवा जे घिरे थे लखागार(७) में, राह दीन्ही तिन्हें तें महाप्यार में,
नाथतेते कभी होत भव रोग ना,इष्ट वियोग अनिष्ट संयोगना। ८।

---

(१) गुणका समूहधारी (२) मूल (३) चरण में लीन, चरण भक्त (४)परमात्मा निराकार (५) जन्म मरण-संसार,-(६)-हनुमान (७) लाख के महल में

सेठ को शूलिका प भरो देख के, कीन्ह सिंहासनं आपनो लेखके,
नाथतेरे कमी होत भव रोग ना,इष्ट वियोग अनिष्ट संयोगना । ९ ।
जा गनाये इन्हें आदि देके सवे,पाद परसाद ते भे सुखारी(१) सवें,
नाथतेरे कमी होत भवरोग ना,इष्ट वियाग अनिष्ट संयोगना । १० ।
वार मेरी प्रभू देर कीन्हीं कहा, कीजिये दृष्टि दाया की मोपे अहा,
नाथतेरे कमी होत भवरोग ना.इष्ट वियोग अनिष्ट सयोगना । ११ ।
धन्य तू धन्य तू धन्य तू मैनहा.जो महा पंचमो ज्ञान नीके लहा,
नाथतेरे कमो होत भवरोग ना,इष्ट वियाग अनिष्ट संयोगना । १२ ।
कोटि तीरत्थ तेरे पदो के तले,रोज ध्यावें मुना सो वतावें भले,
नाथतेरे कभो होत भवरोग ना,इष्ट वियोग अनिष्ट संयोगना । १३ ।
जानि के यों भली भाति ध्याऊ तुझे,मक्ति पाऊं यही देव दीजे मुझे!
नाथतेरे कमो होत भवरोग ना,इष्ट वियाग अनिष्ट संयोगना । १४ ।

गाथा

आपद सव दीजे भार झोकि यह पढ़त सुनत जयमाल,
होत पुनीत करण अरु जिह्वा वरते आनंद जाल
पहुंचे जहं कवहू पहुंच नही नहिं पाई पावे हाल,
नहीं भयो कमी सो होय सवेरे,भाषत मनरंगलाल

सोरठा

भो शीतल भगवान, तो पद पद्मो जगत में,
हैं जेते परवान, पद्म रहे तिन पर वनौ.

---

(१) सुख भोगनेवाले

इत्याशीर्वादः ॥

"ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः" अनेन मन्त्रेण जाप्य दीयते

अथ श्रेयांसनाथपूजा

छन्द गीता

सिंहपुर राजा विमल जाके त्रिया विमलामली,
तजि पुहुप उत्तर श्रेयांस सुत भे हेम वरण महावली,
धनु असी उन्नत चिह्न गेंडा महत वंश इक्ष्वाकु है
शुभ वरष लषचंद असी आउप पुण्यको सुविपाक है । १ ।
तजि राज्यभूति (१) धरी दिक्षा तप करो अति घोर ही,
मल शुक्ल श्रेणी क्षपक चढ़ि लहि ज्ञान पंचम जोरही,
करि करि विहार उतारि अधमनि भव उदधि ते तुम प्रभू.
पुनि आप हू शिवनाथ लिय सो यहां तनि आवो विभू । २ ।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयासनाथजिनेद्र अत्रावतरावतर मन्त्रोपट् (इत्याह्वाननम्)
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयासनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इति स्थापनम्)
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयासनाथजिनेन्द्रअत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्(इतिसन्निधीकरण)

छन्द मालिनी

घनरस(२) भरि चोखा रत्नथारी मंझारी,
मिलय हरि सुधारी दीर्घ सौगढ कारी,
लयमन भरि पूजूं पाद श्रेयाँस के रे
नसत असत (३) कर्म ज्ञान वर्णादि मेरे । १ ।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरारोगविनाशनाय जलं निर्वपामीतिस्वाहा ।

---

(१) विभूति (२) मेघजल (३) बुरे

सुमन सुरभितामें मेलिह के जो कपूरे,
अति निकट सुजाके भौंर गुञ्जार पूरे,
लयमन भरि पूजूं पाद श्रेयांस के रे
नसत असत कर्म ज्ञान वर्णादि मेरे । २ ।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनम्

अखत अखत नीके श्वेत मीठे सुभारी,
जल करि परछाले खंड वर्जे हकारी
लयमन भरि पूजूं पाद० ... । ३ ।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्

सुमन ग्रथित माला पंचधा वर्ण वाला(१),
लखत लगें नीके घ्राण होवें खुश्याल।(२)
लयमन भरि पूजूं पाद० ... .. . । ४ ।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पम्

सुरभि घृत पचाई शुद्ध नैवेद्य ताजी,
कनक जड़ित थारा मांहि नीके सु साजी.
लयमन भरि पूजूं पाद० ... ... । ५ ।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय-नैवेद्यम्

परम वरत बाती धूम जामें न होई,
तिमिर कटत जामों दीप ऐसो संजोई.
लयमन भरि पूजूं पाद० .. ... । ६ ।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम्

---

(१) अच्छा (२) सुखी

जलत ज्वलन मांही धूप गंधै छटासो,
उड़त मगन भौंरा पाय धूम्रा घटासो.
लयमन भरि पूजूं पाद० ... ... । ७ ।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयासनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम्,

मधुर मधुर पाके आम्र निम्बू नरङ्गी
रस चलित सो नाहीं कीजिये जानि अङ्गी,
लयमन भरि पूजूं पाद० ... ... । ८ ।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयासनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम्

अब करियत अर्घं मेल्हि के द्रव्य आठो,
मन बच तन लीन्हें हाथ उचारि पाठों.
लयमन भरिपूजूं पाद० ... ... । ९ ।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयासनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घम्

छंद चाली

वदि जेठ तनी छठि जानी, जिन गरभ रहे सुखखानी,
जह पूजत सुरपति आई, हम पूजत अर्घ बनाई

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयासनाथ जिनेन्द्राय जेष्ठ कृष्णा षष्टम्या गर्भकल्याणकाय अर्घम्

फाल्गुण वदि ग्यारसि नीकी, जननी विमला जिनजीकी,
जनि पुत्र भइ खुशहाला. पूजों जिन पद सुखजाला.

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयासनाथजिनेन्द्राय फाल्गुनकृष्णाएकादश्या जन्मकल्याणकाय अर्घम्

वदि फाल्गुन ग्यारसि भाई, भावन द्वादशि जु कहाई,
प्रभु होत भये बनवासी, तुम पाद जजों गुणरासी.

ओंह्रीं श्रीश्रेयासनाथ जिनेन्द्राय फाल्गुणकृष्णा एकादश्या तपकल्याणकाय अर्घम्

वदि माघ अमावस गाई, ऋद्धि केवल की शुभ पाई,
प्रभु नाशत कष्ट घनेरे, ले अर्घ जजों पद तेरे.

ओंह्रीं श्रीश्रेयासनाथ जिनेन्द्राय माघकृष्णा एकादश्या ज्ञानकल्याणकाय अर्घम्

श्रावण की पूरन मासी सम्मेद शिखर ते पासी,
शिव रमणी परणी जाई, तुम चरण जजौं सिरनाई.

ओंह्रीं श्रीश्रेयासनाथ जिनेन्द्राय श्रावणशुक्ला पूर्णमास्यामोक्षकल्याणकायअर्घम्

छन्द त्रभगी

जय पद सर तेरे तीक्षण टेरे कहत घनेरे गरम हरी,
जय तिन गति सूधी धरत न मूंदी वात न मूंदी यह सुथरी.
जय काल निसाने देखत भाने चूक न जाने निज मनसों,
जयहोततीर मो हरतपीर मो हिय तु तीर मो तनि निवसो(१

छन्द पद्धरिका

जय विमल तनय तुअ पद सरोजमन वच तन नमियत तिन्हें रोज,
अब श्रेय करो श्रेयांसनाथ,मैं तुम्हें पाय हूवो सनाथ । १ ।
मेरे नहिं एको और आस, चित रहत सतत तो चरण पास,
अब श्रेय करो श्रेयांसनाथ मैं तुम्हें पाय हूवो सनाथ । २ ।

---

(१) हे भगवान तुम्हारे चरण जयवन्त हो, वहुत लोग उच्च स्वर से आपको गर्भ हरी अर्थात् मुक्त कहतेहैं, उनकी गति सीधी है वक्र नहीं यह वात खुली है छिपी नहीं । काल अर्थात् यमराज की सेना आपको देखकर भागती है इसमें मन में कुछ सदेह नही, आपके समीप होने से मेरा कष्ट दूर होता है इसलिए मेर हृदय में निकट विराजमान हो

तुम राज्य रमा सब त्याग दीन,आनन्द-सहित वनवास कीन्ह,
अब श्रेयकरो श्रेयांसनाथ,मैं तुम्हें पाय हूवो सनाथ ।३।
व्रतमहा समिति पण गुपति तीन,इम तेरह विधि चरित्र लीन,
अब श्रेयकरो श्रेयांसनाथ,मैं तुम्हें पाय हूवो सनाथ ।४।
तप द्वादश अन्तर बाह्य भेद, युत तपत तपस्या निति अभेद,
अब श्रेय करो श्रेयांसनाथ,मैं तुम्हें पाय हूवो सनाथ ।५।
उत्तम क्षम आदिक कहत धर्म, तिनको तुम धारक हो सुधर्म,
अब श्रेय करो श्रेयाँसनाथ,मैं तुम्हेंपाय हूवो सनाथ ।६।
द्वादश भावन भाई महान,अध्रुव को आदिक भेद जान,
अब श्रेय करो श्रेयांसनाथ,मैं तुम्हें पाय हूवो सनाथ ।७।
धरि तीन रतन उरमें विशाल,है आपु अजाची करत हाल,
अब श्रेय करो श्रेयांसनाथ,मैं तुम्हें पाय हूवो सनाथ ।८।
संयम पण इन्द्री दमन रूप,धरि होत भये तिहु लोक भूप,
अब श्रेयकरो श्रेयांसनाथ,मैं तुम्हें पाय हूवो सनाथ ।९।
पर कारज कारी तुम दयाल, तो सम दूजो नहिं लोक पाल,
अब श्रेयकरो श्रेयांसनाथ,मैं तुम्हें पाय हूवो सनाथ ।१०।
घट घट के अन्तर लीन देव,जन कहत विचक्षण सकल एव,
अब श्रेय करो श्रेयांसनाथ,मैं तुम्हें पाय हूवो सनाथ ।११।
पग धरत होत तीरथ महान, सो परसत पावत अचल थान,
अब श्रेयकरो श्रेयांसनाथ,मैं तुम्हें पाय हूवा सनाथ ।१२।
जाके घन तेरे चरण दोय,ता गेह कमी कबहू न होय,
अब श्रेयकरो श्रेयांसनाथ,मैं तुम्हें पाय हूवो सनाथ ।१३।

तुम चरण तनी परसादपाय,विन श्रम चिन्तामणि मिलतआय,
अब श्रेय करो श्रेयांसनाथ,मैं तुम्हें पाय हूवो सनाथ । १४ ।
बलिहारी इन चरण की जाउं,नहिं फेर धराऊं कतहुनाऊं,
अब श्रेयकरो श्रेयांसनाथ,मैं तुम्हें पाय हूवो सनाथ । १५ ।

घता ।

श्रेयनाथ भगवन्त तनी यह वर जय माला,
मन वच तनय लगाय पढ़े जो सुनहि त्रिकाला.
सिद्धि ऋद्धि भरपूर रहे ता ग्रह के माँही,
मंगल वृद्धि महान होय नहिं घटे कदाही.

सोरठा ।

श्रेयनाथ भगवान, श्रेय करण को प्रण भले,
लियो कहत मतिवान, सो करिये सब जग विषे.

इत्याशीर्वादः

"ओंह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः" अनेन मन्त्रेण जाप्य दीयते

श्रीवासुपूज्यपूजा

छन्द गीता

शुभ पुरी चम्पा नृपति जह वसु पूज्य विजया ता त्रिया,
तजि महा शुक्र विमान ता घर वासपूज्य भये प्रिया
सिंह वरन उच्चाव सत्तिरि चाप वश इक्ष्वाकु हैं,
सत्तरि औ द्वै लख वर्ष आउष अङ्क महिष भला कहैं.

सोरठा

वासु पूज्य जिनदेव, तजि आपद जिन पद लयौ,
करत इन्द्र पद सेव मैं टेरत इह आव अब.

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्र. अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननम्)

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्र अत्रतिष्ठ तिष्ठ ठ ठ (इतिस्थापनम)

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्र ममसन्निहितो भव भव वषट (इतिसन्निधीकरणम्)

भरि सलिल महा सुचि झारी, दे तीन धार सुखकारी,
पद पूजन करहुं बनाई, जासों गति चार नसाई,

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय जन्मजरारोगविनाशनायजलम् निर्वपामीति स्वाहा,

घसि पावन चन्दन लाऊं, नाना विधि गंध मिलाऊं,
पद पूजन करहुं बनाई,जासों गति चार नसाई.

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा

अत्तत ले दीर्घ अखंडे,अति मिष्ट महाद्युति मंडे,
पद पूजन करहुं बनाई,जासों गति चार नसाई.

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अत्ततान् निर्वपामीति स्वाहा.

वृन्दार कनकके फूला बहु ल्याय धरों सुख मूला,
पद पूजन करहुं बनाई,जासों गति चार नसाई.

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा.

मधुरा पक्वान्न घनेरा,ले मोदक लाडू पेरा,
पद पूजन करहुं बनाई जासों गति चार नसाई.

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा.

करि रत्न तनो शुभ दीयो, निज हाथन पे धरि लीयो

पद पूजन करहुं बनाई, जासों गति चार नसाई,

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा.

कृष्णा गरु धूप मिलाई, दहिये शुभ ज्वाल मँगाई,

पद पूजन करहुं बनाई, जासों गति चार नसाई.

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूप निर्वपामीति स्वाहा.

फल आम नरङ्गी केरा, बादाम छुहार घनेरा,

पद पूजन करहुं बनाई, जासों गति चार नसाई.

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फल निर्वपामीति स्वाहा.

ले आठों द्रव्य सुहाई, जल आदिक जे सुगताई,

पद पूजन करहुं बनाई, जासों गति चार नसाई

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय सर्वसुखप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा.

आसाढ़वदी छठि गाई, जिन गरभ रहे सुखदाई,

हम गरभ दिना लख सारा, (१) ले अरघ जजों हितकारा.

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय आषाढ कृष्णा षष्ठम्या गर्भकल्याणकाय अर्घम्.

वदि फाल्गुन चौदशि जानो, विजयाने जने सुखखानी,

वह मूरत मो मन भाई, जजिये पद अर्घ बनाई,

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय फाल्गुनकृष्णा चतुर्दश्या जन्मकल्याणकाय अर्घम्

वदि फागुन चौदशि दिक्षा (२), लीन्हीं अपनी शुभ इच्छा,

तप देवन जय जय कीन्हो, हम पूजत हैं गुण चीन्हीं.

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय फाल्गुन कृष्णा चतुर्दश्या तपकल्याणकाय अर्घम्.

दिन माघ सुदी दुतिया के, अपरान्ह (३) समय सुखजाके,

---

(१) शुभ (२) दीक्षा (३) तीसरे पहर

उपजो केवल पद केरा, पद पूजि लहो शिव डेरा.

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय माघ शुक्ला द्वितीयाया ज्ञानकल्याणकाय अर्घम्

चंपापुर ते सुखदानी, भादों सुदि चौदशि मानी,

अविनाशी जाय कहाये, ले अर्घ जजों गुण गाये.

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्राय भाद्रपद शुक्ला चतुर्दश्या मोक्षकल्याणकाय अर्घम्.

छन्द जयमाल

जय जय विजयासुत सकल जगत नुत अष्टकर्म चुत जित मयना(१),
गुण सिंधु तिहारे चरण निहारे, सफल हमारे मे नयना.
जो हती(२) कालिमा कुगुरु लखनकी भाजि गई सो इक(३) पलमा,
पाई, मैं साता(४)नासि असाता शान्ति परी मो अन्तर मा(५).

छन्द

जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र जय जिनेन्द्र देवजू,
पुलोमजापती करे पदारबिंद सेवजू.
दीन बंधु दीन के सम्हारि काज कीजिये,
मो तने (६) निहारि आपमें मिलाय लीजिये. ।१।
राग दोष नासिके भये सुवीतराग जू,
मुक्ति वल्लभा तनो जगो महान भाग जू.
दीन बंधु दीन के सम्हारि काज कीजिये,
मो तने निहारि आपमें मिलाय लीजिये. ।२।
भूख प्यास जन्म रोग जरा मृत्यु रोगना,

(१) काम (२) थी (३) एक पलमें (४) सुख (५) मेरे मन में शान्ति हुई
(६) मेरी तरफ नजर करके

खेद स्वेद भीति भाव हूं अचंभ सोग ना.
दीनबंधु दीनके सम्हारि काज० ... ... । ३ ।
नीद मोह जाति लाभ आदि दे नहीं मदा,
वर्जितं अरत्ति है अचिंत भाव तो सदा.
दीन बंधु दीनके सम्हारि काज० ... ... । ४ ।
दोप नासि के अदोप देव तू प्रमान है,
दोप लीन देव जो कुदेव के समान है.
दीन बंधु दीनके सम्हारि काज० ... ... । ५ ।
पाय के कुदेव साथ नाथ मैं महा भमो,
लक्ष चारि औ अशीति योनि मांझ ही गमो(१)
दीन बंधु दीन के सम्हारि काज० ... ... । ६ ।
देख तो पदारविंद नाथ सूधि मो भई,
जानि के कुदेव त्याग रूप बुद्धि परनई.
दीनबंधु दीनके सम्हारि काज० ... ... । ७ ।
जो पदारविन्द नाथ शीस पे नहीं वहे,
बूड़ते समुद्र यान छांड़ि पाहने गहे. (२)
दीन बंधु दीनके सम्हारि काज० ... ... । ८ ।
तो विना न देव जीव मोक्ष राह पावही,
तो विवेक आप और को न आवही.
दीनबंधु दीनके सम्हारि काज० ... ... । ९ ।

---

(१) भ्रमण किया ८४ लाख योनि में(२)जो आपके चरण कमल सिर पर नहीं रखता वह उस पुरुषके समान है जो डूबते हुए नौकाको छोडके पत्थरका सहारा के

मान त्याग भाव तो चरण में लगावही,
सो अमान(१) पूज्यमान सिद्धि ठान जावही
दीनबंधु दीनके सम्हारि काज० ... . । १० ।
तो प्रसाद नाथ पंगुला बड़े पहाड़ पे,
जो चढ़े अचंभ नाहिं जीत लेय मार पे(२)
दीन बंधु दीनके सम्हारि काज० ... ... । ११ ।
मूक बोल बैन मिष्ट इष्टता धरे महा,
तो प्रभाव सिद्धिनाथ हाय ना कहा कहा
दीन बंधु दीनके सम्हारि काज० .. .. । १२ ।
रेणुका पदारविंद की महा पुनीत सो,
सीस पै धरे सुधार होत है अमीत सो.
दीन बंधु दीनके सम्हारि काज० .. ... । १३ ।
मे भवाब्धि पार जे निहारि रूप तो तनो,
मन्नरंगलाल को सदा सहाय तू बनो.
दीन बंधु दीनके सम्हारि काज० .. ... । १४ ।

घत्ता, छंद

वासुपूज्य जिनराज प्रभू को शुभ जयमाला,
करम तनो ऋण हरण काज बरनी सुखशाला
पढ़त सुनत बुधि बढ़त कढ़त दारिद्र दुखदाई,
जस उमड़त दश दिशा धरम सो होत मिताई

---

(१) मान रहित पुरुष (२) काम देव को जीतले

सोरठा.

वासु पूज्य महाराज, तुव पद नख अति चन्द दुति,
निज निज साधो काज, जासु चन्द्रिका में सकल.(१)

इत्याशीर्वादः ॥

"ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय नम" अनेन मन्त्रेण जाप्य दीयते.

अथ श्रीविमलनाथजिनपूजा

छंद गीता

कंपिला नगरी सुकृतवरमा पिता श्यामा मातके,
सुत विमल वंश इक्ष्वाकु अङ्क वराह शुभ जगतात के.
साठ धनु उन्नत सुकंचन वर्ण देह विराजही,
सहस्रारतें(२) चय साठ लख वर्ष सुआऊपा लही.
प्रभु विमल मनिकर विमल मति मो विमलनाथ सुहावने,
गुण कन्द चन्द अमंद आनन जगत फन्द मिटावने.
अब लगी मो मन की सुआसा पाद पूजन की भली,
तनि करो किरपा धरो पग इह आयजो पाऊं रली (३)

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननं)

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठतिष्ठ ठःठः (इति स्थापन)

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्रअत्रममसन्निहितो भव भव वषट् इतिसन्निधीकरण

मैं ल्याय सुभग कबन्ध(४) चन्दन मंद मंद घसाय के, —

---

(१) आपके चरण कमल रूप चादकी चादनी में सब जीव अपने अपने काम सिद्ध करो (२) स्वर्ग का नाम (३) सुख (४) जल

मिलवाय त्रिपा निकंद कारन झारिका भरवायके
प्रभु विमल पाप पहार तोड़न वज्र दण्ड सुहावने,
पद जजों सिद्धि समृद्धि दायक सिद्धि नायक तो तने.

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरारोग विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा

घसवाय चन्दन अगरजा (१) कपूर वासव वल्लभा(२)
धरि रतन जड़ित सुवर्ण भाजन मांहि जाकी अति प्रभा,
प्रभु विमल पाप पहार तोड़न वज्र दण्ड० · ।१।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दन निर्वपामीति स्वाहा.

अति दीर्घ तंदुल धवल छाले पुञ्ज साजे थार में,
धनचंद लज्जित शरद ऋतु के कुन्द मकुचे हार (३)में
प्रभु विमल पाप पहार तोड़न वज्र दण्ड० ·· ।२।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा

बहु अमल कमल अनूप अनुपम सहस दल विकसे कहे,
सो धारि कर पर,देखि शुभतर भाव कर वर ने लये(४)
प्रभु विमल पाप पहार तोड़न वज्र दण्ड० ·।३।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा

शतछिद्रफेनी धवल(५) चन्द समान कांति धरे घनी,
वर क्षीर मोदक शालि ओदन मिले सदा सोहनी (६)
प्रभु विमल पाप पहार तोड़न वज्र दण्ड० ··· · ।४।

---

(१) अगर (२) केसर, इन्द्र को प्यारी (३) धोए हुए और खुशबूदार ऐसे हैं कि चांद और फूल शरमाते हैं (४) हजार दल के खिले हुए कमल अच्छे देखकर हाथ में ... (५) फेनी एक मिठाई है सुराखदार(६)अच्छी स्वाद मिलके

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्रायक्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा.

मणि दीप दीपति जोति दश दिशि झोक लगे न पौन(१)की,
ना बुझत धरि कंचन रकेवी कांति प्रसरित जौनकी.
प्रभु विमल पाप पहार तोड़न वज्र दण्ड० ··· ··· । ५ ।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनायदीपं निर्वपामीति स्वाहा.

ले धूप गंध मिलाय बहु विधि धूमकी सुघटा लिये,
सो खेय धूपायन विपय(२)सब कर्मजाल प्रजालिये.
प्रभु विमल पाप पहार तोड़न वज्र दण्ड० ··· ··· । ७ ।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा.

ले क्रमुक(३) पिस्ता लांगली(४) अरु दाख बादामे घनी,
शुभ आम्र कदलीफल(५) अनूपम देवकुसुमा(६) सोहनी.
प्रभु विमल पाप पहार तोड़न वज्र दण्ड० ··· ··· । ८ ।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा.

शुभ जिवन(७)चंदन अच्तत सुमना प्रवर(८)चरु(९)ले दिया(१०
और धूप फल इकठे सुकरि के अरघ सुन्दर मैं किया.
प्रभु विमल पाप पहार तोड़न वज्र दण्ड० ··· ··· । ९ ।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेद्राय सर्वगुणप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा.

छन्द मालती.

जेठ बदीदसमी गनिये प्रभु गर्भावतार लियो दिन आछे,

---

(१) हवा(२) धूपदान ३)सुपारी (४) नारियल (५) केला (६) देव वृक्षके फूल, पारिजात मंदार संतान कल्प वृक्ष, हरिचन्दन (७) शुद्ध जल (८)उत्तम (९) खीर (१०) दीपक

इन्द्र महोत्सव कर सुसुरी वहु(१)राखि गयो जननी ढिग पाछें,
देविकरे जननीकी तहा बहु सेव अभेव(२)अनंदही आछे(३),
मैं अब अर्घ बनाय जजों पद मो मन और मिलाप न राखे.

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय जेष्टकृष्णा दशम्या गर्भकल्याणकाय अर्घम्

माघ बदी गनि द्वादशि के दिन सुकृत वर्म घरे सुतिया(४) के,
निर्मलनाथ प्रसूत भये जग भूषण हैं वर मुक्ति प्रिया के,
जो लग केवल की पदवी नहि लेत अहार निहार न जाके,
पूजत इन्द्र शची मिलि के सब मैं पद पूजत हों युग ताके

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय माघ कृष्णा द्वादश्या जन्मकल्याणकायअर्घम्

माघ बदी शुभ चौथ कहावत छोड़त यावत राजविभूती,
वास कियो वनमे मनमे लख जानि सवे जगकी करतूती
केश उपारि सुखारि भये शिव आस लगी सुखकी सुप्रसूती,(५)
मे पदकंज सिधारि(६) जजू अब मोहि खिलाहु सो अमरूती(७)

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय माघ कृष्णा चतुर्थ्या तप कल्याणकाय अर्घम्

केवल घातक जो प्रकृती सो तिरेसठ घात करी तुम नीके,
माघ वदी छठि में उपजो पद केवल भे प्रभु दीन दुनी के,
दे उपदेश उतारि भवोदधि काज सिधारि दिये सवही के,
पूजत मैं पद अर्घ बनायके तो लखि देव लगे सब फीके.

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय माघ कृष्णा षष्टम्या ज्ञानकल्याणकाय अर्घम्.

---

(१) सुन्दर देविया (२) निरन्तर (३) में है (४) सुकृत वर्म राजाकी सुन्दर रानी के (५) सुख के पैदा करने वाली (६) सिर पर धार (७) अमृत.

छांड़ि सयोग(१)सुथानलियोसु अयोग(२)कह्यो जिहिकीथितिआनी(३)
पंचहि ह्रस्व समय तिहि भूरि(४) कहे अवसान समय युगमानी(५),
जानि पचासी अघातिय की प्रकृति तिनमें सुबहतरि मानी (६),
अन्त समय करि तेरह चूरन सिद्ध भये पद पूजहु जानी (७)

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथजिनेन्द्राय आषाढकृष्णाअष्टम्या मोक्षकल्याणकाय अर्घम्.

दोहा ।

शुभ आषाढ़ कृष्णाष्टमी, विमल भये मल दूर,
पूरि रहे शिवगण विषे(८) जजहु अरघ ले भूरि

छन्द त्रिभंगी

जय सुकृत वरमा के शुभ घर मा पूरन करमा(९) भे परमा,
जय करत सुधरमा, रहित अधरमा रहत जगन्मा पदतरमा(१०)
जोगुणनोतरमा(११)नहिगणधरमा वसतअकरमा(१२)शिवसरमा(१३)
आवा तजिशरमा(१४)जोतुअ घरमा(१५)फेरि न भरमा दर दरमा

---

(१) सयोग केवली नामा तेरहवा गुण स्थान (२) चौदहवा गुण स्थान (३) तिस अन्तिम गुण स्थान की नियत स्थिति कहते हैं (४) सो कुल इतनी है जितना काल अ, इ, उ, ऋ, ऌ, इन पाच स्वरों के उच्चारणमें लगता है (५) अन्त के दो समय में (६) अघातिया ८५ प्रकृति में से बहत्तर का नाश किया (७) अन्त समय में बाकी १३ काभी नाश करके मोक्ष गये (८) सिद्धों के बीच म जा विराजे (९) कृत कृत्य (१०) जिनके चरण कमल म लक्ष्मी निवास करती है(११)आपमें जो गुण हैं(१२)जिनके कर्म समाप्त होगए हैं (१३) हे सर्व कल्याण मूर्ति (१४) शरम, लाज (१५)जिनके मदिर,देवालय

भुजग प्रयात.

गुणावास(१) श्यामा भली जासु अम्बा,
भये पुत्र जाके दिखाये अचंभा,
रहे जासु के द्वार पै देव देवा,
नमो जय हमें दीजिये पाद सेवा। १।
लखी चाल मैं नाथ तेरी अनूठी,
बिना अस्त्र बांधे करे शत्रु मूठी(२)
लई जय तिहूं लोक में जीत एवा
नमो जय हमें दीजिये पाद० । २।
पड़ो कण्ठ में नाथ के मुक्ति माला,
विराजे सदा एकही रूप शाला,(३)
सकाशास तेरे लगी देन जेवा (४),
नमो जय हमें दीजिये पाद० । ३।
लखे रूप तेरो करे शुद्धताई,
न लागे कभी ताहि कर्मादि काई,
महा शान्तिता सूख्य ही में धरेवा,
नमो जय हमें दजीोये पाद० । ४।
प्रभू नाम रूपी दीया जीभ द्वारे (५)
धरे वारि(६) सो बाह्यभ्यंतर निहारे,
पिछाने भली भांति सो आत्म भेवा(७)

(१) गुणनिधान (२) दुश्मन को मुट्ठी म करे (३) रूप मदिर (४) आपके पास गले में जेव शोभा देने लगी (५) जिव्हा (६) जलावर (७) भेद

नमो जय हमें दीजिये पाद सेवा । ५ ।

न देखी कमी सो लखे मुक्तिनामा,
तहां जायके वेश (१) पावे अरामा,
विराजे तिहुं लोक में ज मथेवा,(२)
नमो जय हमें दीजिये पाद० ····। ६।

नवावे तुम्हें लोक में माथ जेते,
करें पाद पूजा भली भांति ते ते,
तिन्हों की सदा त्रास भव की कटेवा,
नमो जय हमें दीजिये पाद० । ७ ।

अत (३) देव तुभ्यं नमस्कार कीजे,
बड़ाई तिहुं लोक में पाय लीजे
सबे जन्म की कालिमा जो मिटावे,
नमो जय हमें दीजिये पाद० ·· । ८ ।

महा लोभ रूपी घटा को हवाजू (४),
बलीमान सुण्डाल (५) कण्ठीरवा(६) तू,
न राखो कतौ दोष की जानि ठेवा,
नमो जय हमें दीजिये पाद० ·· ··· । ९ ।

कुतृष्णा महामीन को मीनहा तू,(७)
मिटावन्न को व्याधि एके कहा तू,
न दूजा कोऊ और तोसो कहेवा,

---

(१) अनत (२) तीन लोक के शिखर पर अर्थात् मस्तक पर विराजमान है
(३) इस कारण (४) आप (५) हाथी (६) शेर (७) मीन नाशक

नमो जय हमें दीजिये पाद सेवा । १० ।

नहीं शर्ण कोऊ विना तुम हमारो,
तिहुं लोक में देखिही देखि हारो,
न पायो प्रभू सो कोऊ सुद्धि लेवा,
नमो जय हमें दीजिये पाद० · ··· । ११ ।

जगत काल को है चवेना वनाई,
कछू गोद लिन्हे कछू ले चवाई,
गहे पाद मैं जानि रचा कि टेवा,
नमो जय हमें दीजिये पाद० ·· ·· । १२ ।

भलो वा वुरो जो कछू हों तिहारो,
जगन्नाथ दे साथ मो पै निहारो,
विना साथ तेरे न एकौ वनेवा,
नमो जय हमें दीजिये पाद० ··· ·· । १३ ।

चले काल व्यारी(१) झरे झूठ पानी
नवैया(२) हमारी महावोझ थानी,
करैया तुही नाथ मो पार खेवा,
नमो जय हमें दीजिये पाद० ··· ·· । १४ ।

घत्ता

मति माफिक हम करी महत यह विमलनाथ प्रभुकी जयमाल,
पढ़त सुनत मन वच तन नीके नसत दोष दुख ताके हाल (३),
सुमति बढत नित घटत कुमति भमदुरत(४)रहत दूशमनजोकाल,

(१) हवा तूफान (२) नौका (३) जल्दी तत्काल (४) छिपा रहता है

भरमनाशि शुभ शर्म(१)दिखावत करम न पावत जाकी चाल.

सोरठा

विमलनाथ जगदीश, हरहु दुष्टता जगत की,

तुम पद तर सुखदीश,(२) सो करिये सब जगत पै.

इत्याशीर्वाद: ।

"ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ जिनेन्द्राय नम" अनेन मन्त्रेण जाप्यदीयते.

अथ अनन्तनाथजिनपूजा

गीताछंद ।

अवध नगरी वसत सुन्दरधराधिप हरिसेन हैं,

ता त्रिया सुरजा सुत सुजाके नन्त प्रभु सुख देन हैं.

तजि पुष्प उत्तर धनुप अधशत(३) वपु उचाई स्वर्ण में,

इक्ष्वाकु वंशी अद्ध सेही आउ तिस लख वर्णमें

सोरठा ।

सो अनन्त भगवन्त, तजि सब जग शिवतिय लई,

भजत सदा सब सन्त, आय यहां तिष्ठो प्रभो

ॐ ह्रीं श्रीअननाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननम्)

ॐ ह्रीं श्रीअननाथ जिनेन्द्र अत्रतिष्ठ तिष्ठ ठ ठ (इतिस्थापनम्)

ॐ ह्रीं श्रीअनतनाथ जिनेन्द्र ममसन्निहितो भव भव वषट (इतिसन्निधीकरणम्.

हिमवन दह को नीर ल्याय मन मोहनो,

---

(१) कल्याण (२)जो सुख आपके चरणों में दिखलाई देता है(३) पचास धनुष

पय समान अति निर्मल दीसत सोहनो,
प्रभु अनन्त युगपाद सरोज निहारि के,
जजहु अटल पद हेत हर्ष उर धारि के । १ ।

ॐ ह्रीं श्रीअनतनाथजिनेंद्रायजन्मजरारोगविनाशनाय जलम् निर्वपामीतिस्वाहा

मलयज घसों मिलाय शुद्ध कर्पूर ही,
गंध जासु प्रति प्रसरित दश दिश पूरही,
प्रभु अनन्त युग पाद सरोज० ... ... । २ ।

ॐ ह्रीं श्रीअनतनाथ जिनेन्द्राय भवातापविनाशनायचन्दनम् निर्वपामीतिस्वाहा ।

तंदुल धवल विशाल चढ़े मन भावने,
उठत छटा छवि तिन अति दीखत पावने,
प्रभु अनन्त युग पाद सरोज० .. .. । ३ ।

ॐ ह्रीं श्रीअनतनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा

सुमन मनोहर चंप चमेली देखिये,
प्रफुलित कमल गुलाब मालती के लिये,
प्रभु अनन्त युग पाद सरोज० .. ... । ४ ।

ॐ ह्रींश्री अनतनाथजिनेन्द्रायकामबानविनाशनाय पुष्पम निर्वपामीति स्वाहा

हरत क्षुधा अति करत पुष्टता मिष्टते,
व्यञ्जन नाना भांति थार भर इष्टते,
प्रभु अनन्त युग पाद सरोज० . . । ५ ।

ॐ ह्रींश्रीअनतनाथ जिनेन्द्रायक्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीतिस्वाहा।

दीपक जोति जगाय गाय गुण नाथ के,
निज पर देखन काज ल्याय निज हाथ में,

प्रभु अनन्त युग पाद सरोज निहार के। ६।

ॐ ह्रीं श्रीअनतनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् निर्वपामीति स्वाहा

खेवूं धूप मगाय धूप दह में भली,
जासु गंधकरि होत सु मतवारे अली,
प्रभु अनन्त युग पाद सरोज० ... ... । ७ ।

ॐ ह्रीं श्रीअनतनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपम् निर्वपामीति स्वाहा

मधुर वर्ण शुभ नाना फल भरि थार में,
ल्याय चरण ढिग धरहु बड़े सतकार में,
प्रभु अनन्त युग पाद सरोज० ... ... । ८ ।

ॐ ह्रीं श्री अनतनाथजिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलम् निर्वपामीति स्वाहा

पय चन्दन वर तंदुल सुमना सूप ले,
दीप धूप फल अघ महा सुख कूप(१) ले,
प्रभु अनन्त युग पाद सरोज० ... ... । ६ ।

ॐ ह्रीं श्रीअनतनाथजिनेन्द्राय सर्वसुखप्राप्तये अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा

नृप सौध (२) ऊपर हरपि चित अति गाय गुण अमलान,
पट मास आगे रतन वरपा करत देव महान,
कातिक वदी एकम कहावत गर्भ आये नाथ,
हम चरण पूजत अरघ ले मन वचन नाऊं माथ.

ॐ ह्रीं श्रीअनतनाथजिनेन्द्राय कार्तिक कृष्णा एकम् गर्भकल्याणकाय अर्घम्.

शुभ जेठ महीना वदी द्वादशि के दिना जिनराज,

---

(१) सुख का भंडार (२) राज भवन

जन्मे भयो सुख जगत के चढ़ि नाग(१) सहित समाज,
शचिनाथ आय सुभाव पूजा जनम दिन की कीन,
मैं जजत युगपद अरध सो प्रभु करहुं संकट छीन

-ॐह्रीं श्रीअनतनाथजिनेन्द्राय ज्येष्ठकृष्णा द्वादश्या जन्मकल्याणकाय अर्घम्

बदि जेठ द्वादश जाय वन में केश लुञ्चत धीर,
तजि बाह्याभ्यंन्तर सकल परिग्रह ध्यान धरत गंभीर,
मैं दास तुम पद ईह(२) पूजत शुद्ध अरघ बनाय,
तहं जजत इन्द्रादिक सकल गुणगाय चित्त हरषाय

ॐह्रीं श्रीअनतनाथजिनेन्द्राय ज्येष्ठ कृष्णा द्वादश्यातपकल्याणकाय अर्घम्

अम्मावसी बदि चैत की लहि ज्ञान केवल सार,
करि नाम सार्थक प्रभु अनंत चतुष्ट लहत अपार,
करुणा निधान निधान सुख के भव उदधि के पोत,
मैं जजत तुम पद कमल निरमल बढ़त आनन्द सोत

-ॐह्रीं श्रीअननाथजिनेन्द्राय चैत्र कृष्णाअमावस्या ज्ञान कल्याणकाय अर्घम्

वदी पंचदश कहि चैत की करुणा निधान महान,
सम्मेद पर्वत ते जगत गुरू होत भे निर्वान,
तह देव चतुरनि काय विधि करि चरण पूजे सार,
मैं यहां पूजत अर्घ लीन्हे पद सरोज निहार

ॐह्रीं श्रीअनतनाथजिनेन्द्रायचैत्र कृष्णा अमावस्यानिर्वाणकल्याणकायअर्घम्

छद त्रिभगी

जय जिन अनन्त वर गुण महंत तर परम शान्ति कर दुख नदरे,

---

(१) हाथी (४) यहा

निज कारज कारी जन हितकारी अधम उधारी शर्म धरे,
जय जय परमेश्वर कहत वचन फुर (१) रहत सदा सुर पग पकरे,
प्रभु करहु निवेरा पातक घेरा मनरंग चेरा नमत खरे

पद्धडी छन्द

जय जय अनंत भगवंत संत, जग गावत पद महिमा महंत,
ते पावत जावत सिद्ध राज, जाके मारग मे दिवि समाज(२)
प्रभु मूरत भय भंजन विशेष, भविजन सुखपावत देखि देखि,
रजन भविनीरज(३)वन दिनेश,निरअञ्जन अञ्जन विनु विशेष.
घट आवत जाके तुम दयाल. मो घट घट की जानत त्रिकाल,
मटकत नहिं जो ससार माहिं,नहिं अटकत कोई काज ताहि
फटकत नहिं जाकी ओर मोह,पटकत सो चौपट मांझ द्रोह(४),
लटकत नित जाकी कृत(५) पताक,झटकत माया वेली झटाक
सटकत लखि जाको रूप मान,वच ताके गटकत सिग जहान(६),
छटकत चहुंगिरदा सुजसजासु,खटकत नहि दगमवि छविसुतासु
तुम धन्य धन्य किरपा निधान,जो करत जानिजन निज समान
इह खूबी का पर कहिय जाय,जय जय जग जीवन के सहाय,
जय जय अपार पारा न वार,गुण कथि हारे जिह्वा हजार,
मथि डारो तुम वैरी मनोज,बलिहारी जैयत(७)रोज रोज.
जय अशरण को तुम शरण एक,सब लायक दायक शुभ विवेक

---

(१) सत्य (२) मोक्ष के रस्ते म स्वर्ग भोग पडते है (३) भव्य जीव रूपी — कमलों के वनको प्रफुल्लित करने में सूर्य के समान हैं (४) द्वेष(५ कीर्तिकी ध्वजा (६) समस्त ससार (७) जाऊ

जग नायक मन भायक सरूप,जय नमो नमा आनंद कूप,
जय सुख वारिध वेला(१) निशेश,नहि राखत आरति जानिलेश
द्युति ऊपर वारो कोटि भानु,प्रभु नासत मिथ्या तम महानु
तुम नाम लेत करुणा निधान, टूटत गाढ़े बंधन महान,
पवनाशन(२) पग तल चापि लेत,विषमस्थल जाको नित सुखेत
ऐरावत सम अति क्रोधवान, सनमुख आवत दन्ती महान,
वस होय तिहारे नाम लेत,जय जय शुभ अतिशय के निकेत(३)
तुम नाम लक्ष जाके निधान,नहि अग्नि करे दग्धायमान,
पावे ठग बटमारी न काय, इह प्रभुता जानत सकल लोय(४)
करुणा कटाक्ष तनि करो हाल, जासों हूं(५) होउ अति वहाल,
वसु कर्म विगोऊं निमष मात्र,जोउं निजपद तजि सकलगात्र(६)

घत्ता

इह अनंत भगवन्त तनी सुन्दर जयमाला,
पढ़ि जाने जो कोय होय गुण गण की माला,
सुनत धुनत अति क्रोध बोध पावे सुखकारी,
जाय पढे ते मिलत सिद्धि तिय जो अति प्यारी,

सोरठा

हे अनंत जिनराज, कलुप काट करिये जलद,
पूरण पुण्य समाज, जो सुख पावे जग तजन,

---

(१) ज्वार भाटा अर्थात् निराकुल सुख(२)सर्प (३) स्थान (४) लोक (५) मैं (६) शरीर परिग्रह

इत्याशीर्वादः

"ॐ ह्रीं श्रीअनतनाथजिनेन्द्रायनमः" अनेन मन्त्रेण जाप्यं दीयते

अथ श्रीधर्म्मनाथपूजा

छद गीता (स्थापना)

पुर रतन राजा भानु जाके सुव्रता रानी महा,
सुत भये ताके धर्म नायक वज्र(१)अङ्क भला कहा,
इक्ष्वाकुवंशी हेम सा तनु वरष दस लख आयु है,
सर्वार्थ सिद्धि विमान तजि पैताल(२) धनुष उचाव है,

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननम्)

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठ (इति स्थापनम्)

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्(इतिसन्निधीकरणं)

दोहा

सो वृषनाथ जहाज सम, तारण को जगजीव,
करुणा करि आवो यहां, दुख रोधन(३) शिवपीव(४)

ले अति मिष्ट अमल गंगाजल नाना गंध मिलाये,
पुरट (५) कुम्भ शुभ जटित रतन सो जतन समेत भराये.
धर्मनाथ जिन धर्मधुरधर तिन पद जलरुह(६) केरी
जजन आतम अनुभव के कारण कीजत आज भलेरी,

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा

---

(१) आयुध विशेष (२) पैंतालीस (३) दुख नाशक (४) सुखप्रिया (५) सोना
(६) कमल

हुतभुक लयनप्रिया (१) युत चदन नाम अगरजा जाको
मिले कपूर सुगध उठावत ल्याय कटोरा ताको,
धर्मनाथ जिन धर्मधुरंधर तिन पद जल रुह केरी
जजन आत्म अनुभवके कारण कीजत आजु भलेरो। १।
ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा
शालि महाअवदात(२) मधुर अति दीरघ कांति घनेरी,
भरि कलधौत (३) तने शुभथारा सुन्दर पुञ्ज बनेरी,
धर्मनाथ जिन धर्मधुरन्धर तिन पद जल रुह केरी०। २।
ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा-
सुमन सुमन वच तनसों चुनि चुनि चम्प चमेली केरे,
ललित गुलाब तामरस(४) फूले औरहु फूल घनेरे,
धर्मनाथ जिन धर्मधुरन्धर तिन पद जल रुह केरी०। ३।
ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा-
शुद्ध अन्न घृत माहि पक्व करि व्यञ्जन अधिक बनाउं,
भरि थारा चित चाव बढ़ावत सो प्रभु आगे ल्याउं,
धर्मनाथ जिन धर्मधुरन्धर तिन पद जल रुह केरी०। ४।
ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा-
जोति जगाय पाय चित साथा घातित मोह अन्धेरा,
रतनन जडित कनक मय दीपक कर पर धरहु सवेरा,
धर्मनाथ जिन धमधुरन्धर तिनपद जल रुह केरी०। ५।
ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीप निर्वपामीति स्वाहा

(१) अग्नि के मुखको प्रिय अर्थात केसर (२) सफेद (३) सोना (४) कमल

महकत दिगावली जा खेये ऐसी धूप भली सो,
दाहि धूपदह में प्रभु आगे लेत सुवास अली सो,
धर्मनाथ जिन धर्मधुरंधर तिन पद जलरुह केरी.
जजन आत्म अनुभव के कारण कीजत आज भलेरी । ७ ।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा

चिरभट(१)अम्र पनस(२)दाडिम(३)ले दाखकपित्थ(४)विजौरे(५)
भरि भरि थार सदा फल नीके करि करि भाव सु धौरे,(६)
धर्मनाथ जिन धर्म धुरन्धर तिन पद जल रुह केरी,
जजन आत्म अनुभव के कारण कीजत आज भलेरी । ८ ।

ॐ ह्रीं श्रीधमनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा

धरि धरि चाव भाव दोउ शुभ अन्तर बाहर केरे,
करि करि अर्घ बनाय गाय नित कहे सुगुण बहु तेरे,
धर्मनाथ जिन धर्मधुरंधर तिन पद जल रुह केरी,
जजन आत्म अनुभव के कारण कीजत आज भलेरी । ६ ।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्राय सर्वसुखप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

अडिल्ल

मात सुव्रता उरमें जिनवर आनियो,
तेरसि सुदि वैसाख तनी शुभ जानियो,
गर्भ महोत्सव इन्द्र भली विधि सों कियो,
मैं पूजत हों अर्घ लिए हुलसे हियो.

---

(१) फूट (२) कटहल (३) अनार (४) कैथ (५) एक प्रकार का नीबू
(६) सुन्दर

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय वैसाखशुक्ला त्रयोदश्यां गर्भकल्याणकाय अर्घम्

माघ महीना तेरसि उजियारी कही,
जगत उधारण दीन वन्धु प्रगटे मही,
भविक चकोरा देखि देखि आनंद हिये,
लिये अर्घ मैं पूजत शिव आशा किये

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय माघशुक्ला त्रयोदश्या जन्मकल्याणकाय अर्घम्

विषय भोग सब विष के सम जाने मने,
राज पाट धन धान्य पुत्र दारा जने, (१)
माघ श्वेत त्रयोदश के दिन छांडिके,
संजम ले वन वसे जजहु पद जानिके.

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्राय माघशुक्ला त्रयोदश्या तपकल्याणकाय अर्घम्

पूस पूर्णमा के दिन केवल होतही,
भयो जगत मधि छोभ और उद्योत ही,
निज निज वाहन चढ़ि इन्द्रादिक आयके,
जजत भये हित पाय जजहु मैं मायके,

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्राय पौष पूर्णम्यां ज्ञानकल्याणकाय अर्घम्

निज कारज पर कारज करि जिन धर्म जू,
जेठ तनी सित चौथ हने वसु कर्म जू,
मुक्ति कन्याको वरी सिखर सम्मेद से,
मैं पूजत युग चरण वड़ो उम्मेद से.

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्राय जेठ शुक्ला चतुर्थ्यां मोक्षकल्याणकाय अर्घम्

(१) परिजन वन्धु

त्रिभंगी

जय धरमनाथ वर धरम धराधर आतम धरम पर टेक धरी,
तजि सकल अनातम लहि अध्यातम रात मिथ्या तम नाशकरी
जय तुझ पद पक्षो(१) पावत अक्षी(२)जो शिव लक्षी प्रगट पने,
मन वच तन ध्यावे मनरंग गावे कष्ट न पावे सो सुपने

स्रग्विणी

जय मुदा(३)रूप तेरे क्षुधा रोगना,ना तृषा ना मृषा लस्यना,शोकना,
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना,फेरि होवे न या लोक में आवना.
तात ना मात ना मित्र ना शत्रु ना,पुत्र दारादि एको कहे कुत्र ना,
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना, फेरि होवे न या लोक में आवना.
वर्ण ना गंध ना ना रस स्पर्श ना,भेद ना खेद ना स्वेद ना दर्शना,
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना, फेरि होवे न या लोकमें आवना.
कर्म ना मर्म ना और नोकर्म ना,पंच इन्द्री भई रंच हू समेना(४),
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना, फेरि होवे न या लोकमें आवना
राग ना रोप ना मान ना मोह ना,पाप ना पुण्य ना बंध ना छोह(५)ना
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना, फेरि होवे न या लोकमें आवना,
मार्गणा ना गुणस्थान संस्थान ना, जीव समास ना क्लेशस्थान ना
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना, फेरि होवे न या लोकमें आवना
मक्षि छपादि ना शंख कंखादि ना,लिंगना विंग ना ज्ञानमर्याद ना,(६)

---

(१) आपके भक्त (२) मोक्ष को देखनेवाली ज्ञान चक्षु (३) आनंद स्वरूप
(४) इन्द्रिय सुख कम न हुआ (५) निर्जरा (६) मक्खी,भौरा,सख, कानखजूरा.
अंगहीन, अल्पज्ञता

पूरिये नाथ मेरी मनोकामना, फेरि होवे न या लोकमें आवना
ना उदय कोउना वर्गणा वर्गना(२) शीत तप्तादि कोउ ही उपसर्गना,
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना, फेरि होवे न या लोकमें आवना
आदि ना अन्त ना वृद्ध ना बाल ना,ना कलंकादि एको कहो कालना,
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना, फेरि होवे न या लोकमेंआवना
गर्जना हर्जना ना कर्ज ना दर्ज ना,श्लेष्म औ वातपित्तादिका मर्ज ना१
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना, फेरि होवे न या लोकमें आवना
वार ना पार ना नाहिं आकार ना, पार ना वार ना कोई संस्कार ना,
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना, फेरि होवे न या लोकमें आवना.
नाहिं विहार अहार नीहार ना. तोहि योगी बतावें तरंतारना.
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना, फेरि होवे न या लोकमें आवना
याग ना काम संयोग को हेतु ना, एक राजै सदा ज्ञान में चेतना.
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना, फेरि होवे न या लोक में आवना.
देव याते नमो तोहि है फेरना, कीजिये काज मेरो करो देरना.
पूरिये नाथ मेरी मनोकामना, फेरि होवे न या लोकमें आवना.

घत्ता छन्द नल्नी

जो जिन धर्म तनी जय माल धरे निज कंठ महा सुख पावे,
होय न लोक विसे निहचे जनमादि बड़े दुख ताहि मिटावे.
पाय सो काल सुलब्धि भयो फिरि जायके सिद्धि इते नहिं आवे,
लोक अलोक लखे सुख सो वह ताहि सबे जग सीस नवावे.

---

(१) जाति पर्याय (२) फारसी. मतलब, नुकसान, उधार देना लेखा रोग,

छंद

एहो स्वामी धर्म देवादि देवा, पूजे ध्यावे तोहि इन्द्रादि एवा,
जेते प्राणी लोक में तिष्ठमाना, ते ते पावो तोदये(१)सुक्ख नाना

इत्याशीर्वादः

"ओंह्रीं श्रीधर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः" अनेन मन्त्रेण जाप्य दीयते

अथ श्रीशांतिनाथपूजा

छंद गीता

शुभ हस्तिना पुर नृपति जह हैं विश्व सेन महावली,
पितु मातु ऐरा शांति सुत भये कनक छवि देही भली
कुरु वश आयुप वरप लख चालीस धनु ऊचे खरे,
सर्वार्थ सिद्धि विमान तजि मृग चिन्ह धरि इह अवतरे
जो होय चक्री रतिपति अरु तीर्थ करता सोहने,
करि काज सब विधि सघन के फिरि भये शिव तिय मोहने
सो हरो पातक करो किरपा धरो चरण यहा तनी,
मैं करू पूजा होउ जासों शुद्ध पातक को हनी

ओंह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्र अत्रावतरावतर सवौषट् (इत्याह्वाननम्)
ओंह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इति स्थापनम्)
ओंह्री श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्रअत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्(इतिसन्निधीकरण)

लेके नीको नीर गंगा नदी को, जीते नीके मान चीरोदधीको,
कीजे पूजा शांति स्वामी सुतेरी, जासों नासे कालिमाकाल केरी

---

(१) आपकी-दया से

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरारोगविनाशनायजलम् निर्वपामीति स्वाहा

जाकी आछी गध ले भौर माते, एसी गंधं चंदनादी सु ता ते,
कीजे पूजा शांति स्वामी सु तेरी,जासों नासे कालिमा कालकेरी.

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा

गंगा पानी सीचि हुए वदाता, शाली सोने पात्रमौ धारि सात
कीजे पूजा शांति स्वामी सु तेरी,जासो नासे कालिमा काल केरी

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीतिस्वाहा

नाना रंग के स्वर्ण माही भये जे,तेले आने पुष्प सुरभी लये जे
कीजे पूजा शांति स्वामी सु तेरी,जासो नासे कालिमा कालकेरी

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय कामवाणविनाशनाय पुष्पम् निर्वपामीतिस्वाहा

मिष्टं तिष्टं शुद्ध पक्वान कीने,जिव्हा काजै सौख्यदा जानिलीन्हे
कीजे पूजा शाँति स्वामी सु तेरी,जासों नासे कालिमा कालकेरी

ॐ ह्रींश्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीतिस्वाहा

दीयोलीयो द्योततो(१)सो वनाई(२)नासे जासों मोह अन्धेरताई
कीजे पूजा शांति स्वामी सु तेरी जासो नासे कालिमा कालकेरी

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम्निर्वपामीतिस्वाहा

खेउं धूपं शुद्ध ज्वाला प्रजाली,फैले धुआँ छादित अंशु माली,
कीजे पूजा शांति स्वामी सुतेरी,जासों नासे कालिमा काल केरी

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् निर्वपामीतिस्वाहा

लीजै पिस्ता दाख वादाम नीके, नीकेर्नाके रत्न थारा भरीके,
कीजे पूजा शांति स्वामी सु तेरी,जासो नासे कालिमा कालकेरी.

---

(१) चमक रहा है (२) खूब

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम्‌निर्वपामीतिस्वाहा
आठो द्रव्य कीजिये एक ठाहीं,लेके अर्घ भाव के नाथ मांहीं(१),
कीजे पूजा शांति स्वामी सु तेरी,जासों नासे कालिमा काल केरी
ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घम्‌निर्वपामीतिस्वाहा

छन्द शिखरणी

महा ऐरादेवी कमलनयनी चन्द्रवदना,
सु केशीचम्पा-मा वपु लख शची होत अदना(२)
बसे जाके स्वामी गर्भ सतमी भाद्र सितना,
जजों मैं ले अर्घम्‌ नसत भव है पाप कितना.

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय भादोंशुक्ला सप्तम्या गर्भकल्याणकाय अर्घम्‌
वदी जाने जो चौदशि सुभग है जेठ महिना,
जने माता भूपें हुवो खलक (३) को भाग दहिना(४)
महा शोभा भारी शचिपति करी जन्म दिन की,
करों पूजा मैं उहां शुभ अरघ ले शांति जिनकी.

ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय भादोंशुक्ला दशम्या जन्मकल्याणकायअर्घम्‌
तिथि भूता (५) नोकी सुभग महिना जेठ वदि मा,
तजी धामा सारी मगन हूवे साता उदधि मा
तहां देवाधीशं चरण युग पूजे अघ हरे,
यहां मैं ले पूजों अरघ शुभ ते पाद सुथरे
ओंह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय जेष्टकृष्णा चतुर्दश्या तपकल्याणकाय **अर्घम्**

---

(१) नाथ भगवान में भाव धरके(२) नीची (३) दुनिया (४) किस्मत जागी शुभ भागका उदय हुआ (५) चतुर्दशी

सदा शिव (१) संख्या की तिथि शुभ कही पूस शुक्ला,
हने-घाती चारों जादिन धरके ध्यान शुक्ला,
विराजे सो आछे समसृत-में ईश जगके,
जजों में ले अरघम् कलुप नशि जावें कुमग के.

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय जेठ कृष्णा चतुर्दश्या ज्ञानकल्याणकाय अर्घम्

किते पापी तारे जग भ्रमण ते क्यों सरहिये(२)
भलो जानो भूतादिन महिनमो जेठ कहिये,
लियो नीके स्वामी सिखर पर ते सिद्धि थलको,
जजों आछो अर्घम् ले चरण भूलूं न पलको.

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय पौप शुक्ला एकादश्या मोक्षकल्याणकाय अर्घम्.

त्रिभंगी

जय जय गुणगणधर धर्म-चक्र-धर मुकति-वधू वर रटत मुनी,
जय त्याग सुदर्शन लहत-सुदर्शन (३) चित अति परसन परमधुनी.
जय जय अघ टारन-कुमति निवारन तुम पद तारन तरन सदा,
जय जो तुम ध्यावत कष्ट न पावत करम तनौ ऋण होत अदा (४),

नाराच छन्द

पदारविन्द शुद्ध जोनि देव जाति चारिके,
नमें सदा आनंद पाय मंदता प्रजारिके.
जिनेन्द्र शांतिनाथ की सदा सहाय लीजिये,
महान मोह अन्त के अनन्त काल जीजिये

---

(१) एकादशी, ११ रुद्र (२) कहा तक किस प्रकार गुणगान करू (३) सुदर्शन चक्र छोड़कर सम्यक दर्शन को ग्रहण किया है (४) चुकजाता

लखे पवित्र होत नैन चैन चित्त में बढे,
महामिथ्यात अन्धकार तात कालमें कटे,
जिनेन्द्र शांतिनाथ की सदा सहाय लीजिये,
महान मोह अन्त के अनंत काल जीजिये । २ ।
नशाय जाय कोटि जन्म के अरिष्ट देखते,
भले सु वीतराग भाव होय रूप पेखते,
जिनेन्द्र शाँतिनाथ की सदा सहाय लीजिये,
महान मोह अन्त के अनन्त काल जीजिये । ३ ।
निशाप(१) सो मुखारविंद देखि पाकशासना(२)
चकोर के अधीन रूप और को चितास(३) ना,
जिनेन्द्र शांतिनाथ की सदा सहाय लीजिये,
महान मोह अन्त के अनन्त काल जीजिये । ४ ।
विनाशनीय चक्रवर्ती को विभूति त्याग के,
भये सुधर्म चक्रवर्ती आत्म पंथ लागि के,
जिनेन्द्र शांतिनाथ की सदा सहाय लीजिये,
महान मोह अन्त के अनन्त काल जीजिये । ५ ।
नमो नमो सदा आनंद कन्द तोहि ध्यावही,
गणाधिपादि जे अनन्त मोक्ष पन्थ पावही,
जिनेन्द्र शांतिनाथ की सदा सहाय लीजिये,
महान मोह अन्त के अनन्त काल जीजिये । ६ ।
अनङ्ग रूप धारि मार(४) मर्दि गर्दि (५) कर दियो,

---

(१) चन्द्रमा (२) इन्द्र (३) इच्छा (४) काम (५) नाश

निरस्त के कुभाव भाव शुद्ध आपमें कियो,
जिनेन्द्र शांतिनाथ की सदा सहाय लीजिये,
महान मोह अन्तके अनन्त काल जीजिये । ७ ।
महान भानु ज्ञान सो उदोत होत नाथ जू,
विवेक नेत्रवान आप जानि मे सनाथ जू,
जिनेन्द्र शांतिनाथ की सदा सहाय लीजिये,
महान मोह अन्त के अनन्त काल जीजिये । ८ ।
खगेस(१) बाल पाद तो सहाय होय जासु को,
कहा करे महान काल व्याल कृष्ण तासु को,
जिनेन्द्र शांतिनाथकी सदा सहाय लीजिये
महान मोह अन्तके अनन्त काल जीजिये । ९ ।
अनादि कर्म काष्ट जालि बालि होत भे महा,
प्रकाशवान लोक में न दूसरो कहो कहा,
जिनेन्द्र शांतिनाथ की सदा सहाय लीजिये,
महान मोह अन्तके अनन्त काल जीजिये । १० ।
अनेक देव देखिया न देव तो समान को,
लखा न मैं कभी कहू अनन्त ज्ञानवानको,
जिनेन्द्र शांतिनाथ की सदा सहाय लीजिये,
महान मोह अन्त के अनन्त काल जीजिये । ११ ।
रहूं विहाय नाथ पाद कौन ठौर जायके,
कृपाल दीन जानिके दयाल हो बनाय के,

(१) गरुड

जिनेन्द्र शांतिनाथ की सदा सहाय लीजिये,
महान मोह अन्त के अनन्त काल जीजिये । १२ ।

घत्ता

जो पढे अहनिश शुद्ध इह जयमाल शांति जिनेशकी,
ताके न धनकी होय कमती हास्य करे धनेशकी,
पद पास लोटे रोज रानी रति अवर की क्या चली,
पुनि भोगि दिवि के भोग सुन्दर वरे शिव रामा भली

शार्दूल विक्रीडित

स्वामी शाति जिनेन्द्र के पद भले जो पूजसी भावके,
सो पासी अमलान पट्ट सततं वैकुण्ठ में चावके,
सौमत्तादिक अष्ट शुद्धगुणको धारी भली भाति सों,
होसी लोक पती सहाय सबको जोगी भणें शांति सो

इत्याशीर्वादः ॥

"ॐह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः" अनेन मन्त्रेण जाप्य दीयते

अथ श्रीकुंथनाथ पूजा

स्थापना छंद गीता ।

शुभ नागपुर जहां सूर राजा पट्टरानी श्रीमती,
जिन-कुन्थ जिन घर पुत्र हुये सरवार्थ सिधि ते आगती,
वपु कनक छवि धरि धनुप पैंतिस छाग चिन्ह (१)विराजही,
आयूप पंचानु सहस (२) की वंश कुरु मधि छाजही

(१) बकरी (२) ९५०००

मालती

सो जिन राज गरीब निवाज निवाजहु(१)मोहि यहाँ पग धारो,
पूजूं जो मन ल्याय भली विधि आज गरीवनको हित पारो,
काल अनादि तनी दुविधा मुक्त सो अब के दुविधा पद टारो,
मैं भव कूप परो जिनजी जन आपन जानि सिताव निकारो.

ओंह्रीं श्रीकुन्थनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर सवौषट् (इत्याह्वाननम्)
ओंह्रीं श्रीकुन्थनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इतिस्थापनन्)
ओंह्रीं श्रीकुन्थनाथजिनेद्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (इतिसन्निधीकरेणं

द्रुति विलँवित

अमल नीर सुभिक्षुक(२)चित्त सो,परम(३)कुम्भ भरे लव(४)नित्यसो
जजन कुन्थ जिनेश्वर की करों, जिमि न जाचक की पदवी धरों.
ॐह्रीं श्रीकुथनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरारोगविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा
अधिक शीतल चन्दन ल्यायके अधिक सो कर्पूर मिलाय के,
जजन कुन्थ जिनेश्वर की करों, जिमि न जाचक की पदवी धरों.
ॐह्रीं कुथनाथ जिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा
सदक उज्जल खंड विहाय के, सुभक मंद प्रक्षालित भायके,
जजन कुन्थ जिनेश्वर की करों, जिमि न जाचक की पदवी धरों.
ॐ ह्रीं श्रीकुथनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा
कनक के शुभ पहुप वनावहूं, विधि अनेकन के शुभ ल्यावहूं,
जजन कुन्थ जिनेश्वर की करों, जिमि न जाचक की पदवी धरों.
ॐह्री श्रीकुथनाथ जिनेन्द्राय कामवाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीतिस्वाहा

---

(१) कृपा करो (२) मुनि (३) बडे (४) मुह तक पूर्ण

नशत रोग क्षुधा ते ; देखते, इमि सु व्यंजन लेप प्रलेपते,
जजन कुन्थ जिनेश्वर की करों, जिमि न जाचक की पदवी धरों,
ॐ ह्रीं श्रीकुंथनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनायनैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा
ज्वलित दीपक जोति प्रकाशही. दशदिशा उजियार सुभासही,
जजन कुन्थ जिनेश्वर की करों, जिमि न जाचक की पदवी धरों
ॐ ह्रीं श्रीकुंथनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा.
दहन कीजे धूप मंगायके, अगनिमें प्रभु सन्मुख आयके,
जजन कुन्थ जिनेश्वर की करों, जिमि न जाचक की पदवी धरों.
ॐ ह्रीं श्रीकुंथनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा
क्रमुक दाख बदाम निकोतना, सरस ले और लै कम होतना,
जजन कुन्थ जिनेश्वर की करों, जिमि न जाचक की पदवी धरों.
ॐ ह्रीं श्रीकुंथनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा.

दोहरा

जल चन्दन अक्षत पहुप चरू वर दीपक आनि,
धूप और फल मेलिके अर्घ चढ़ाऊं जानि
ॐ ह्रीं श्रीकुंथनाथजिनेन्द्राय अनर्घ पदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

छन्द चाली

सावन दशमी अंधियारी, जिन गर्भ रहे हितकारी,
प्रभु कुन्थ तने युग चरणा, ले अरघ जजों दुख हरणा.
ॐ ह्रीं श्रीकुंथनाथ जिनेन्द्राय श्रावण कृष्णा दशम्यां गर्भकल्याणकाय अर्घम्
पड़िवा वैसाख सुदी की, लक्ष्मीमति मांता नीकी,
जिन कुन्थ जने सुख पायो, हम हुं यहाँ अर्घ चढ़ायो

ॐह्रीं श्रीकुथनाथ जिनेन्द्राय वैसाख शुक्ला दशम्या जन्मकल्याणकायअर्घम्

करि दूरि परिग्रह ताको, वैसाख सुदी पडिवा को,

सिर के जिन केश उपारे, मैं पूजों अरघ सिधारे

ॐह्रीं श्रीकुथनाथ जिनेन्द्राय वैसाख शुक्ला प्रतिपदाया तपकल्याणकायअर्घम्.

बदि चैत त्रितीया ज्ञानी,हूवे प्रभु मुक्ति निशानी,(१)

तहं देव अदेवन आनो (२)पूजें हम पूजें जानी.

ओंह्रीं श्रीकुथनाथ जिनेन्द्राय चैत्रकृष्णा तृतीया ज्ञानकल्याणकाय अर्घम्

तिथि शुभ वैसाख उजेरी, पड़िवा समेद गिरि सेरी,

करुणा निधि शिव तिय पाई, पूजों में अर्घ बनाई

ओंह्रीं श्रीकुथनाथ जिनेन्द्राय वैसाखशुक्ला प्रतिपदाया मोक्षकल्याणकायअर्घम्

त्रिभंगी

जय चक्रीवीरा काम शरीरा(३) नाशत पीरा जग जनकी,

जय गणपति नायक हो सुखदायक शोभालायक(४)छवितनकी,

जय कुन्थ पियारे जग उजियारे, सब सुख धारे अलख गती,

जय शिव पुर धरिये(५)आनंद भरिये जलदी करिये विपुल मती

छन्द त्रोटक

जय सूर तनय(६) तव मूरति मा, तप तेज तनी जनु पूरतिमा,

जय शक्र शत क्रतु(७) सेव सदा, करु कुन्थ जिनाधिप कर्म अदा(८)

धरि काम समी रति नार(९)तिमा, चित राखत ना कहु आरति मा,

जय शक्र शत क्रतु सेव सदा, करु कुन्थ जिनाधप कर्म अदा, । २ ।

---

(१) दर्शानेवाले (२) सर्व जीव (३) काम जैसे सुन्दर (४) सुन्दर (५) परमात्मपद दीजिये (६) सुर राजा के पुत्र (७) इन्द्र (८) दूर (९) सब काम भाव रति में छोडकर आप काम रहित हुए ।

'षट खंड तनी तजि राज्य रमा, निज आतम भूति करी करमा (१),
जय शक्र शत क्रतु सेव सदा, करु कुन्थ जिनाधिप कर्म अदा । ३ ।
हनि मुष्टिक काल तने सिरमा, घर त्यागि वसे शिव मंदिरमा
जय शक्र शत क्रतु सेव सदा, करु कुन्थ जिनाधिप कर्म अदा । ४ ।
धरि जीव उधारन को तुकमा (२) जग जीत लियो यह कौतुक मा
जय शक्र शत क्रतु सेव सदा, करु कुन्थ जिनाधिप कर्म अदा ।५।
करि शांति सुभाव हि जोर दमा,(३) मन आतम घायकचोर दमा(४)
जय शक्र शत क्रतु सेव सदा,करु कुन्थ जिनाधिप कर्म अदा । ६।
भट मोह अरी पर मारन मा, नहिं चूक प्रभू तिहि मारन मा,
जय शक्र शत क्रतु सेव सदा, करु कुन्थ जिनाधिप कर्म अदा ।७।
दुखदा छल वोरि दिया नद मा, चिद रूप विराजत आनंद मा,
जय शक्र शत क्रतु सेव सदा, करु कुन्थ जिनाधिप कर्म अदा । ८ ।
लहि ज्ञान दिवाकर लोक नमा, हनि होत भये प्रभु शुद्ध तमा,
जय शक्र शत क्रतु सेव सदा, करु कुन्थ जिनाधिप कर्म अदा ।९।
गृह त्याग रहे जन तो घरमा(५)तिन को न विक्रोध(६)तनी घरमा(७
जय शक्र शत क्रतु सेव सदा, करु कुन्थ जिनाधिप कर्म अदा ।१०।
तुम पादन राज हिये कलि मा (८) धरि सूर कहावत सो कलिमा (९)
जय शक्र शत क्रतु सेव सदा, करु कुन्थ जिनाधिप कर्म अदा ।११।
प्रभु नाम रहे जिन तुण्डन(१०) मा,हैं पावन (११) वे सब तुण्डनमा,

---

(१)हाथमें कब्जेमें(२)पदक(३) वश (४) दमन करके (५) जिन मदिरमं (६) विशेष कोध (७) गरमी (८) फूल (९) कलिकाल पचमकाल (१०) मुख (११) पवित्र

जय शक्र शत क्रतु सेव सदा, करु कुन्थ जिनाधिप कर्म अदा ।१२।
तुम नाम सहाय हमें कलिमा, नहि दूसर देखि परे कलिमा,(१)
जय शक्र शत-क्रतु सेव सदा, करु कुन्थ जिनाधिप कर्म अदा ।१३।
कछु ना कमती प्रभु तो बलमा, जय हो जय हो सब के बलमा,
जय शक्र शत-क्रतु सेव सदा, करु कुन्थ जिनाधिप कर्म अदा।१४।

घता छन्द मालती

कुन्थ तनी वर या जयमाल भवाब्धि तनी तरनी जग गावे,
जो जन आस तजे जग की चढ़ि या पर सो शिव लोक मझावे
पावे चैन अनंत तहां मनरङ्ग अनंग की रीति गमावे,
को कवि भू पर सिद्ध इसो, जह के सुख की कथनी कथि पावे

सोरठा

कुन्थ नाथ भगवान, जे भव बाधा में पड़े,
तिन सबको कल्यान, करो आपनी ओर लखि.

इत्याशीर्वादः ।

"ॐ ह्रीं श्रीकुथनाथ जिनेन्द्राय नम" अनेन मन्त्रेण जाप्यदीयते

अथ श्रीअरहनाथ पूजा

छद गीता (स्थापना)

शुभ नागपुर में नृप सुदरशन वंश कुरु मित्रा त्रिया,
ता गेह अपराजित विमान हि त्याग अरह भये भिया
पाठीन(२) लक्षण धनुष त्रिंशति कनक वर्ण प्रभा धरी,
चौरासि सहस प्रमाण बरषन की सु आऊषा परी.

---

(१)मन (२) मछली

दोहरा

सो करुणानिधि विमल चित महस छानवे थाल (१),

तजि शिव कामिनि बाल भे (२) इहां धरौ पग ताल (३)

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथजिनेंद्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननम्)

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इति स्थापनम्)

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्(इतिसन्निधीकरण)

छंद वसन्ततिलका

पानी महान भरि शीतल झारिका में,

धारा प्रमान भव लोचन गन्ध आमैं,

पूजूं सदा अरह पाद सरोज दोऊ,

नासैं कलङ्क जनमादि जरा विगोऊ

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरारोगविनाशनायजलम् निर्वपामीति स्वाहा

कास्मीर पूरित कपूर सु चन्दनादी,

नीके घसो मधुप (४) लुब्धत शब्द वादी,

पूजूं सदा अरह पाद सरोज दोऊ,

नासैं कलङ्क जनमादि जरा विगोऊ.

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथ जिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा

चन्दा समान अवदात अखण्ड शाली,

नीके प्रछालित अनेक भराय थाली,

पूजौ सदा अरह पाद सरोज दोऊ,

नासैं कलङ्क जनमादि जरा विगोऊ

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीतिस्वाहा

---

(१) बाला—रानी (२) मोक्षस्त्री के पति हुए. (३) चरण के तलुवे.

(४) भौंरे मोहित हुए गुंजा कर रहे हैं

चम्पा कदंब सररसो रुह (१) कुन्द केरी,
माला बनाय निज नैन बनाय हेरी ,
पूजौ सदा अरह पाद सरोज दोऊ ,
नासें कलङ्क जनमादि जरा विगाऊ

ॐह्रीं श्रीअरहनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पम् निर्वपामीतिस्वाहा

नाना प्रकार पकवान क्षुधापहारी ,
मेवा अनेकन मिलाय सु-मिष्ट भारी ,
पूजौ सदा अरह पाद सरोज दोऊ ,
नासें कलङ्क जनमादि जरा विगोऊ

ॐह्रींश्रीअरहनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम निर्वपामीतिस्वाहा

दीपावली ज्वलित जोर कपूर वाती ,
धारूं जिनाधिप पदाग्र जुडाय(२) छाती ,
पूजौ सदा अरह पाद सरोज दोऊ ,
नासें कलङ्क जनमादि जरा विगोऊ

ॐह्रीं श्रीअरहनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीप निर्वपामीति स्वाहा.

धूपादि चन्दन मिलाय कपूर नाना ,
एकाग्र चित्त कर खेऊ छांडि माना ,
पूजौ सदा अरह पाद सरोज दोऊ ,
नासें कलङ्क जनमादि जरा विगाऊ

ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूप निर्वपामीति स्वाहा

मीठे रसाल कदली फल नालिकेरा ,
पिसता वदाम, अखरोट लिये घनेरा ,

---

(१) कमल. (२) जी ठंडक पड़े

पूजौ सदा अरह पाद सरोज दोऊ,
नासें फलहु जनमादि जरा विगोऊ.

ॐह्रीं श्रीअरहनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा.

जल चंदनवर अक्षत पुहुप सिधारिके,
नाना विधि चरु दीपक धूप प्रजारिके,
फलहु मिष्ट ले सुन्दर अरघ वनाइये,
अरहनाथ पद ऊपर नित्य चढाइये,

ॐह्रीं श्रीअरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

छन्द मात्ती तेईसा

है गुण शील तनो सरिता अर नाथ तनो जननी सुख खानी,
भाग सराहत लोक सवे भनि दीरघ भागवती महारानी,
जा सम और न दूजी तिय महिमंडल माझ कहू पहिचानी,
फागुण की सित तीज दिना तसु कोखि वसे जिन पूजहूं जानी.

ॐह्रीं श्रीअरहनाथ जिनेन्द्राय फाल्गुण शुक्ला तृतीयाया गर्भकल्याणकाय अर्घम्

चौदशि सेतकही अगहान सनी अरह जादिन जन्म लियो है,
तादिनको प्रभुता सुनिके भवि जीवन केर जुडात हियो है (१),
इन्द्र शची मिलके सब देवन आयके जन्म उत्साह कियो है,
सो दिन जानि विचारि सभी वह आनन्द सो हम अर्घ दियो है.

ॐह्रीं श्रीअरहनाथ जिनेन्द्राय अगहनशुक्ला चतुर्दश्या जन्मकल्याणकाय अर्घम्

सुन्दर हैं अगहान सुदी दशमी शुभ सो गनियो तिथि भारी,
सोचत तादिन एम प्रभू जगजाल सदा जियको दुखकारी,

---

(१) मन प्रसन्न होता है.

लेत दिगंबर भेश भलो तृण जीरण के सम त्यागत नारी,
सो जिन देव सहाय हमैं निति होउ चढावत अर्घ सिधारी
ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथ जिनेन्द्राय अगहन शुक्ला दशम्या तपकल्याणकाय अर्घम्.

कातिक वारसि सेन दिना लहि केवल ज्ञान महान अनूठा,
इन्द्र रचो समवसृत सुन्दर योजन एक गनावत हूठा,
बैठत देव सिंहासन ऊपर अन्तररीछ जहां भरि मूठा,
पूजत अर्घ बनाय तुम्हें फिरि चूमहिंगो कहकाल अंगूठा.
ओंह्रीं श्रीअरहनाथ जिनेन्द्राय कार्तिक शुक्ला द्वादशया ज्ञानकल्याणकाय अर्घम्
चैत्र अमावस को जगदीश्वर छांडि दियो गुण चौदम ठाणा।
एक समय मधि सिद्ध पता जिन देव भये सुरनायक जाना॥
ले निज साथ प्रिया पृतिना(१) करि माद समेद पहार पिछाना।
कर निरवान तनी विधि ठाक इहा हम पूजत पाद महाना॥
ॐ ह्रीं श्रीअरहनाथ जिनेन्द्राय चैत्र कृष्णा अमावस्या मोक्षकल्याणकाय अर्घम्.

छंद काव्य

जय जय अरह जिनेन्द्र देवाधिदेववर।
जय जय मिथ्या निशा हरण को महत दिवाकर॥
जय अकलङ्क स्वरूप दोप मोचन अति सोहै।
जय तिय लोक मझार दीनपति तो सम को है॥

छंद पद्धरि

जय मित्रा देवी के सुनन्द, मुख शोभित तुम अकलंक चन्द,
जय दुरित तिमिर नाशन पतंग, माया वेली भंजन मतंग।१।
यज चक्र किंकिणी छत्र दंड, चूडामणि चरम(२)अरु असि प्रचंड
ये सात अचेतन मणि महान, प्रभु छांडिदीन तिनके(३)समान।२

(१) सेना (२) ढाल. (३) तृणके समान.

रति राणी सैनानी मतंग, प्राहित शिल्पी गृहपति तुरंग,
सातौ चेतन मणिमन विचारि, लखि अथिर हृदय संवग धार।३।
जो नाना पुस्तक देत दान, सो तजो काल निधि सहित ज्ञान,
असि मसि साधन जो महतकाल, तासों निस्प्रेही भे कृपाल।४।
हाटक भाजन मणि जटितसार, नैमर्प्प देत नाना प्रकार,
तसु त्यागत छिनमे हू प्रवुद्ध, निज अंजुल भोजन करत शुद्ध।५।
चौथी पांडुक निधि नाम होय, अर्पित सब रसमय धान्य सोय,
तातें संवर करि जगतपाल, जग जीवनसौ कीन्हे निहाल।६।
जो अर्प्पित पाटंबर (१) विशाल, तसु नाम पदमनिधि कहत हाल,
तिहि त्याग कीन्ह दिगवसन नाथ, जय कीजे स्वामी अव सनाथ।७।
निधि मानव नाना शस्त्र देत, ताऊ पर रंच न करत हेत,
भे शान्त स्वाभावी तीनि लोक, जीते प्रभु ने हूवे अशोक।८।
पिंगला देत भूषण अनेक, तसु आस छाडि किय नगन भेक,
इह प्रभु की प्रभुताई मनोग, कर इन्द्री वश शुभ धरत योग।९।
निधि सख कहावत जो प्रधान, वाजित्र देत सो वेपमान,
सो छाडी जस पटहा(२)वजाय, जय धन्य धन्य स्वामी सहाय।१०।
निधि सर्वरत्न नामा मनोग, बहु रतनन देव जो सुयोग,
तिहि कांच खंड वत त्याग दीन, निज हिय मे धारत रतन तीन।११।
इन आदि अनेकन राज्य अङ्ग हु तिनसौ विरकत भे निसङ्ग,
अध ऊर्ध्व मध्य परताप जास, छिटको रवि ते अधिको प्रकास।१२।
जय जय साताकारी जिनन्द, छवि ऊपर वारों कोटि चन्द,

---

(१) पीताम्बर. (२) ताली चुटकी नगारे म.

जय चिंतित अर्घादिक सुदेत, चिंतामणि इव करुणा समेत ।१३।
जय पाप प्रहारी अगम पंथ, जय शिव तिय के अच्छे सुकन्थ,
जय गुण निधान कल्याण रूप, जय तीन लोक के भले भूप ।१४।
हे चतुरानन प्रणमो तुतोहि, करिये प्रभु साता रूप मोहि,
यह अरज हमारी मान लेहु मो तनि तनि अपनी दृष्टि देहु ।१५।

छंद अडिल्ल

अरह जिनेन्द्र तनी शुभ जय माला बनी,
जो धारत निज कंठ होय शोभा घनी,
शिव रमणी तसु आय अलिंगै आपुहो,
मनरग स्वर्ग श्रियाकी का कथनी कहो।

दोहरा

जामनीश(१)भगवान मुख, पद कुवलय(२) युत मोद(३)।
लखि लखि भविक चकोर अलि, सुखलीजो भरि गोद ॥

इत्याशीर्वादः

"ॐ ह्रीं॰ श्री अरह नाथ जिनेन्द्राय नमः" इति जाप्याम् ॥

अथ श्रीमल्लिनाथपूजा

छंद गीतका

नृप कुंभ मिथुला पुरी अद्भुत मात नाम प्रजापती,
ता पुत्र अपराजित विमान हि त्यागि मल्लि भये जती,
पच्चीस धनुष उचाय लच्छन कुंभ कनक प्रभा बनी,
आऊष पचपन सहस वरष इक्ष्वाकु वंश शिरोमणी.

दोहा

कुंभ चिन्ह धारी प्रभो, कुम्भ नृपति सुत आज,
आप चरन धारौ इहा, जो सुधरै मम काज.

---

(१) चन्द्रमा (२) कमल। (३) हर्षसहित।

ओंह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननम्)
ओंह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इतिस्थापनम्)
ॐह्रीं श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्रअत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (इतिसन्निधीकरणं)

छन्द वसन्ततिलका

आछो प्रवाह गंगा जल नीर तासौं ,
झारी भराय शुभ रुक्मतनीय (१) जासौं ,
श्रीमल्लिनाथ जगदीश निशल्य कारी ,
पूजौ सदा जजत इन्द्र सुदेव तारी

ॐह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरारोगविनाशनाय जल निर्वपामीति स्वाहा

श्री चन्दनादि बहु गंध मिलाय धारी ,
गुंजै द्विरेफ तसु ऊपर पुंज भारी ,
श्री मल्लिनाथ जगदीश निशल्य कारी ,
पूजौ सदा जजत इन्द्र सुदेव तारी

ॐह्रीं मल्लिनाथ जिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा

जो चन्द्रमण्डल लजावत शुद्ध शाली,
खंड विना विमल दीर्घ सु साजि थाली ,
श्री मल्लिनाथ जगदीश निशल्य कारी ,
पूजौ सदा जजत इन्द्र सुदेव तारी

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा

चम्पा कदंब मचकुन्द सुकुन्द केरे
लीये सुगन्धित प्रफुल्लित फूल हेरे ,
श्री मल्लिनाथ जगदीश निशल्य कारी ,
पूजौ सदा जजत इन्द्र सुदेव तारी

ॐह्री श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीतिस्वाहा

(१) सोने की झारी ।

फेणी सुमोदक अनेक प्रकार नीके,
मीठे अमान (१) करि शुद्ध विहायफीके,
श्री मल्लिनाथ जगदीश निशल्य कारी,
पूजौ सदा जजत इन्द्र सुदेव तारी

ॐह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनायनैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा

माणिक्य दीपक महान तमोपहारी,
दिक्चक्र (२) सम्यक प्रकाशित तेजधारी,
श्री मल्लिनाथ जगदीश निशल्य कारी,
पूजौ सदा जजत इन्द्र सुदेव तारी

ॐह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् निर्वपामीतिस्वाहा

भूचक्र पूरित सुगन्ध सुधूप आनी,
दाहूं जिनाधिप पदाग्र महान जानी,
श्री मल्लिनाथ जगदीश निशल्य कारी,
पूजौ सदा जजत इन्द्र सुदेव तारी

ॐह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् निर्वपामीतिस्वाहा

द्राक्षा बदाम शुभ आम्र कपित्थ लीये,
नाना प्रकार भरि थार सुभाव कीये,
श्री मल्लिनाथ जगदीश निशल्य कारी,
पूजौ सदा जजत इन्द्र सुदेव तारी.

ॐह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् निर्वपामीतिस्वाहा

पानी सुगध वर अक्षत पुष्प माला,
नैवेद्य दीप अरु धूप फलौघ आला,

---

(१) खूब, (२) सर्व दिशा।

श्री मल्लिनाथ जगदीश निशल्य कारी,
पूजौ सदा जजत इ न्द्रसुदेव तारी

ॐह्रीं मल्लिनाथ जिनेन्द्राय सर्वसुखप्राप्तये अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा

दोहरा

चैत्र शुक्ल पडिवा वसे, गरभ माहि जिन मल्लि,
पूजत शुद्ध सु अर्घले, दूरि होत सब सल्लि

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्राय चैत्र कृष्णा एकादश्या गर्भकल्याणकाय अर्घम्

मगसिर सुदि एकादशी, जन्म लीन महाराज,
अर्घ लिये पूजत तिन्है, बाढत पुन्य समाज.

ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय मार्गशीर्षशुक्ला एकादश्या जन्मकल्याणकाय अर्घम्

अगहन सुदि ग्यारसि दिना, केश सुलुंच करन्त,
पूजत तिन पद अर्घसो पातक सकल नसंत.

ओंह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्राय अगहन शुक्ला एकादश्या तपकल्याणकाय अर्घम्

करम मल्लि निरसल्लि करि, दूज पूष वदि माहि,
लहत नवल केवल लवधि, पूजौ अर्घ चढाहि

ॐह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्राय पूषशुक्ला द्वादश्या ज्ञानकल्याणकाय अर्घम्

पांचे फाल्गुण शुक्ल की त्याग समेद पहार,
अष्टकर्म हनि सिद्ध भे, जजौ अर्घलै यार

ओंह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्राय फाल्गुण कृष्णा पचम्या मोक्षकल्याणकायअर्घम्

छद भूलना

जय सुधुनि के धनी, सुभग मूरत वनी, माथ नावें गणी रोज तोही,
जानि सुंदर गिरा, असुर नर खग सुरा, लोकको इन्दिरा, आनि मोही,
छवीते देखते, भजत दुख दूरते, मिलत पद अटल, जो कहत वोही,
हे दयापाल, मम हाल पै हाल दै करो जेम निष्कर्म आनन्द होही.

छंद त्रोटक

जय लोकित लोकअलोक नमो सब शोषित शोक अशोक नमो,
जय सिद्धि सुथानक वासकरम् , प्रणमामि मल्लिजिनदेव तरम् (१)।१
जय योषित आतमधर्म्म नमा, प्रभु नाश किये वसु कम्म नमो ,
जय सिद्धि सुथानक वासकरम् , प्रणमामि मल्लिजिनदेव तरम् ।२।
जय भवदधि तार जहाज नमो, सब राखत हा जन लाज नमो ,
जय सिद्धि सुथानक वासकरम् , प्रणमामि मल्लिजिनदेव तरम् ३।
जय दारिद्–भजन नाथ नमो, सुख वारिधि वर्द्धक साथ नमो ,
जय सिद्धि सुथानक वासकरम् , प्रणमामि मल्लिजिनदेव तरम् ।४।
जय ज्ञान कृपाण प्रचंड नमो, भट मोह करो शतखण्ड नमो ,
जय सिद्धि सुथानक वासकरम् , प्रणमामि मल्लिजिनदेव तरम् ।५।
जय पाप पहार समीर (२) नमो, जन की हरिले भव पीर नमो ,
जय सिद्धि सुथानक वासकरम् , प्रणमामि मल्लिजिनदेव तरम् ।६।
जय देह महादश ताल (३) नमो, करुणाकर नाथ कृपाल नमो ,
जय सिद्धि सुथानक वासकरम् , प्रणमामि मल्लिजिनदेव तरम् ।७।
जय नायक भाषत तथ्य (४) नमो, सब बातन मे समरथ्थ नमो ,
जय सिद्धि सुथानक वासकरम् प्रणमामि मल्लिजिदेव तरम् ।८।
तुम आतमभूति प्रशस्त नमो, किय भूषित लोक समस्त नमो ,
जय सिद्धि सुथानक वासकरम् , प्रणमामि मल्लिजिनदेव तरम् ।९।

---

(१) श्रेष्ठ. (२) आंधी (३) जैन प्रतिमा का लक्षण शिल्प शास्त्रों से.
(४) तत्व.

जय काम कलंक निवार नमो, तुम भै भवसागर पार नमो,
जय सिद्धि सुथानक वासकरम् प्रणमामि मल्लिजिनदेव तरम् ।१०।
जय आनन चारि प्रसन्न नमो, और दोष अठारह शून्य नमो,
जय सिद्धि सुथानक वासकरम्, प्रणमामि मल्लिजिनदेव तरम् ।११।
जय इन्द्र प्रपूजित पाद नमो, अन-अक्षर निश्रित नाद नमो,
जय सिद्धि सुथानक वासकरम्, प्रणमामि मल्लिजिनदेव तरम् ।१२।
जय मान-वलो-हृत वीर नमो, गुणमण्डित है सब धीर नमो,
जय सिद्धि सुथानक वासकरम्, प्रणमामि मल्लिजिनदेव तरम् ।१३।
पद दे अपनो जगदीश नमो, मनरंग नवावत शीस नमो,
जय सिद्धि सुथानक वासकरम्, प्रणमामि मल्लिजिनदेव तरम् ।१४।

छन्द घता

भवि जनमन प्यारे तारे दुखी बहु का कहु,
कथि कवि-अन हारे ना रे लगी गणना तहु,
तिह कर जय माला आला महा गल जो धरै,
निज करि शिव-बाला (१) वाला(२) बनै भव सो हरै.

सोरठा

अहो मल्लि जिन देव, करिये करुणा जगत पै।
जो सुख पावें एव, तो विनि सुख कहु रंचना ॥ इत्याशीर्वादः
"ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः" इति जाप्यम् ॥

---

(१) मोक्ष लक्ष्मी को अपनी कर लेता है. (२) उत्कृष्ट पद ले.

अथ श्रीमुनिसुव्रतनाथपूजा

स्थापना

नृपसदन (¹) नगरी कहत ताकौ भूप नाम सुमन्त है।
श्यामा सुराणी जासु सुत मुनि सुव्रत नाम महंत है॥
तनु श्याम ऊंचे वीस धनु हरि वश कच्छप अंक है।
तजि स्वर्ग प्राणत तीस सहस सुवर्ष आयु निशंक है॥

दोहा

हे मुनि सुव्रत नाथ, जगत कष्ट दारुण हरण।
मो पर धरिये हाथ, इहा चरण ढारौ प्रभो॥

ॐह्रीं मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननम्)
ओंह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ (इति स्थापनम)
ओंह्रींश्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र अत्रममसन्निहितो भवभव वषट् (इतिसन्निधीकरण)

चौपाई

शीतल नीर कपूर मिलाय हाटक तने कलश भरवाय।
पूजूं श्रीमुनिसुव्रत पाय, पूजत सकल अरिष्ट नसाय।
ओंह्रींश्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेंद्राय जन्मजरारोगविनाशनाय जल निर्वपामीतिस्वाहा

केसर मलयागिर कर्पूर, मिलै कटोरा भार भरिपूर।
पूजौ श्रीमुनिसुव्रत पाय, पूजत सकल अरिष्ट नसाय।
ओंह्रींमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय भवतापविनाशनाय चंदन निर्वपामीति स्वाहा

मुक्ताफल समान अति प्यारे, अक्षत धवल सम्हारि सिधारे।
पूजूं श्रीमुनिसुव्रत पाय, पूजत सकल अरिष्ट नसाय।
ओंह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा

---

(१) राजगृह

नाना वरण तने ले फूल , निकसत तिनते गंध सुथूल,
पूजूं श्रीमुनिसुव्रत पाय , पूजत सकल अरिष्ट नसाय।
ओंह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय कामवाणविनाशनाय पुष्प निर्वपामीतिस्वाहा
व्यंजन नाना भांति वनाय , मिष्ट मिष्ट देखत मन भाय,
पूजूं श्रीमुनिसुव्रत पाय , पूजत सकल अरिष्ट नसाय।
ओंह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाश नैवेद्यं निर्वपामीतिस्वाहा
घृत पूरित दीपक ले आनौ , प्रज्वलित जाकरि तिमिर पलानौ,
पूजूं श्रीमुनिसुव्रत पाय , पूजत सकल अरिष्ट नसाय।
ओंह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीतिस्वाहा
धूपायन कंचन को लेय , तामें धूप दशांगी खेय ,
पूजूं श्रीमुनिसुव्रत पाय , पूजत सकल अरिष्ट नसाय।
ॐह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूप निर्वपामीति स्वाहा
मातुलिंग कदली फल भरे , थार ल्याय कंचन मणि जरे,
पूजूं श्रीमुनिसुव्रत पाय , पूजत सकल अरिष्ट नसाय।
ॐह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फल निर्वपामीति स्वाहा.
नीर आदि वसु द्रव्य मिलाय , शुभ भावन सो अर्घ वनाय,
पूजूं श्रीमुनिसुव्रत पाय , पूजत सकल अरिष्ट नसाय।
ॐह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घम् निर्वपामीतिस्वाहा.

छंद अडिल्ल

श्रावनवदि दुतिया दिन सुव्रतनाथ जू,
श्यामा उर में वसे सकल सुख साथ जू,

बर्षावत सुभ रत्न इन्द्र शोभा करी,

मैं पूजत ले अर्घ धन्य सुख की घरी.

ॐह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय श्रावणकृष्णा द्वितियाया गर्भकल्याणकाय अर्घम्

वदी वैसाखमहीना दशमी रोजही,

आनन्द कंद जिनेंद्र चंद्र प्रगटे मही,

जन्म महोत्सव विधिपूर्वक कीन्हौ हरी,

मैं पूजत ले अर्घ धन्य सुख की घरी

ॐह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय वैशाखकृष्णा दशम्यया जन्मकल्याणकाय अर्घम्

दशमी वदि वैसाख तपस्या काज जू,

वसे लोचकरि वनमे तज सव राज जू,

सोकिरपा कर धन्य सुमति दीजे खरी,

मैं पूजूं ले अर्घ धन्य सुख की घरी

ॐह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय वैशाखकृष्णा दशम्यया तपकल्याणकाय अर्घम्

नौमी वदि वैसाख मांहि लहि ज्ञानको,

पतित उधारे केते गए निर्वान को,

तीनों लोक मंझार सो कीरति विस्तरी,

मैं पूजूं ले अर्घ धन्य सुख की घरी।

ॐह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय वैशाख कृ० नवम्या ज्ञानकल्याणकाय अर्घम्

वदि फाल्गुन की द्वादशि तिथि नीकी कही,

गिरि समेद ते लीन्ही अष्टम जो मही,

तिन्है अष्ट मद मोचि शोचि पदवी खरी,

मै पूजूं ले अर्घ धन्य सुख की घरी

ॐह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय फाल्गुणकृ० द्वादश्या मोक्षकल्याणकाय अर्घं

त्रिभगी

जय जय मुनिसुव्रत,धरत महा व्रत,रुर निरमल चित परम(१)भये।
देवन के देवा मन सुख देवा शचिपति सेवा माहि (२) ठये॥
जय जय गुणसागर जगत उजागर हौ नर नागर दोष हरे।
तेरी अद्भुत गति लखत न गणपति मनरंग नित प्रति पैर परे॥

छन्द श्रीग्विणी

जय कृपा कन्द अनन्द रूपी सदा ,
हेरिहारथा विडौजा (३) न तृष्णा कदा,
देव थारी शविह (४) मारकी (५) मारणी (६) ,
रोग सोग व्यथा मत्र (७) व्यथा (८) टारनी ।१।
गोहनी (९) मुक्ति वामा तनी वोहनी ,
सोहनी तीन भूमी महामोहनी , देव थारी० ।२
चंद्रकी चद्रिका को निरस्कारणी ,
सूरको जोत सोभा अनन्ती वणी , देव थारी० ।३
पुद्गलाणु जेतो लोक में थी भलो ,
ल्याय धाता रची एक भामंडलो , देव थारी० ।४
कमनासा शिवासा दुरासा (१०) नही ।
दृष्टि नासाधरे नाहि रासा (११) कही ,देव थारी० ।५
क्षुत्पिपासादि द्वाविंश पीरा हरी ,

---

(१) मदन पूज्य. (२) श्रष्ठ (३) इन्द्र (४) मूर्ति (५) काम (६) नाशक.
(७) समार (८) दुःख. (९) मोक्षकी उमेद देनेवाली (१०) निराशा.
(११) रोश.

रूप सौंदर्य्य की है पताका खरी,
देव थारी शविह मार की मारनी,
रोग सोग व्याथा भव व्याथा टारनी ।६
लोकते (१) जासुकें लोक (२) होवे नहीं, ,
लोकको भद्रकारी सुलोको (३) कहो देव थारी० ।७
ज्ञानकी राजधानी वखानो वरा;
लोक जानीप्रवानी (४) सुहानी (५) गिरा (६), देव० ।८
दच्छ (७) जो जो गहे पच्छ (८) प्यारो भले.
कच्छधारी (९) तनी लच्छ (१०) पावैं दले (११) देव०।९
खूब खूवी लसै जो वसै ना कही,
जाहि देखे नसे पाप जेते सही, देव थारी० ।१०
राम केसौ (१२) रुशेषो (१३) न लेशो लहै ।
पार(१४) गामे(१५) गनेसो(१६) कलेसो(१७) दहै(१८) दे०।
पादराजीव (१९) जो जीवरा (२०) जो धरै (२१),
सो मिजाजी (२२) महामोह माजो (२३) करै, दे० । १२
जे जना आस तेरी सदाहीं करै,
ते शितावी (२४) भली मुक्ति वामावरैं, देव थारी० ।१३

---

(१) दर्शन (२) ससार. (३) भद्रपुरुषों ने कहा है (४) पवित्र.
(५) सुन्दर (६) जिनवाणी (७) बुद्धिमान् जो कोई (८) मत.
(९) चक्रवर्ति. (१०) लक्ष्मी (११) लात मारे (१२) केशव. (१३) शेषनाग.
(१४) जराभी बराबरी नहीं कर (१५) स्तुति करें. (१६)गणधर (१७)दुःख.
(१८) नाश करें. (१९) चरणकमल. (२०) भव्य जीव (२१) मनमें रक्खे.
(२२) घमण्डी (२३) परास्त. (२४) जल्दी.

और झूठी सर्व बात तेरे विना,
रोज जपैं (१) महा सो महा जागिना (२) देव थारो० ।१५
मंदभागी न जाने तिहारी कथा,
वर्ण वीवर्ण आंधो लखे न यथा, देव थारो० ।१६

घता छन्द

इय जयमाला मुनिसुव्रत की जो भवि पढै त्रिकाल,
व्है निरद्वन्द्व वन्ध सव तजि के जागे ताकर भाल(३)
पराधीन नहि होय कदाचित पावै आनन्द जाल,
तजि जग भवन(४) भवन सिद्धनकी सो नर परसें(५) हाल(६)

दोहा

हे करुणानिधि शर्म निधि, मुनि सुव्रत व्रत सीव (७)
तो प्रसाद भवि जीव सब फूलो फलो सदीव ।

इत्याशीर्वादः

"ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः" इति जाप्यम् ॥

श्रीनमिनाथ पूजा

स्थापना गीता छन्द

शुभ वसन मिथिला पुरी जननी नाम विपुला जानिये,
पितु नाम आछो विजयरथ नमि नाथ तिन सुत मानिये,

---

(१) जप करे. (२) वह बड़े योगी हों. (३) पेशानी किस्मत. (४) संसार.
(५) स्पर्श करे, पावे. (६) जल्दी. (७) सीमा, हद.

इक्ष्वाकु वंशी हेम सा तनु कंजे (१) चिह्न सुहावने,
दससहस वरष सुआय पंद्रह चाप (२) ऊंचे ही घने

दोहरा

भो परमेश्वर परम गुरू, परमानन्द निधान,
करि करुणा मुझ दीनपे, इहा विराजौ आन

ओंह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर सवौषट् (इत्याह्वाननम्)
ओंह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इतिस्थापनन्)
ओंह्रीं श्रीनमिनाथजिनेंद्रअत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (इतिसन्निधीकरण)

अथाष्टकं छन्द

मधुर मधुर पयसा (३) शरद चन्द्रा सु जैसा (४)
मुनिवर चित जैसा ल्याय पानीय तैसा,
नमि जिनवर केरे कंज आभा सु हेरे,
पद अमल घनेरे पूजिये भक्तिप्रेरे

ओंह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरारोगविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा

घसित ले पटीरं (५) शुद्ध जासो शरीरं,
भ्रमत भ्रमत तीरं जो हरै सदा पीरं,
नमि जिनवर केरे कंज आभा सु हेरे,
पद अमल घनेरे पूजिये भक्तिप्रेरे.

ओंह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा

चुनि चुनि सित (६) आने वेश तंदुल वखाने,
परम रुचिर जाने देखि नैना लुभाने,

---

(१) कमल पखडी (२) धनुष, (३) दूध. (४) साफ, जैसे सदरद पनों की चांदनी. (५) चन्दन, (६) उज्वल,

नमि जिनवर केरे कंज आभा सु हेरे,
पद अमल घनेरे पूजिये भक्तिप्रेरे,

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा

सुमन मन पियारे चारू मंदार वारे,
कलियन कहना रे खूब फूले सिधारे,
नमि जिनवर केरे कंज आभा सु हेरे,
पद कमल घनेरे पूजिये भक्तिप्रेरे,

ओंह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेंद्राय कामवाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीतिस्वाहा.

चतुर जनन साजी पक नैवेद्य ताजी,
क्षुध रुजसि (१) गमाजी (२) देखि चंदासु लाजी,
नमि जिनवर केरे कंज आभा सु हेरे,
पद अमल घनेरे पूजिये भक्तिप्रेरे,

ॐह्रींश्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीतिस्वाहा

बहु तिमिर नसावै दीर्घ उद्योत ल्यावै,
निज परहि लखावै दीप एवं बनावै,
नमि जिनवर केरे कंज आभा सु हेरे,
पद अमल घनेरे पूजिये भक्तिप्रेरे,

ॐह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा.

दहन करत नीके धूप नाना सुरंगी,
जिहपर बहुभृंगी नृत्यतं होय रंगी,
नमि जिनवर केरे कंज आभा सु हेरे,
पद अमल घनेरे पूजिये भक्तिप्रेरे,

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा

फल शुकप्रिय(३) नीके आम्र निंबू न फीके,
दरशन शुभहीके रत्न थारा भरीके,

---

(१) रोग, (२) दूर करने वाली, (३) अमरूद,

नमि जिनवर केरे कंज आभा सु हेर,
पद अमल घनेरे पूजिये भक्तिप्रेरे,

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलम् निर्वपामीति स्वाहा

गीता छन्द

जलगंध अक्षत सुमनमाला चारु दीप जरायिके,
वर धूप नाना मधुर फल ले अर्घ शुद्ध बनायके,
पद अमल आकृति देखि दुखहर पूजिये हरषायके,
जो जजें भोगें भोग अनुपम इन्द्र पदवी पायके

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

सोरठा

विपुला माताजान, क्वार वदी द्वितिया दिना,
गर्भ बसे भगवान, तिन पद पूजों अघ सों,

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय श्रावणकृष्णा द्वितियायां गर्भकल्याणकाय अर्घम्

वदि अपाढ तिथि वेश, दशमी जन्म लियो प्रभू,
नमत सकल अमरेश, तिन पद पूजौं अर्घ सों,

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय वशाखकृष्णा दशम्या जन्मकल्याणकाय अघम्

भये दिगंबर भेश, वदि अपाढ दशमी दिना,
लीनो आतम देश, तिन पद पूजों अर्घ सो,

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय वैशाखकृष्णा दशम्या तपकल्याणकाय अघम्

ग्यारसि अगहन श्वेत ज्ञान भाव उद्योत किये
जीति अघातो खेत, तिन पद पूजों अर्घ सो

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय वैशाख कृ० नवम्या ज्ञानकल्याणकाय अघम्

चौदश वदि वैसाख, पर्वत सुभग समेदते,
अष्टकरम करि राख, तिन पद पूजें अर्घ सों,

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथ जिनेन्द्राय फाल्गुनकृ० द्वादश्या मोक्षकल्याणकाय अर्घं

त्रिभंगी छन्द

जय जय निसप्रेही मुक्ति सनेही हो निर्ग्रेही कुशल भये,
जय जय सिंहासन ऊपर आसन करि वच भाषन सुथल थये,
जय जय तह केर सुख बहुतेरे भुगतत मेरे कलुप हरो,
जय जय नमि स्वामी अंतर्यामी मनरंगको निजदास करो,

छंद

जय मंगल (१) रूप प्रताप धरं, करुणारस पूरित देव खरे,
जगजीवन के मन भायक हो, नमि नाथ नमों शिवदायक हो ।१।
मन माख न राखत एक रती, परमागम भाषत शुद्ध मती,
सुख इन्द्रिन २ र नसायक हो नमि नाथ नमों शिव दायक हो ।२।
लहि केवल तेरम ठाम ठये, अकलंक भये अरु दोष (२) गये,
सब ज्ञेय पदारथ ज्ञायक हो, नमि नाथ नमों शिवदायक हो ।३।
चतुरानन देखत पाप चिले, दश चार रत्न नव निद्धि मिलै,
गणनायकके प्रभु नायक हो, नमि नाथ नमौ शिव दायक हो ।४।
प्रभु मूरति आनन्द रूप वनी, द्युति लज्जित कोटि दिनेश तनी,
तुम दीनन के दुख घायक हो, नमि नाथ नमौ शिवदायक हो ।५।
समवसृत(३) सार विभूति धनी, पद पूजत ,इन्द्र नरेंद्र गणी,

---

(१) पवित्र, (२) द्वेष, (३) समोसरण,

जिनराजसदा सब लायक हो,नमि नाथ नमौ शिवदायक हो ।६।
प्रभु कांति विलोकित मान हनी, द्युति चद सकोच करी अपनी,
शम मारन तीक्षन सायक(१) हो, नमि नाथ नमौ शिवदायक हो ।७
जग माहि कुतीरथ उथ्थपिता(२)तुम भूरि(३)उधार(४)करे पतिता(५)
प्रभुतीरथ(६)के प्रभु पायक(७) हो,नमि नाथ नमौ शिवदायक हो ।८
भव आर्णव (८) पार उतारन मे, प्रभु आप तरे अरु तारन मे,
तिहु लोकन माहि सहायक हो, नमि नाथ नमौ शिवदायक हो ।९।
अरिहंत स्वरूप विशाल लहो, झपकेतन(९) मारन लोभ दहो,
चव घातिय कर्म्म क्षिपायक हो, नमि नाथ नमौ शिवदायक हो ।१०।
प्रभु मागधि भाप खिरे सुथरी, सुनि जीवनकी सब भ्रांति हरी,
चव वेदन(१०)के प्रभु गायक हो,नमि नाथ नमौ शिवदायक हो ।११
सिगकारज करि कृतकृत्य भये, गुण पूरित आनन्द लेत भये,
भट मोह की चोट वचायक हो, नमि नाथ नमौ शिवदायक हो ।१२
एक नाथ विना सिगरो कछु ना, तिहि ते शरणा गहिये अधुना,
ममता हरता निकषायक हो, नमि नाथ नमौ शिवदायक हो ।१३
कविराज थके बुधि मो कितनी, वरणूं किल हू छवि नाथ तनी,
तुम भाव धरे शुभ चायक हो, नमि नाथ नमौ शिवदायक हो ।१४।

---

(१) तीर (२) कुतीर्थ वा कुमत को उठाने वा हटाने वाले. (३) वहुत (४) उद्धार (५) पापी, (६) परमात्मा पद (७) पहुंचाने वाले (८) ससार-समुद्र (९) झषकेतु = कामदेव (१०) प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग.

घता छंद

श्री नमिनाथ जिनेश कृपाकर की जयमाल महा सुखकारी,
जानि मने निज कंठ धरे नर सो सब दुःख करे नित जारी,
जाकर हेत चले दिविसे अमराधिप आय करे वहुधारी,
को कहि वात वढावहि जा कहि आपुन आप मिलै शिवनारी,

सोरठा

श्री नमिनाथ दयाल, ऋद्धिसिद्धि दायक सदा,
तुम प्रसाद जगपाल, आनंद वरतौ भविनके

"ओं ह्रीं श्री नमिनाथ जिनद्राय नम" इति जाप्यम

श्रीनेमनाथ पूजा

गीता छंद

शुभ नगर द्वारावती राजत समुदविजय प्रजापती
तसु गेह देवी शिवा ताके नेम चन्द भये जती,
तन श्याम वर्ष हजार आवंल धनुप दशके शोभितम्
यदुवंशकुलमणि(१) शंख लक्षण धर्यौ तजि अपराजितम्,

दोहा

समुद विजयके लाडले, पशुव छुडावन हार,
रजमति रानी त्यागि के, जाय चढे गिरनार।
तह शुभ आतम ध्यान धरि, पायो केवल ज्ञान
शिव देवीके नंदवर, इहा विराजौ आन।

(१) श्रेष्ठ.

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् (इत्याह्वाननम्)
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इति स्थापनम्)
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (इतिसन्निधीकरणं)

छन्द गाता

शुभ कुंभ कंचनके जडित सुख कलश आकृतिको किये,
भरनाय तिन मधि अमल पय(१) पय(२) सम मधुर सुचता लिये
श्री नेमि चंद जिनेंद्र के चरणारविंद निहारि के,
करि चित्त चातक(३) चतुर चर्चित जजतहूं हित धारिके.

ओं ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरारोगविनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा

ले श्वेत चंदन कृष्ण अगरू कपूर वासित शीतलम्,
तसु गंध वस मधुपावली (४) मदमत्त नृत्यत कंकलं,
श्री नेमि चंद जिनेंद्र के चरणारविंद निहारि के,
करि चित्त चातक चतुर चर्चित जजतहू हित धारिके.

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय भवताप विनाशनाय चंदनम् निर्वपामीति स्वाहा

नहि खंड एको सब अखंडित ल्याय अक्षत पावने,
दिशि विदिशि जिनके महक करि महके लगे मन भावने,
श्री नेमि चंद जिनेंद्र के चरणारविंद निहारि के,
करि चित्तचातक चतुर चिर्चित जजतहू हित धारिके.

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीतिस्वाहा

मनहरन वरण विशाल फले कमल कुंद गुलाब के,
केतुकी चंपा चारु मरूवा पुष्प आव सतावके (५)

---

(१) पानी. (२) दूध. (३) ध्यान लगाकर (४) जिसपर भौंरे गुंजार कर रहे हैं. (५) चमक दमक.

श्री नेमि चंद जिनेंद्र के चरणारविंद निहारि के,

करि चित्तचातक चतुर चर्चित जजतहू हित धारि के,

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पम् निर्वपामीतिस्वाहा

पक्वान्न पूरित गाय घृत सौ मधुर मेवा वासितम,

गोक्षीर मिश्रित थार भरि भरि क्षुधा पार विनाशितम् .

श्री नेमि चंद जिनेंद्र के चरणारविंद निहारि के,

करि चित्तचातक चतुर चर्चित जजतहू हित धारिके,

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा

कंचन कटोरी माहि वाती वारि कै घनसार(१) की,

प्रभुपास धारत मिलत मग(२)भव(३)उदधिके(४)उस पारकी,

श्री नेमि चंद जिनेंद्र के चरणारविंद निहारि के,

करि चित्तचातक चतुर चर्चित जजतहू हित धारिके,

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपम् निर्वपामीतिस्वाहा

अति ज्वलत ज्वाला माहि खेवत धूप धूम् सुहावनी,

वस गंध भौंरा पुंज तापर करत रव (५) सुख वासिनो,

श्री नेमि चंद जिनेंद्र के चरणारविंद निहारि के,

करि चित्तचातक चतुर चर्चित जजतहू हित धारिकै,

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपम् निर्वपामीतिस्वाहा

फल आम् दाड़िम वर कपित्था लांगली (६) अरु गोस्तनी(७),

खरबूज पिस्ता देवकुसुमा नवल(८) पुंगी(९) पावनी,

(१) कर्पूर. (२) डगर मार्ग (३) ससार, (४) समुद्र. (५) शब्द. (६) नारियल.

(७) मुनक्का. (८) नई. (९) सुपारी,

श्री नेमि चंद जिनेंद्र के चरणारविंद निहारिके,

करि चित्तचातक चतुर चर्चित जजतहू हित धारि के.

ॐह्रीं श्रीनेमनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा.

जल गंध अक्षत चारू पुष्प नैवेद्य दीप प्रभाकरं

वर धूप फल करि अर्घ सुन्दर नाथ आगे ले धरं,

श्री नेमि चंद जिनेंद्र के चरणारविंद निहारिके,

करि चित्तचातक चतुर चर्चित जजतहू हित धारिके.

ॐह्रीं नेमनाथ जिनेन्द्राय सर्वसुखप्राप्तये अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा

छन्द मालिनी

कातिक मास सुदी छठिके दिन श्री जिननेम प्रभू सुखकारी,

गर्भ रहे यदुवंश प्रकाशक भासत भानु समान सहारी,

मात शिवा हरषी मनमें जनु आज प्रसूत जनो महतारी,

सो दिन आज विचार यहां हम पूजत अर्घ संजोयके भारी,

ओं ह्रीं श्री नेमनाथ जिनेन्द्राय कार्तिकशुक्लाषष्ठ्या गर्भकल्याणकाय अर्घं

श्रावणकी सुकुला छठि के दिन जन्मत पातक दूर पलाने,

जानि सुरेश गयो विधि पूर्वक मात घरै जह आनन्द ठाने,

जाय शची धरि बालक दूसर लेय जिनेश्वर होत रवाने.

जन्म मिषेक(१) कियो उनने हम अर्घचढावत आनन्द माने.

ह्रीं श्रीनेमनाथ जिनेन्द्राय श्रावण शुक्ला षष्ठ्या जन्मकल्याणकाय अर्घम्

साजि चले यदुवंश शिरोमणि ब्याहन काज निशान बजाये,

देखि पशू दुखिया विललात कहो प्रभु ये किहि काज घिराये,

(१) अभिषेक.

सारथि के मुखते सुनि बात उदास भये पशुवान छुड़ाये,
योग धरयौ छठि श्रावण की शुक्कुला दिन जानिकै अर्घ चढाये,
ओंह्रों श्रीनेमनाथ जिनेन्द्राय श्रावण शुक्ला पष्ठ्या तपकल्याणकाय अर्घम्
लेकरि योग रहे दिन छप्पन लौ छद्मस्थ प्रभू शिवगामी,
क्कारसुदी परिवाके दिना, चव घातिय घातित अन्तर्यामी,
केवल ज्ञान लहो भगवान दिवाकर मान भये जिन स्वामी,
सो दिन आज चितारि यहां हम अर्घ चढावतहू जतनामी.
ॐह्रीं श्रीनेमनाथ जिनेन्द्राय आशिनशुक्ला प्रतिपदाया ज्ञानकल्याणकाय अर्घम्
मास असाढसुदी सतमी गिरिनार पहार ते कीन्ह पयाना,
जाय बसे शिवमंदिर माझ अनन्त जहां सुखको नहि माना,
जानत मोक्ष कल्याण तबै शचि नाथ समेत सबै गिरवाना(१),
पूजि यथा विधि गे घर सो हम पूजत अर्घ लिये तजिमाना (२)
ओंह्रीं श्रीनेमनाथ जिनेन्द्राय अषाढ शुक्ला सप्तम्या मोक्षकल्याणकायअर्घम्

छन्द काव्य

जय यादव वर वंश तने शृङ्गार विश्वपति,
जय पुरुपोत्तम कमलनयन प्रभु देत सुगति गति,
जय अनमित वर ज्ञान धरन वैकुंठविहारी,
जय मिथ्या मत तिमिर हरन सूरज हितकारी.

त्रोटक छंद

जय नेमि सदा गुणवास नमो, जय पूरहु मो मन आस नमो,
जय दीनहितो मम दीनपनो, करि दूर प्रभू पद दे अपनो. ।१।
जय कालिम लोक तनी सगरी. तसु नासन कौ तुम मेघ झरी,
जय दीनहितो मम दीनपनो, करि प्रभू पद दे अपनो ।२।

(१) देवता (२) मान रहित होके,

जय काल कृतोदर नासक हो, मत जैन महान प्रकाश हो,
जय दीनहितो मम दीनपनो, करि दूर प्रभू पद दे अपनो ।३।
घनश्याम(१)जिसा तन श्याम लहो घननाद(२)बरोवरि नाद लहो,
जय दीनहितो मम दीनपनो, करि दूर प्रभू पद दे अपनो ।४।
तुम लोक पितामह लोक (३) दही, पितु मात घरे कुल चन्द सही,
जय दीनहितो मम दीनपनो, करि दूर प्रभू पद दे अपनो ।५।
तुम साचत सोच न होत कदा, जय पूरित आनन्द जाल सदा,
जय दीनहितो मम दीनपनो, करि दूर प्रभू पद दे अपनो ।६।
जय ज्ञानरतन्न तनी छिति (४) हो, तुम राखत दासनकी मिति हो,
जय दीनहितो मम दीनपनो, करि दूर प्रभू पद दे अपनो ।७।
जय नासत हो भव भ्रमारिका(५)तुम खोलि दई शिव पासरिका(६)
जय दीनहितो मम दीनपनो, करि दूर प्रभू पद दे आपनो ।८।
तुम देखत पाप पहार खिले, तुम देखत सज्जन कंज खिले,
जय दीनहितो मम हो तो दीनपनो, करि दूर प्रभू पद दे अपनो ।९।
तुम लोक तन शुभ भूषण हो, जिनराज सदा गत दूषण हो,
जय दीनहितो मम दीनपनो, करि दूर प्रभू पद दे अपनो ।१०।
तुम नाम जहाज चढ़ै नर जे, तिनि पार भये सुखभाजन जे,
जय दीनहितो मम दीनपनो, करि दूर प्रभू पद दे अपनो ।११।
कुसुमायुध मारनहार भले, वसु कर्म्म महान कठोर दले,
जय दीनहितो मम दीनपनो, करि दूर प्रभू पद दे अपनो ।१२।

---

(१) कृष्णजी (२) मेघनाद (३) ससार (४) क्षिति, पृथिवी (५) भूल भुलिय्या (६) दासी, मुक्तिरूप दासी को आजाद करदी.

तुमसे तुमही नहि दूसर को, सब छांडि ममत्त दया परको.
जय द नहितो मम दीनपनो, करि दूर प्रभू पद दे अपनो ।१३।
तुम पाद तनी रज सीस धरे, जन सो शिव कामिनि जाय वरे,
जय दीनहितो मम दीनपनो, करि दूर प्रभू पद दे अपनो ।१४।
प्रभु नेमि निशाप(१) निसाप(२) करो, मनरंग तनी भव भीर हरो,
जय दीनहितो मम दीनपनो, करि दूर प्रभू पद दे अपनो ।१५।

घत्ता छन्द

यह शिवानन्द(३) प्रभु नेमिचन्द की गुणगर्भित जयमाल,
जो पढै पढावै मन वच तनसौं निज दरसे दरहाल (४).
पातक सब चूरे आनन्द पूरे नासे यमकी चाल,
पूरनपद होई लखे न कोई भापत मनरंगलाल

सोरठा

समुद विजय के नन्द, नेमिचन्द करुणायतन,
तोरि देउ जगफन्द, जो स्वछन्द वरै भविक,

इत्याशीर्वादः

"ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः" इति जाप्यम् ॥

श्रीपार्श्वनाथ पूजा

गीता छन्द

नगरी बनारसि अश्वसेन सुपिता वामा माता है,
तजि स्वर्ग प्राणत पार्श्व स्वामी लसत नव कर गात (६) है,

---

(१) नेमिचन्द. (२) इन्साफ, न्याय. (३) शिवादेवी के नन्दन, पुत्र.
(४) फौरन. (६) नौ हाथ का शरीर.

इक्ष्वाकु वंशी भुजग लक्षण वर्ष इकशत आत्र है,
घनश्याम इव तन धरत आभा देखि मो मन चाव है,

दोहा

हे पारस भगवान अब, दयासिंधु गंभीर,
यहा आय तिष्ठो प्रभो,उसरि जाय भवभीर.

ॐह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननम)
ओंह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ट तिष्ट ठः ठः (इति स्थापनम्)
ओंह्री श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्र अत्रममसन्निहितो भवभव वषट् (इतिसन्निधीकरण)

छन्द त्रिभंगी

पन्नग ठकुराई सहजै पाई तुम वच सुनि के पन्नगखी (१),
तिनकी ठकुराई कहिय न जाई प्रभु प्रभुताई यह सुलखी,
वामा के प्यारे जग उजियारे जल सो थारे पद परसों,
जिन परसे सारे पातक जारे और सवारे शिव दरसौ.

ओंह्री श्री पार्श्वनाथ जिनेंद्राय जन्मजरारोगविनाशनाय जल निर्वपामीति स्वाहा

सो भुजंग गुसाई पुनि इत आई फणकी छाई करत भली(२)
ताकरि मद हारयौ कमठ विचारयौ प्रभु ढिग धारयौ सीस चली
वमाके प्यारे जग उजियारे जल सो थारे पद परसों,
जिन परसे सारे पातक जारे और सवारे शिव दरसौ.

ओंह्रींश्रीपार्श्वनाथजिनेंद्राय भवतापविनाशनाय चदन निर्वपामीति स्वाहा

प्रभु केवल पावा आलविल आवा रुचिर बनावा समवश्रतम्,

---

(१) सर्प. (२) अच्छी प्रकार

तामाहि विराजे सूरज लाजे इम छविछाजे कहत श्रुतम्,
वामाके प्यारे जग उजियारे जल सो थारे पद परसों,
जिन परसे सारे पातक जारे और सवारे शिव दरसौ,

ओंह्री श्री पार्श्वनाथजिनेंद्राय अक्षयपप्रामये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा

आसनते सूचे अंगुल ऊचे चवचव आनन नाथ भये,
तिनते सुख दानी खिरत सुवानी सुनि भवि प्राणी सुगति गये,
वामाके प्यारे जग उजियारे जल सो थारे पद परसों,
जिन परसे सारे पातक जारे और सवारे शिव दरसौ,

ॐह्री श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीतिस्वाहा

बहु देशन माही प्रभु विहराही भवि जीवन संबोधि दये,
मिथ्या मतमारी तिमिर विदारी जिन मत जारी करत भये,
वामाके प्यारे जग उजियारे जल सो थारे पद परसों,
जिन परसे सारे पातक जारे और सवारे शिव दरसौ,

ओंह्री श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीतिस्वाहा

कछु इच्छा ना री(१) विनि डगधारी होत विहारी(२)परमगुरू,
जिन प्राणिनकेरा तरब(३) सवेरा(४) तितै नाथ मग होत सुरू,
वामाके प्यारे जग उजियारे जल सो थारे पद परसों,
जिन परसे सारे पातक जारे और सवारे शिव दरसौ,

ओंह्रीं श्रीपार्श्व नाथ जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीतिस्वाहा

---

(१) निरिच्छक होगये (२) पाव हिलाए विना, आकाश गमन करते हुए.
(३) तिरना, ससार से पार होना. (४) निकट अर्थात् निकट भव्य

सो शविह तिहारी आनन्द कारी रोज हमारी पीर हरे,
जाकी द्युति भारी जग विस्तारी दरसत कारी घननि दरे,
वामाके प्यारे जग उजियारे जल सो थारे पद परसों,
जिन परसे सारे पातक जारे और सवारे विश दरसौ.

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूप निर्वपामीति स्वाहा

प्रभु पारसस्वामी अन्तर्यामी हो बड नामी विश्वपती,
थारे गुण गाऊ शीस नवाउं बलि बलि जाउं दे सुगती,
वामाके प्यारे जग उजियारे जल सो थारे पद परसों,
जिन परसे सारे पातक जारे और सवारे शिव दरसौ.

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फल निर्वपामीति स्वाहा

जल चन्दन शुभ अक्षत पुष्प सुहावने,
दीपक चरू वर धूप फलौघ (१) सुपावने (२),
ये वसु द्रव्य मिलाय अर्घ कीजे महा,
तुम पद जजत निहाल होत औ हित कहा.

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घम् निर्वपामीतिस्वाहा.

पंचकल्याणकम्

वैसाखवदी दुतियाके दिन गर्भ रहे निज माके,
वामा उर आनंद बाढे हम अर्घ चढावत ठाढे,

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय वैसाखकृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणकाय अर्घम्

वदि पूष चतुर्दशि जानी, प्रभु जन्म लिये सुखखानी,
करि अर्घ यहां हम ध्यावें, मनवांछित सुख अब पावें.

---

(१) फलों के ढेर. (२) पवित्र.

ओंह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पौष कृष्णा चतुर्दश्या जन्मकल्याणकाय अर्घम्

लखि पौष एकादशि कारी, प्रभु नादिन केश उपारी,

तप काज रहे वनमाही, हम यहां पर अर्घ चढाही.

ओंह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पौष कृ० एकादश्या तपकल्याणकाय अर्घम्

तिथि चैत्र चतुर्थी कारी, भे केवल पदके धारी,

इन्द्रादिक सेवन आये, हम हूं यहां अर्घ चढाये.

ॐह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय चैत्र कृ० चतुर्थ्यां ज्ञानकल्याणकाय अर्घम्

सुदि साते श्रावणमासा, सम्मेद थकी गुणवासा,

लीन्हो शिवकी ठकुराई, पद पूजत अर्घ चढाई.

ॐह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय श्रावणशुक्ला सप्तम्या निर्वाणकल्याणकाय अर्घम्

छंद त्रिभंगी

जय पारस देवा आनन्द देवा सुरपति सेवा करत रहें,

जयजय अरिहंता देह महंता ध्यावत संता दुख न लहें.

जय दिगपटधारी(१) गगन विहारी, पापप्रहारी छवि सुथरी,

जय जय कुल मंडन विपति विहंडन दुरमति खंडन मुकति वरी.

छंद पद्धडी

जय अश्वसेन कुलगगन चंद, जय वामादेवीके सुनन्द,

जय पासनाह (२) भौभीर टाल, करि दे स्वामी अवके निहाल. ।१।

जयदुरित(३)तिमिरनासन पतंग(४)जयभविककमल लखिहोतदंग,(५)।

जय पासनाह भौभीर टाल, करि दे स्वामी अवके निहाल ।२।

जय अजर अमर पद धरनहार, जय दुखी दु:ख भंजन विचार,

जय पासनाह भौभीर टाल, करि दे स्वामी अवके निहाल ।३।

---

(१) दिगम्बर. (२) पार्श्वनाथ (३) ससारका दु:ख (४) सूर्य. (५) हर्षायमान.

जय धारि पंचमा अमल(१) ज्ञान, पंचम(२) गति लीन्ही सो महान,
जय पासनाह् मौभीर टाल, करि दे स्वामी अवके निहाल ।४।
जय पंचभाव धारन महंत, सिग भौ रोगनको करो अन्त,
जय पासनाह् मौभीर टाल, करि दे स्वामी अवके निहाल ।५।
जय करत मुनीत पुनीत आप, जय दारिद् भंजन नाथ जाप,
जय पासनाह् मौभीर टाल, करि दे स्वामी अवके निहाल ।६।
जय सिद्धि सिलाके वसन हार, जय ज्ञान मई चेतन प्रकार (३),
जय पासनाह् मौभीर टाल, करि दे स्वामी अवके निहाल ।७।
जय चिंतितार्थ फल देत रोज, जो ध्यावै ताको खोज खोज,
जय पासनाह् मौभीर टाल, करि दे स्वामी अवके निहाल ।८।
जय धन्य धन्य स्वामी दयाल, जय दीन वंधु तुम लोकपाल,
जय पासनाह् मौभीर टाल, करि दे स्वामी अवके निहाल ।९।
जय तुम पद तर की रेणु अंग, जो धरे लहे सो छवि अनंग,
जय पासनाह् मौभीर टाल करि दे स्वामी अवके निहाल ।१०।
जय तुम कीरति छाई जहान, चहुधा (४) छटकीफूलनसमान,
जय पासनाह मौभीर टाल, करि दे स्वामी अवके निहाल ।११।
तुम अकथ कहानी कथैजौन, काको मती एतो है सुकौन,
जय पासनाह् मौभीर टाल, करि दे स्वामी अवके निहाल ।१२।
निति थतक शेष(५)सं कथन गाय, नर दीनन को कह् कथन आय
जय पासनाह् मौभीर टाल, करि दे स्वामी अवके निहाल ।१३।

---

(१) केवल — (२) मोक्ष, (३) आकार, (४) चारों तरफ (५) इन्द्र

जय करतं अरज मनरंगलाल, हम पर करिपा निधि हो दयाल,
जय पासनाह भौमीर टाल, करि दे स्वामी अबके निहाल ।१४।

छंद शार्दूल विक्रीडित

या जयमाला पार्श्वनाथ जिनकी आनंद कारी सदा,
जो धारे निज कंठ भाव धरिके देख न नोचा कदा,
ऊंचे ऊंचे पद लहत नर सो ताकी कहौ का कथा,
पाछे भौ दधिपार लेय सुख सो आनंद पावे जथा.

छंद

जेते प्राणी मोहने बांधि डारे, औरोके ते दुःख दीये नियार,
तेते थारे पाद की आस लावे, जा सौ जाकी श्रृङ्खला तोरि पावे

"ॐ ह्रीं० श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः" इति जाप्यम ॥

श्रीवर्द्धमान पूजा

छन्द गीता

शुभ नगर कुंडल पुर सिद्धारथ रायके त्रिशलातिया,
तजि पुष्प उत्तर तासु कुक्ष्या वीर जिन जन्मन लिया,
कर सात उन्नत कनक सा तनु वंश वर इक्ष्वाकु है,
द्व अधिक सत्तरि वर्ष आयुष सिंह चिह्न भला कहै.

छन्द मालिनी

सा जिन वीर दया निधिके युग पाद पुनीत पुनीत करेंगे,
व्याधि मिटाय भवोदधि की गुणो गावत गावत पार परेंगे,
जावत मोक्ष न होय हमै शुभ तावत स्थापन रोज करेंगे,
आय विराजहु नाथ इहा हम पूजिके पुण्यभंडार भरेंगे.

ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट् (इत्याह्वाननम्)
ओं ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इति स्थापनम्)
ओं ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (इति सन्निधीकरणं)

छंद द्रुत विलम्बितम्

कनक कुंभ सुवारि भराय के, विमल भाव त्रिशुद्ध (१) लगाय के,
चरम (२) देव जिनेश्वर वीर के चरण पूजत नासक पीर के,
ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्राय जन्मजरारोगविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा
परम चंदन शीतल भावना (३), करि सुकेसर मिश्रितपावना,
चरम देव जिनेश्वर वीर के, चरण पूजत नासक पीर के,
ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा
धवल अक्षत चाव बढावही, करि सुपुंज महा मन भावही,
चरम देव जिनेश्वर वीर के, चरण पूजत नासक पीर के,
ओं ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा
पहुप माल वनाय हिराय (४) के, जुगति (५) सों प्रभु पास जियायकै
चरम देव जिनेश्वर वीर के, चरण पूजत नासक पीर के,
ओं ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेंद्राय कामवाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीतिस्वाहा.
नवल घेवर वावर लाय के, घृत सुलोलित पूव बनाय के,
चरम देव जिनेश्वर वीर के, चरण पूजत नासक पीर के,
ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमान जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीतिस्वाहा
करि अमोलक रत्न मई दिया, जगत ज्योति उदोत मई किया,
चरम देव जिनेश्वर वीर के, चरण पूजत नासक पीर के,

---

(१) मन, वचन, कायकी शुद्धि. (२) अन्तिम. (३) सुन्दर. (४) चुनाय.
(५) गत्न से.

ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा.

उठत धूम घटावलि जासुतें, इम सु धूप सुगंधित तासूते,

चरम देव जिनेश्वर वीर के, चरण पूजत नासक पीर के.

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमान जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा

पनस दाडिम आम् पके भये कनक भाजन मे भरिकै लये,

चरम देव जिनेश्वर वीर के, चरण पूजत नासक पीर के.

ॐ ह्रीं श्रीवर्द्धमान जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा.

अरघ ले शुभ भाव चढाय के, धवल मंगल तूर वजाय के,

चरम देव जिनेश्वर वीर के, चरण पूजत नासक पीर के.

ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्राय सर्वगुणप्राप्तये अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा

छंद गाथा

मास असाढ सुदामें, षष्टी दिन जानि महा सुखकारी,

त्रिशला गर्भ पधारे, तुम पद जजत अर्घ सिरधारी.

ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्राय असाढ शुक्ला षष्ठया गर्भकल्याणकाय अर्घम्

चैत्र त्रयोदशि कारी, ता दिन जनमे प्रभाव विस्तारो,

अर्घ महाकर धारी, जजत तिहारे चरण हितकारी.

ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्राय चैत्र कृष्णा त्रयोदश्या जन्मकल्याणकाय अर्घम्

दशमी अगहन वदिमे, लखि सब जग अथिर भये वैरागी,

प्रभू महा व्रत धारे, हम पूजत होत वडभागी.

ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्राय अगहनकृष्णा दशम्या तपकल्याणकाय अर्घम्

केवल ज्ञानी हूवे, दशमी वैसाख सुदी के माही,

सकल सुरासुर पूजे, हम इह पद लखि अर्घ चढाही.

ओंह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेन्द्राय वैसाख शुक्ला दशम्या ज्ञानकल्याणकाय अर्घम्

कार्तिक नष्टकलदिन (१), पावा पुरके गहन(२) ते स्वामी,
मुकति तिया परनाई, हम चरन पूजि होत वड नामी.

ओंह्रीं श्री वर्द्धमान जिनेंद्राय कार्तिक अमावस्या निर्वाणकल्याणकाय अर्घं

छन्द झूलना

वीर जिन धीर सिंह पग चिन्ह धर तेज तप धरन जटा सूरमारी,
धर्म्मकी धुराधर अपर(३)विनु गिराधर परम पद धरन जयमदनहारी
दयाधर सीमधर पंचवर नामधर अमलछवि धरण जय सरम(४)कारी
पंचपवर्त की भर्मणा(५)ध्वंसि के अचल पद लहत जय जस विथारी.

छन्द त्रोटक

जय आनन्द के घन वीर नमो, जय नाशक हो भव भीर नमो
जय नाथ महा सुख दायक हो जमराज विहंडन लायक हो ।२।
जय चरम शरीर गम्भीर नमो, जय चर्म तिर्थंकर धीर नमो,
जय लोक अलोक प्रकाशक हो, जन्मांतर के दुख नाशक हो ।३।
जय कर्म्म कुलाचल छेद नमो, जय मोह विना निरखेद नमो,
जय पूज्य प्रतार सदा सुथिरा, प्रगटी चहू ओर प्रशस्त गिरा ।४।
तन सात सुहाथ विशाल नमो, कनकाम महादश ताल नमो,
शुभ मूरति मो मन मांझ वसी, सिगरी तब ते भव भ्रांत नसी ।५।
जय क्रोध दवानल मेह(६) नमो, जय त्याग करों जग नेह(७)नमो,
जय अम्बर छाड़ि दिगंबर भे, गति अम्मर की धरि अम्मर भे ।६।

---

(१) अमावस (२) उद्यान. (३) निरक्षरीवाणी. (४) शर्म आनन्द. (५) पंच परिवर्तनरूप संसार को नाश करके (६) मेघ. (७) स्नेह मोह.

जय घारक पंच कल्याण नमो, जय रोज नमें गुणवान नमो,
जयपाद गहे गणराज रहें, शचिनायक सो मुहताज रहें ।७।
जय भौदधि तारन सेत(१) नमो, जय जन्म उधारन हेत नमो,
जय मूरति नाथ भली दरसी, करुणा मय शान्ति सुपाकरसी(२) ।८।
जय सार्थक नाम सुवीर नमो, जय धर्म्म धुरंधर वीर नमो,
जय ध्यान महान तुरी चढके, शिव खेत लियो अति ही बढिकै ।९।
जय पारन वार अपार नमो, जय मार विना निरधार नमो,
जय रूप रमाधर तो कथनो कथि पार न पावत नाग धनी ।१०।
जय देव महाकृत कृत्य नमो, जय जीव उधारन व्रत्य(३) नमो,
जय अक्ष विना सब लोक जई, ममता तुमते प्रभु दूरगई ।११
जय केवल लब्धि नवीन नमो, सब वातनमे परवीन नमो,
जय आत्म महारस पीवन हो, तुम जीवन मूरत जीवन हो ।१२।
जय तारन देव सिपारस(४) मो सुनिलें चितदे इह वारसमो,
दुख दूपित मो मन की मनसा, नहि हात अराम इकौ छन सा ।१३।
तकि तो पद भेपजनाथ भले, तुम पास गरीव निवाज चले,
मन की मनसा सब पूजन को, तुम ही इहि लायक दूज न को ।१४।
इहि कारज के तुक कारण हो, चित लाय सुनो तुम तारण हो,
जग जीवनके रखपाल भले, जय धन्य धन्य किरपाल मिले ।१५।
सब मो मनकी मनसा पुजि है, अघ और कुदेव नही सुजि है,
सुझि है तुमरे गुन गावन का, वुझि है तृष्णा भरमावन की ।१६।

---

(१) पुल. (२) चन्द्रमा. (३) जीव के उद्धार करने का है स्वभाव जिनका
(४) सिफारिश अर्ज़.

छन्द काव्य

पूरण यह जय माल भई अन्तिम जिनकेरी,
पढत सुनत मन रंग कहे नसिहै भव फेरी,
वसि है शिव थल माझ, जहा काया नहि हेरी,
ज्ञान मई भगवान जाय है हैं गुण ढेरी
हरो मोहतम जाल हाल शिव वालनिहारो,
हरो मिथ्या जाल नाल(१) चहु(२) कित्ति(३) पसारो,
सारो कारज वेस लेस सम मान न धारो
धारो निजगुण चित्त मित्त जिन राज पुकारो,
मरो न एके काल माल विद्या की डारो,
डारो औगुन मार मार दुनिआवी(४) जारो(५),
जारो नहि निजरीति पीति दुरगति की मारो,
मारो सन्निधि (६) होय दोह(७) रंचक(८) न विचारो (९)

छन्द छप्पै

होहू अनंग स्वरूप भूपको पद विस्तारो,
तारो अपन न कुलै(१०) भुलै(११) मद माया टारो,
टारहु नहि निज आनि वानि (१२) ममता की गारो (१३),
गारौ ना कुलकानि जानि के मदन प्रहारो,

---

(१) जल्दी. (२) चौतर्फा. (३) कीर्ति यश. (४) ससारी. (५) जलादो. (६) पास जाके सूरता से. (७) दोष,पाप, मोह. (८) जराभी. (९) फिकर करो. (१०) समस्त कुल. (११) भूला कर. (१२) आदत. (१३) छोड़दो.

मनरग कहत धन्यधान्य अरु पुत्र पौत्र करि घर भरो,
श्री वीर चंद निज राज तें तुमको ये कारज सरो.

इत्याशीर्वाद

"ओं ह्री श्री वर्द्धमान जिनद्राय नम" इति जाप्यम्

इति श्री चतुर्विंशति जिनवर्तमान पूजनं संपूर्णम्

छन्द

विपम स्थल सम होय शत्रु मित्रता विचारे,
सुत अर्थी सुतलहे निर्धनी भरे भंडारे
रोगी होय अरोग शोक की भूमि विदारे,
नीच कुलीकुललहे कुरुपी रुप सम्हारे,
मन वचन काय जो पाठ यह पढे पढावे सुने नित,
मनरंगलाल ता पुरुपको देख इन्द्र होवे चकित.

इति शुभम्

अथ शान्तिपाठः

शान्तिजिनं शशिनिर्म्मलवक्त्रं शीलगुणव्रतसंयमपात्रम् ,
अष्टसहस्रसुलक्षणगात्रं नौमि जिनोत्तममम्बुजनेत्रम् ।१।
पञ्चममीप्सितचक्रधराणां पूजितमिन्द्रनरेन्द्रगणैश्च,
शान्तिकरं गणशान्तिममोप्सुः षोडशतीर्थंकरंप्रणमामि ।२।
दिव्यतरु सुरपुष्प सुवृष्टि दुन्दुभि रासन योजन घोषौ,
आतपवारण चामरयुग्मे यस्य विभाति च मण्डलतेजः ।३।
तं जगदर्चितशान्तिजिनेन्द्रं शान्तिकरं शिरसा प्रणमामि,
सर्वगणाय तु यच्छतु शान्तिं मह्यमरं (१) पठते परमां च ।४।

वसन्ततिलकावृत्तम्

येऽभ्यर्चितामुकुटकुण्डलहाररत्नैः
शक्रादिभि. सुरगणैः स्तुतपादपद्माः ।
ते मे जिनाः प्रवर वंशा जगत्प्रदीपा-
स्तीर्थङ्कराः सततशान्तिकराभवन्तु ।५।

संपूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्र सामान्यतपोधनानाम् ,
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञ. करोतु शान्तिं भगवान्जिनेन्द्रः ।६।
क्षेमं सर्वप्रजानां प्रभवतु बलवान् धार्मिको भूमिपालः,
काले काले च सम्यग्वर्षतु मघवा व्याधयो यान्तु नाशम् ।
दुर्भिक्षं चौर मारी क्षणमपि जगतां मास्मभूज्जीवलोके,
जैनेन्द्रं धर्मचक्रं प्रभवतु सततं सर्वसौख्यप्रदायि ।७।
प्रध्वस्तघातिकर्माणः केवल ज्ञानभास्करा ,
कुर्वन्तु जगतः शान्तिं वृषभाद्या जिनेश्वराः ।८।

(१) अरम्—जल्द.

अथेष्टप्रार्थना—

प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं नमः

शास्त्राभ्यासो जिनपतिनुतिः सङ्गतिः सर्वदार्य्यैं
सद्वृत्तानां गुणगणकथा दोषवादे च मौनम् ,
सर्वस्यापि प्रियहितवचो भावना चात्मतत्त्वे
सम्पद्यन्तां मम भव भवे यावदेतेऽपवर्गः ।९।

तव पादौ मम हृदये, मम हृदयं तव पादद्वये लीनम् ,
तिष्ठतु जिनेन्द्र तावद्यावन्निर्वाणसम्प्राप्तिः ।१०।

अक्खर पयत्थ हीणं मत्ताहीणं च जं मए भणियं,
तं खमउ णाणदेव य मज्झविदु:क्खक्खयं दिंतु ।११।
दु:क्खखओ कम्मखओ समाहि मरणं च बोहिलाहोय ।
मम होउ जगतबंधव जिणवर तव चरणसरणेण ।१२।

अथ विसर्जनं

ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि शास्त्रोक्तं न कृतं मया ।
तत्सर्वं पूर्णमेवास्तु त्वत्प्रसादाज्जिनेश्वर ।१।
आह्वानं नैव जानामि नैव जानामि पूजनम् ,
विसर्ज्जनं नैव जानामि क्षमस्व परमेश्वर ।५
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं द्रव्यहीनं तथैव च,
तत्सर्वं क्षम्यतां देव रक्षरक्ष जिनेश्वर ।३।
आहूता ये पुरा देवा लब्धभागा यथाक्रमम ,
ते मयाऽभ्यर्चिता भक्त्या सर्वे यान्तु यथास्थितिम् ।४।

इति शुभम्